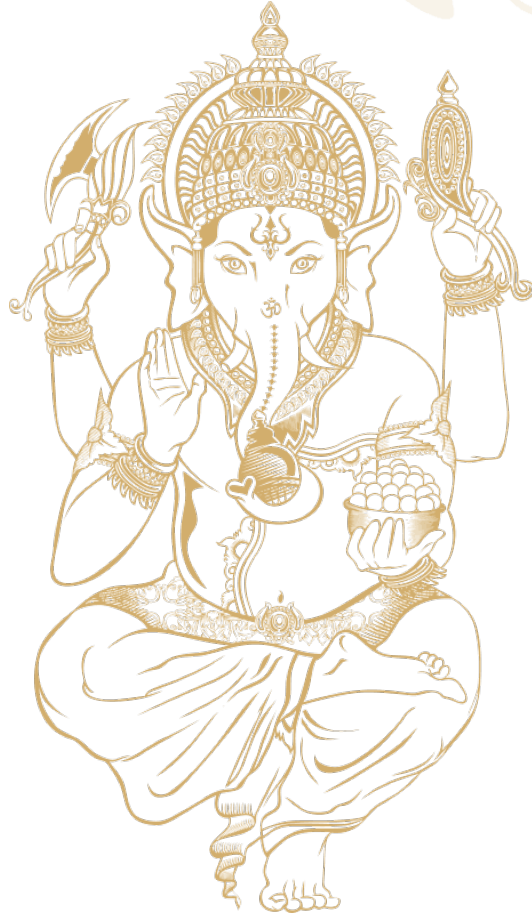




Sumit

31 Oct 1979

04:35 AM

New Delhi

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 113005601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 30-31/10/1979
दिन _____: मंगल-बुधवार
जन्म समय _____: 04:35:00 घंटे
इष्ट _____: 55:09:01 घटी
स्थान _____: New Delhi
राज्य _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:36:50 उत्तर
रेखांश _____: 77:12:32 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:10 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:13:50 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:19 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:48:30 घंटे
सूर्योदय _____: 06:31:23 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:38:10 घंटे
दिनमान _____: 11:06:47 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 13:21:18 तुला
लग्न के अंश _____: 17:06:10 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: शतभिषा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: ध्रुव
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: सी-सीताराम
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1901	कार्तिक	9
पंजाबी	संवत : 2036	कार्तिक	15
बंगाली	सन् : 1386	कार्तिक	14
तमिल	संवत : 2036	आइपसी	14
केरल	कोल्लम : 1155	तुलम	14
नेपाली	संवत : 2036	कार्तिक	15
चैत्रादि	संवत : 2036	कार्तिक	शुक्ल 11
कार्तिकादि	संवत : 2036	कार्तिक	शुक्ल 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
 तिथि समाप्ति काल _____ : 25:20:09
 जन्म तिथि _____ : 11
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : धनिष्ठा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 14:22:53 घंटे
 जन्म योग _____ : शतभिषा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : वृद्धि
 योग समाप्ति काल _____ : 25:41:24 घंटे
 जन्म योग _____ : ध्रुव
 सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्तिल
 करण समाप्ति काल _____ : 14:33:22 घंटे
 जन्म करण _____ : वणिज
 भयात _____ : 35:30:17
 भभोग _____ : 55:32:31
 भोग्य दशा काल _____ : राहु 6 वर्ष 6 मा 7 दि

घात चक्र

मास _____ : चैत्र
 तिथि _____ : 3-8-13
 दिन _____ : गुरुवार
 नक्षत्र _____ : आर्द्रा
 योग _____ : गण्ड
 करण _____ : किंस्तुघ्न
 प्रहर _____ : 3
 वर्ग _____ : श्वान
 लग्न _____ : मिथुन
 सूर्य _____ : वृष
 चन्द्र _____ : धनु
 मंगल _____ : मिथुन
 बुध _____ : वृष
 गुरु _____ : कर्क
 शुक्र _____ : सिंह
 शनि _____ : मेष
 राहु _____ : कन्या

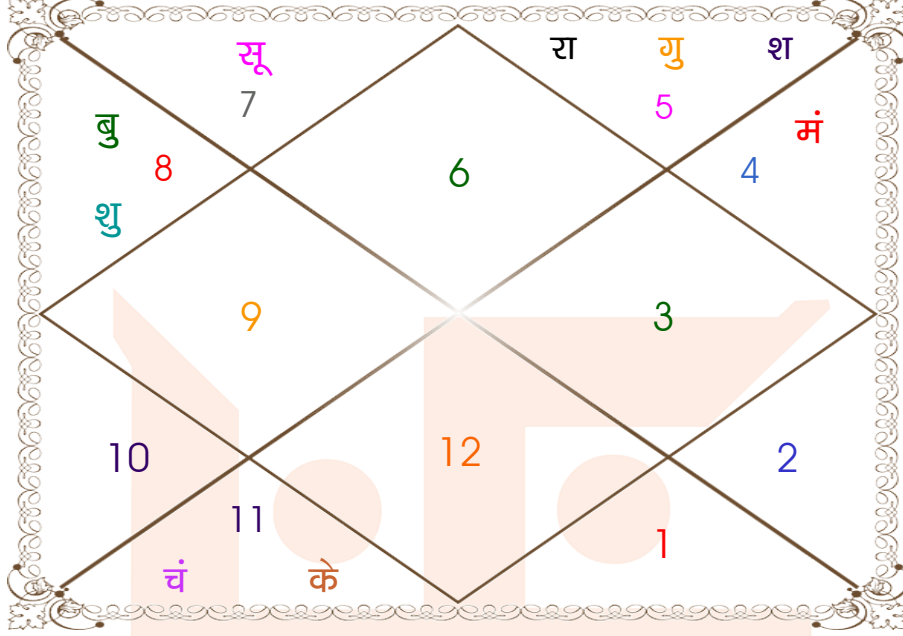


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

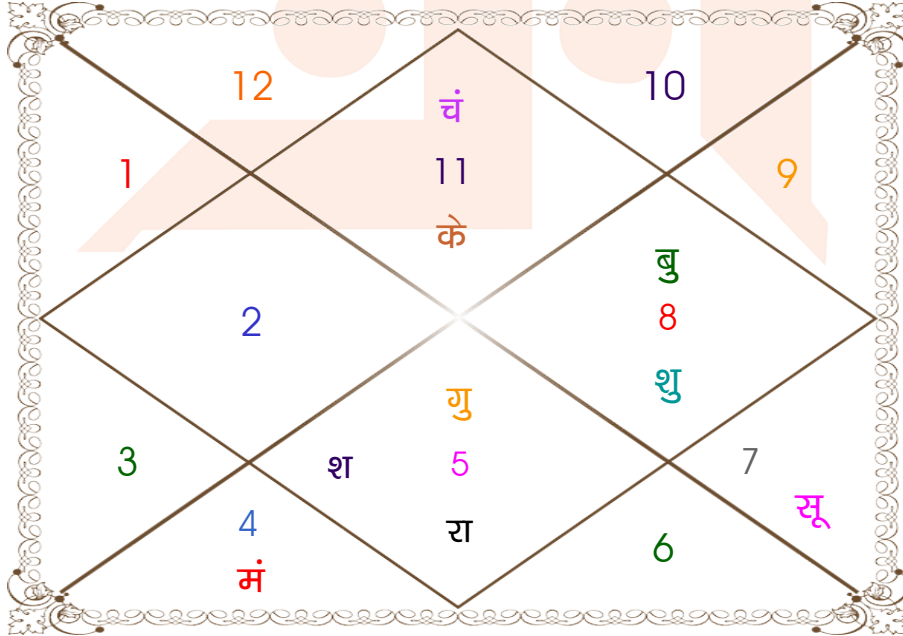


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के चं			मं
			रा गु श
	शु बु	सू	ल

लग्न कुंडली

			के चं
मं			
श रा	गु	सू	बु शु

विंशोत्तरी
राहु 6वर्ष 6मा 7दि
राहु

31/10/1979

08/05/2088

राहु	08/05/1986
गुरु	08/05/2002
शनि	08/05/2021
बुध	08/05/2038
केतु	08/05/2045
शुक्र	08/05/2065
सूर्य	08/05/2071
चन्द्र	08/05/2081
मंगल	08/05/2088

योगिनी
धान्या 1वर्ष 1मा 1दि
उल्का

01/12/2025

01/12/2031

उल्का	01/12/2026
सिद्धा	31/01/2028
संकटा	01/06/2029
मंगला	01/08/2029
पिंगला	01/12/2029
धान्या	01/06/2030
भ्रामरी	31/01/2031
भद्रिका	01/12/2031



FUTUREPOINT
Astro Solutions



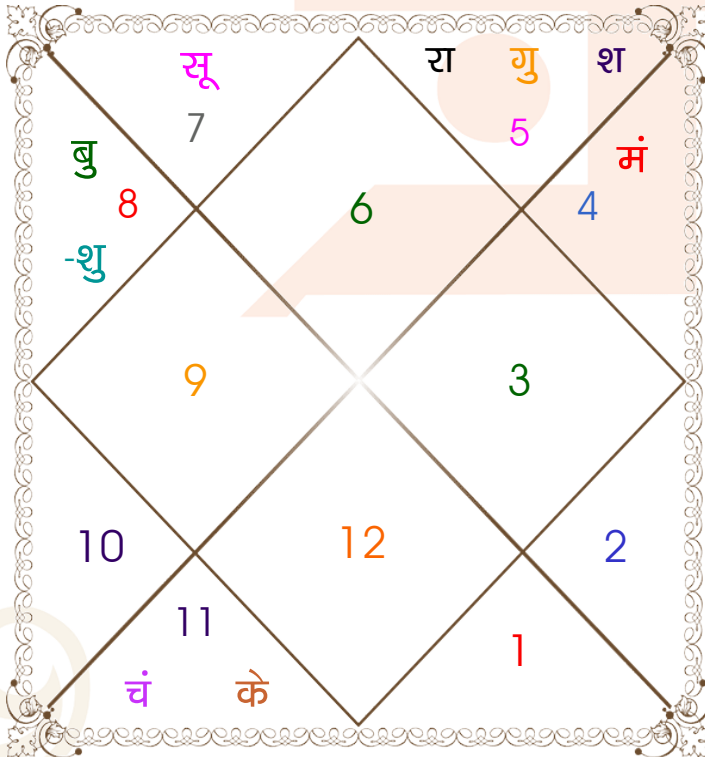
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	17:06:10	317:16:46	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	---
सूर्य			तुला	13:21:18	00:59:58	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	नीच राशि
चंद्र			कुंभ	15:10:14	14:25:49	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	सम राशि
मंगल			कर्क	26:42:42	00:31:09	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	नीच राशि
बुध			वृश्चि	07:03:29	00:55:43	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	सम राशि
गुरु			सिंह	11:59:04	00:09:05	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मित्र राशि
शुक्र			वृश्चि	00:47:05	01:14:44	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	मंगल	सम राशि
शनि			सिंह	29:36:48	00:06:07	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
राहु	व		सिंह	13:06:37	00:00:13	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	13:06:37	00:00:13	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			तुला	26:50:40	00:03:39	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	---
नेप			वृश्चि	25:07:53	00:01:48	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
प्लूटो			कन्या	26:16:01	00:02:18	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	गुरु	---
दशम भाव			मिथु	17:34:31	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	सूर्य	--

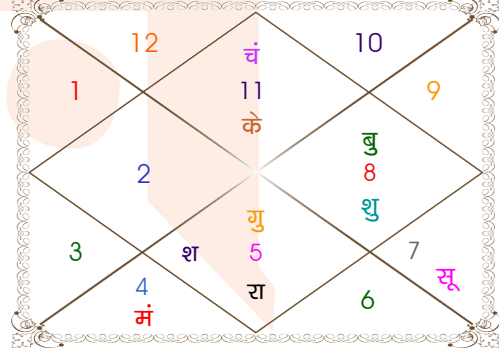
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:34:22

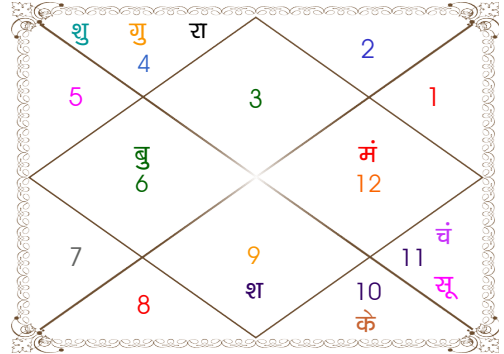
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 02:10:53	कन्या 17:06:10
2	तुला 02:10:53	तुला 17:15:37
3	वृश्चिक 02:20:20	वृश्चिक 17:25:04
4	धनु 02:29:48	धनु 17:34:31
5	मकर 02:29:48	मकर 17:25:04
6	कुम्भ 02:20:20	कुम्भ 17:15:37
7	मीन 02:10:53	मीन 17:06:10
8	मेष 02:10:53	मेष 17:15:37
9	वृष 02:20:20	वृष 17:25:04
10	मिथुन 02:29:48	मिथुन 17:34:31
11	कर्क 02:29:48	कर्क 17:25:04
12	सिंह 02:20:20	सिंह 17:15:37

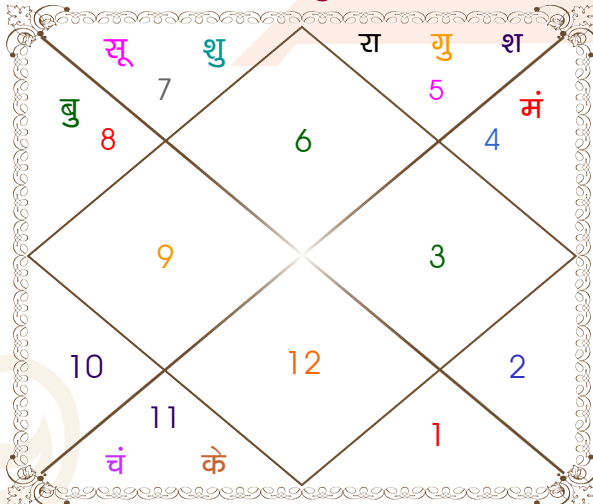
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या 17:06:10	
2	तुला 15:31:22	
3	वृश्चिक 15:59:49	
4	धनु 17:34:31	
5	मकर 19:16:33	
6	कुम्भ 19:38:42	
7	मीन 17:06:10	
8	मेष 15:31:22	
9	वृष 15:59:49	
10	मिथुन 17:34:31	
11	कर्क 19:16:33	
12	सिंह 19:38:42	

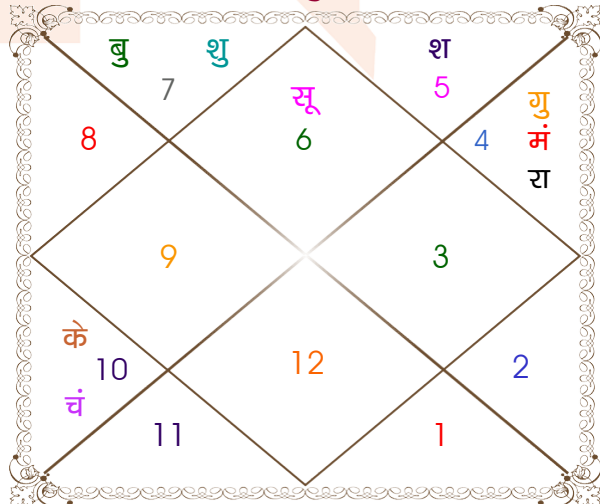
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



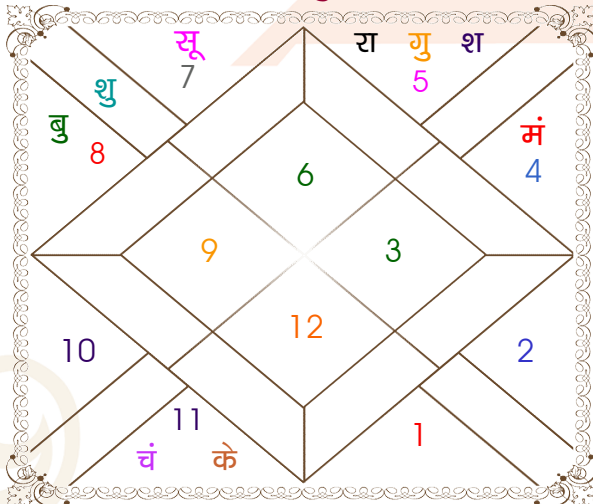
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	भीत	प्रकाश	0.19	31 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	शक्त	शयन	2.55	28 %
मंगल	अमात्य	भ्रातृ	बाल	भीत	प्रकाश	0.04	50 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	वृद्ध	शक्त	शयन	1.78	62 %
गुरु	पुत्र	धन	कुमार	मुदित	भोजन	7.42	56 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	मृत	शक्त	शयन	0.75	16 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	खल	शयन	3.60	7 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	खल	भोजन	0.00	27 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	खल	शयन	0.00	27 %
कुल						16.32	

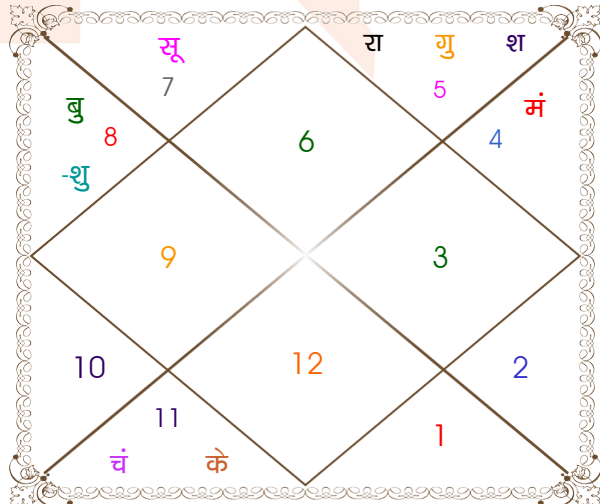
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली



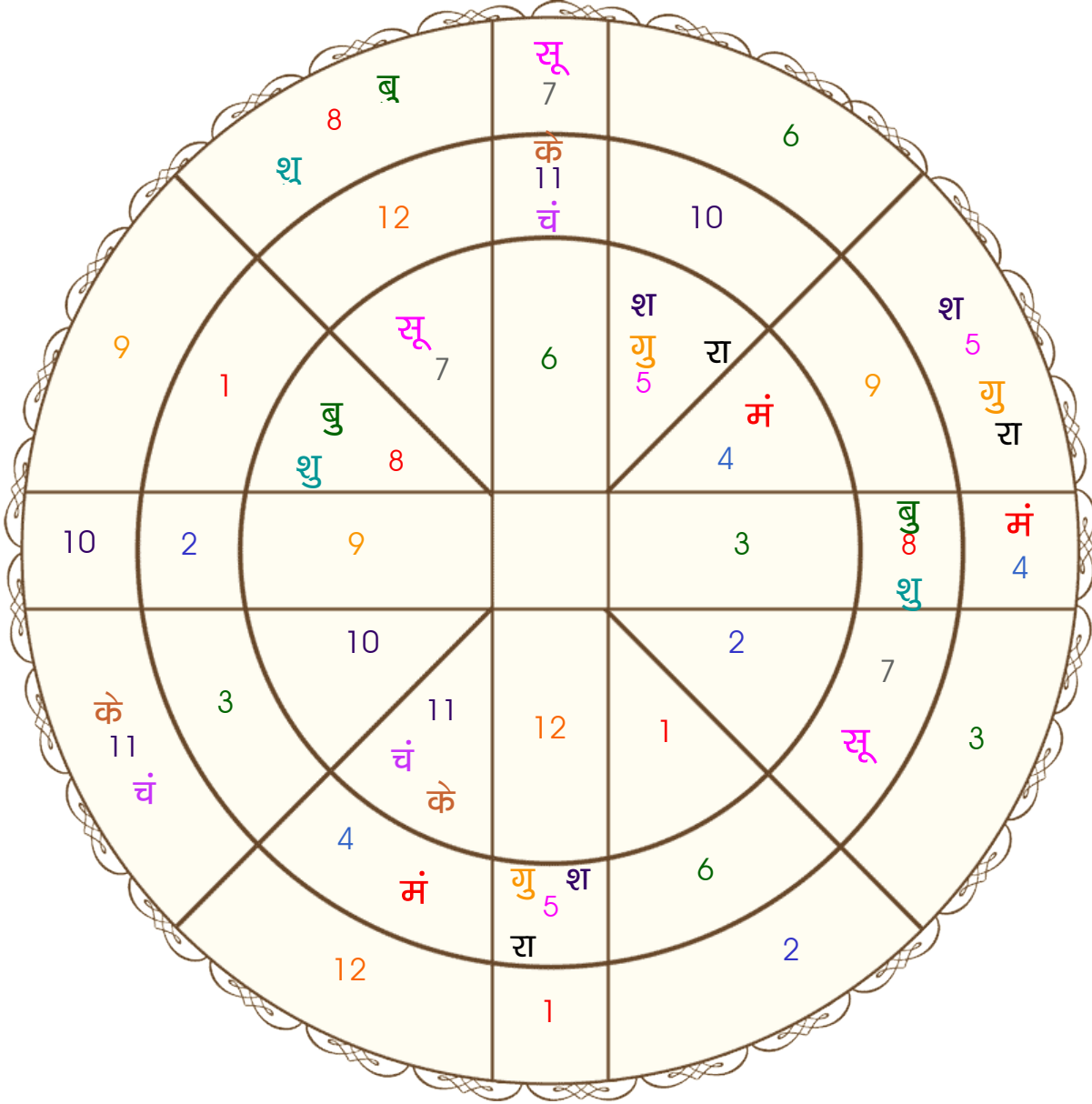
लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

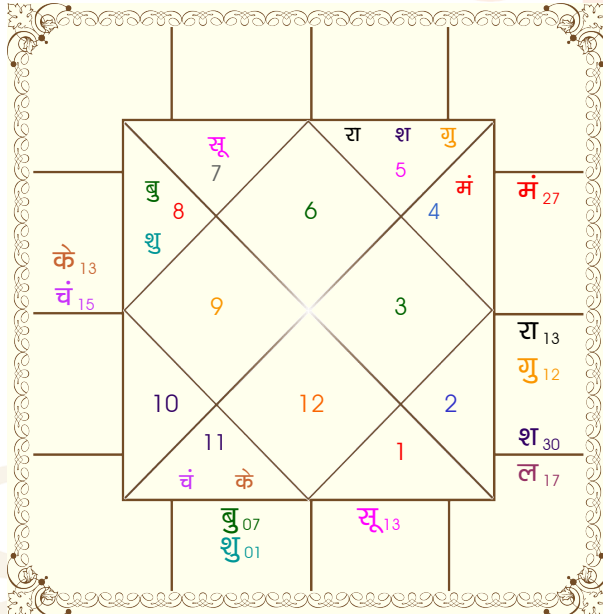
भोग्य दशा काल : राहु 6 वर्ष 4 मास 18 दिन

ग्रह								निरयण भाव							
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	
सूर्य		तुला	13:27:18	शुक्र	राहु	बुध	चंद्र	1	कन्या	17:12:11	बुध	चंद्र	शनि	राहु	
चंद्र		कुंभ	15:16:15	शनि	राहु	शुक्र	शुक्र	2	तुला	15:37:23	शुक्र	राहु	शुक्र	सूर्य	
मंगल		कर्क	26:48:43	चंद्र	बुध	गुरु	बुध	3	वृश्चि	16:05:50	मंगल	शनि	गुरु	सूर्य	
बुध		वृश्चि	07:09:30	मंगल	शनि	बुध	शनि	4	धनु	17:40:32	गुरु	शुक्र	मंगल	शनि	
गुरु		सिंह	12:05:05	सूर्य	केतु	बुध	शुक्र	5	मक	19:22:34	शनि	चंद्र	बुध	शनि	
शुक्र		वृश्चि	00:53:05	मंगल	गुरु	मंगल	शनि	6	कुंभ	19:44:42	शनि	राहु	मंगल	केतु	
शनि		सिंह	29:42:49	सूर्य	सूर्य	राहु	गुरु	7	मीन	17:12:11	गुरु	बुध	बुध	शुक्र	
राहु	व	सिंह	13:12:38	सूर्य	केतु	बुध	शनि	8	मेष	15:37:23	मंगल	शुक्र	सूर्य	चंद्र	
केतु	व	कुंभ	13:12:38	शनि	राहु	बुध	शुक्र	9	वृष	16:05:50	शुक्र	चंद्र	शनि	बुध	
हर्ष		तुला	26:56:41	शुक्र	गुरु	शुक्र	सूर्य	10	मिथु	17:40:32	बुध	राहु	सूर्य	गुरु	
नेप		वृश्चि	25:13:53	मंगल	बुध	राहु	बुध	11	कर्क	19:22:34	चंद्र	बुध	शुक्र	शुक्र	
प्लूटो		कन्या	26:22:02	बुध	मंगल	गुरु	शनि	12	सिंह	19:44:42	सूर्य	शुक्र	राहु	सूर्य	

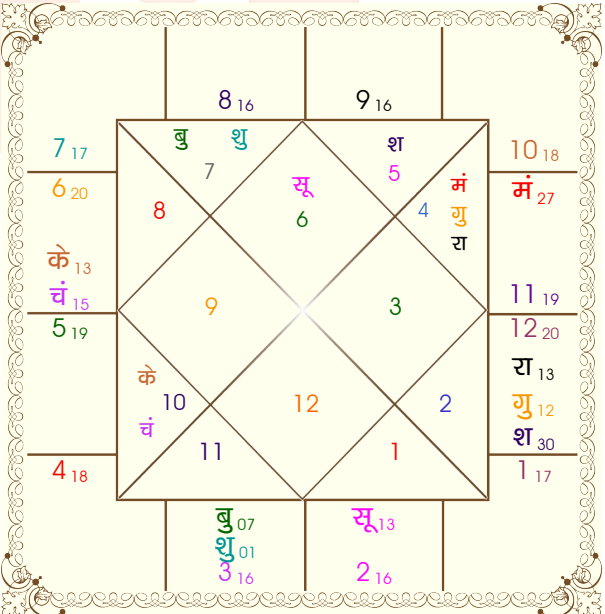
के.पी. अयनांश : 23:28:22

फॉरच्युना : मकर 19:01:07

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020

Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, मंगल- बुध- शनि,
2	मंगल, बुध, शुक्र,
3	मंगल-
4	गुरु- शुक्र-
5	चंद्र, बुध- गुरु, शनि- राहु, केतु,
6	बुध- शनि-
7	गुरु- शुक्र-
8	मंगल-
9	शुक्र-
10	मंगल- बुध-
11	सूर्य, चंद्र+ मंगल, गुरु, शुक्र, राहु, केतु,
12	सूर्य- बुध, शनि+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 11, 12-
चंद्र	5, 11+
मंगल	1- 2, 3- 8- 10- 11,
बुध	1- 2, 5- 6- 10- 12,
गुरु	4- 5, 7- 11,
शुक्र	2, 4- 7- 9- 11,
शनि	1, 5- 6- 12+
राहु	5, 11,
केतु	5, 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी
 लग्न राशि स्वामी
 राशि नक्षत्र स्वामी
 राशि स्वामी
 वार स्वामी
 लग्न अन्तर स्वामी
 राशि अन्तर स्वामी

चन्द्र
 बुध
 राहु
 शनि
 बुध
 शनि
 शुक्र



FUTUREPOINT
 Astro Solutions



कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	श	सू	मं	बु
2	मं	बु शु	--	शु
3	--	--	--	मं
4	--	--	शु	गु
5	गु रा	चं के	बु	श
6	--	--	बु	श
7	--	--	शु	गु
8	--	--	--	मं
9	--	--	--	शु
10	--	--	मं	बु
11	सू चं शु के	मं गु रा	--	चं
12	बु	श	श	सू

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	12	---	तुला	1
चंद्र	11	1,5,9	कुम्भ	5
मंगल	3,8	---	कर्क	11
बुध	1,10	7,11	वृश्चिक	2
गुरु	4,7	---	सिंह	11
शुक्र	2,9	4,8,12	वृश्चिक	2
शनि	5,6	3	सिंह	12
राहु	---	2,6,10	सिंह	11
केतु	---	---	कुम्भ	5

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	2,6,10	11	1,10	7,11	2
चंद्र	---	2,6,10	11	2,9	4,8,12	2
मंगल	1,10	7,11	2	4,7	---	11
बुध	5,6	3	12	1,10	7,11	2
गुरु	---	---	5	1,10	7,11	2
शुक्र	4,7	---	11	3,8	---	11
शनि	12	---	1	---	2,6,10	11
राहु	---	---	5	1,10	7,11	2
केतु	---	2,6,10	11	1,10	7,11	2



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह दृष्टि विचार

दृश्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	193.35	315.17	116.71	217.06	131.98	210.78	149.61	133.11	313.11	206.84	235.13	176.27
सूर्य	--	पंच	--	--	--	--	--	--	पंच	युति	--	--
193.35	0.00	2.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.99	1.58	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	सप्त	--	सप्त	सप्त	युति	--	--	--
315.17	0.00	0.00	0.00	0.00	9.45	0.00	0.58	9.77	9.77	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	8वां	--	4था	--	4था	--	--	8वां	4था	पंच	तृती
116.71	1.71	3.54	0.00	4.68	0.00	9.10	0.00	0.00	1.46	10.00	2.75	2.98
बुध	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	युति	--	--
217.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.92	0.00	0.00	0.00	4.81	0.00	0.00
गुरु	तृती	सप्त	--	चतु	--	--	--	युति	सप्त	--	--	अष्ट
131.98	2.81	9.45	0.00	0.83	0.00	0.00	0.00	9.93	9.93	0.00	0.00	0.43
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	युति	--	--
210.78	0.00	0.00	0.00	7.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.16	0.00	0.00
शनि	--	सप्त	--	3रा	--	3रा	--	--	--	3रा	चतु	--
149.61	0.00	0.58	0.00	7.11	0.00	9.92	0.00	0.00	0.00	9.58	1.16	0.00
राहु	तृती	सप्त	--	--	युति	--	--	--	सप्त	--	--	--
133.11	2.99	9.77	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	युति	--	--	सप्त	--	--	सप्त	--	--	--	--
313.11	0.00	9.77	0.00	0.00	9.93	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	युति	--	--	युति	--	युति	--	--	--	--	--	--
206.84	1.58	0.00	0.00	4.81	0.00	9.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
235.13	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	नवां	--	--	--	--	--	--	तृती	--
176.27	0.00	0.00	0.00	0.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.87	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्ट्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	167.10	197.26	227.42	257.58	287.42	317.26	347.10	17.26	47.42	77.58	107.42	137.26
सूर्य	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
193.35	0.00	9.18	0.00	1.35	1.46	1.56	0.00	9.18	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त
315.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.76	0.00	2.56	2.50	2.42	0.00	9.76
मंगल	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--
116.71	0.00	5.49	0.00	0.00	5.63	5.49	0.00	0.00	0.00	0.00	5.63	0.00
बुध	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
217.06	0.00	0.00	4.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.67	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
131.98	0.00	0.57	0.44	8.33	0.00	8.51	0.00	8.51	0.00	0.00	0.00	8.51
शुक्र	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
210.78	0.00	1.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.54	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति
149.61	0.00	2.74	0.00	0.00	0.00	2.74	0.00	0.00	2.89	0.00	0.00	2.74
राहु	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
133.11	0.00	1.40	1.29	1.17	0.00	9.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.07
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त
313.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.07	0.00	1.40	0.00	1.17	0.00	9.07
हर्ष	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
206.84	0.00	5.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.37	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
235.13	0.00	0.00	6.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.91	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
176.27	5.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्ट्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	167.10	195.52	226.00	257.58	289.28	319.64	347.10	15.52	46.00	77.58	109.28	139.64
सूर्य	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--
193.35	0.00	9.74	0.00	1.35	0.06	0.00	0.00	9.74	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त
315.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.92	0.00	2.99	2.93	2.42	0.00	8.92
मंगल	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--
116.71	0.00	3.89	0.00	0.00	7.12	7.38	0.00	0.00	0.00	0.00	7.12	0.00
बुध	--	--	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--
217.06	0.00	0.00	5.93	0.00	0.94	0.00	0.00	0.00	5.93	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
131.98	0.00	1.80	1.49	8.33	0.00	6.95	0.00	9.32	0.00	0.00	0.00	6.95
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
210.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति
149.61	0.00	0.95	0.00	0.00	0.00	5.03	0.00	0.00	1.44	0.00	0.00	5.03
राहु	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
133.11	0.00	2.42	2.18	1.17	0.00	7.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.75
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त
313.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.75	0.00	2.42	0.00	1.17	0.00	7.75
हर्ष	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
206.84	0.00	3.76	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.76	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--
235.13	0.00	0.00	5.76	0.00	0.11	0.40	0.00	0.00	5.76	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
176.27	5.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

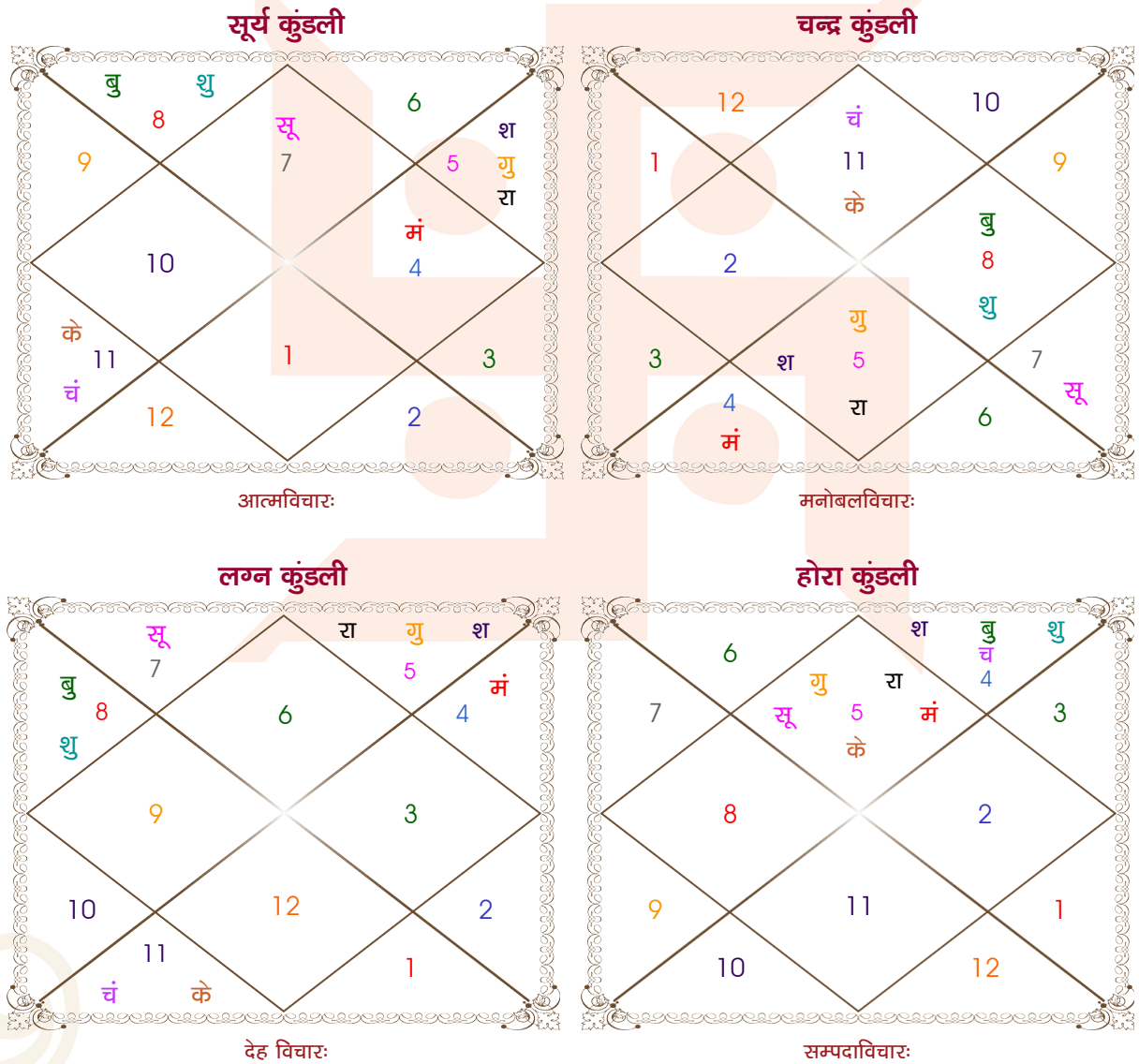
संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

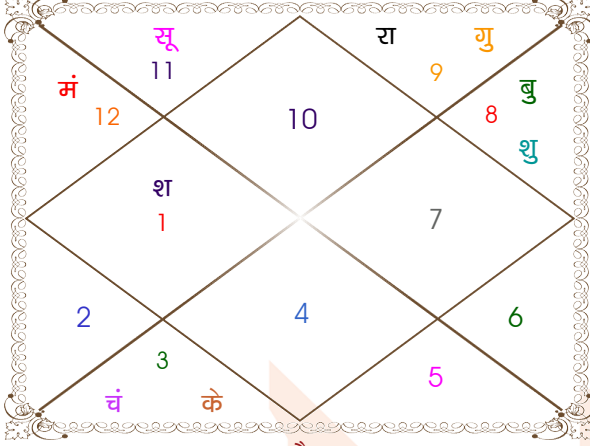
षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



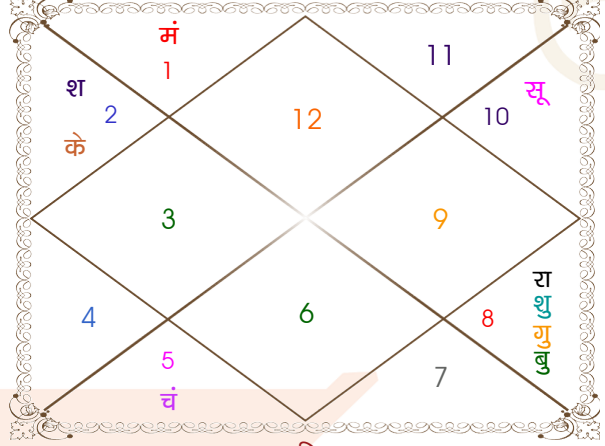
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



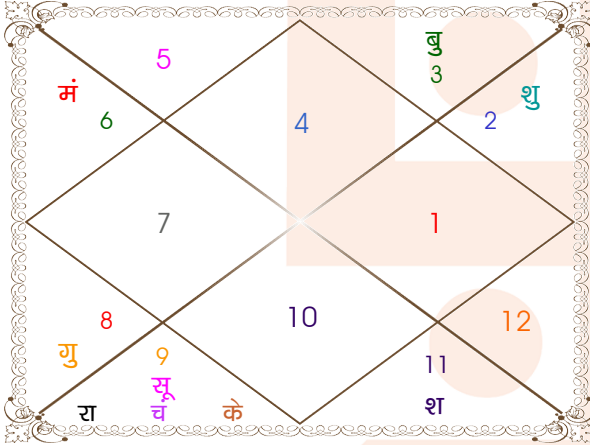
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



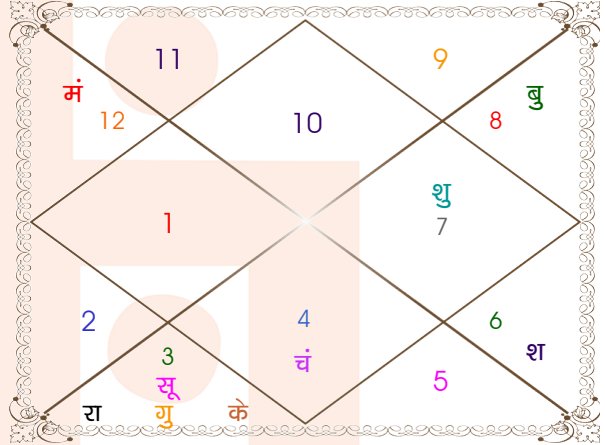
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



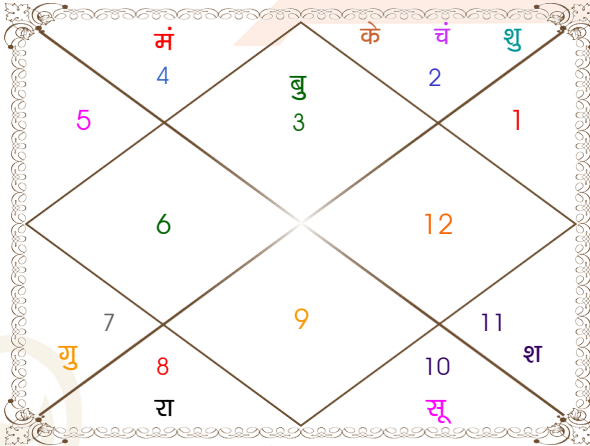
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



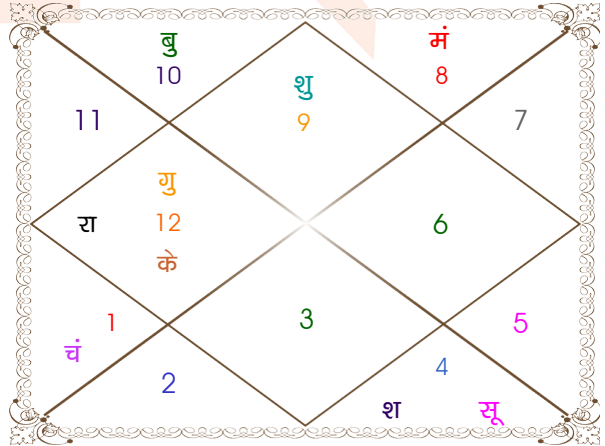
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

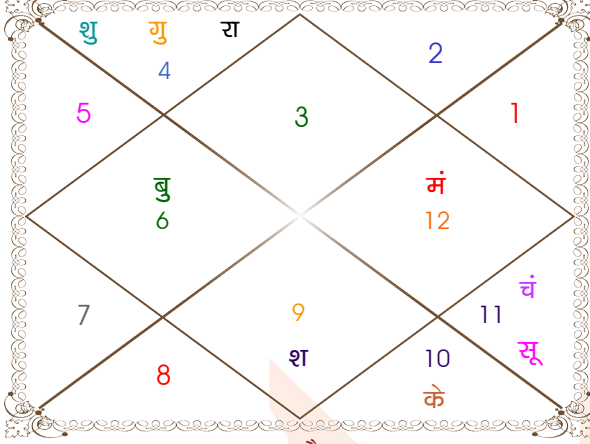


FUTUREPOINT
Astro Solutions



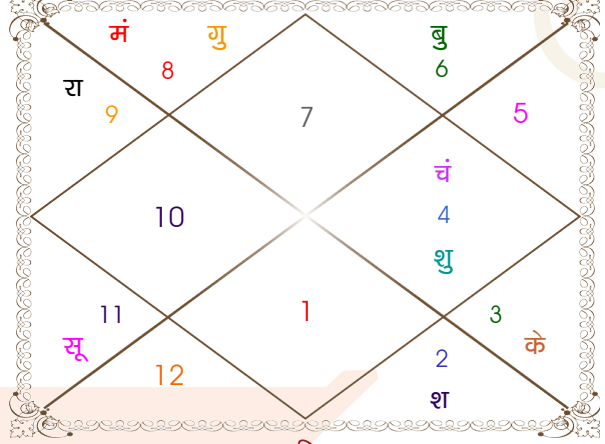
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



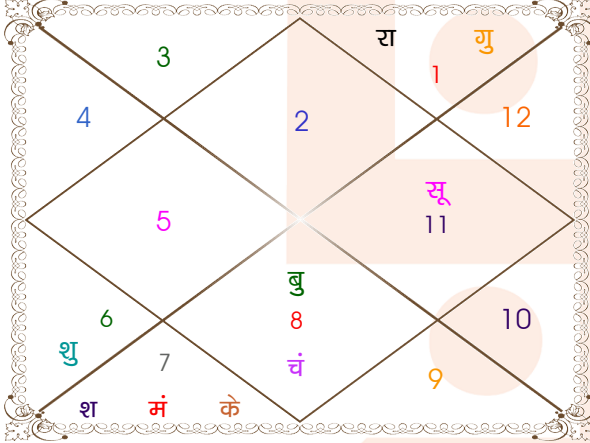
कलत्र सौख्यम्

दशमांश कुंडली



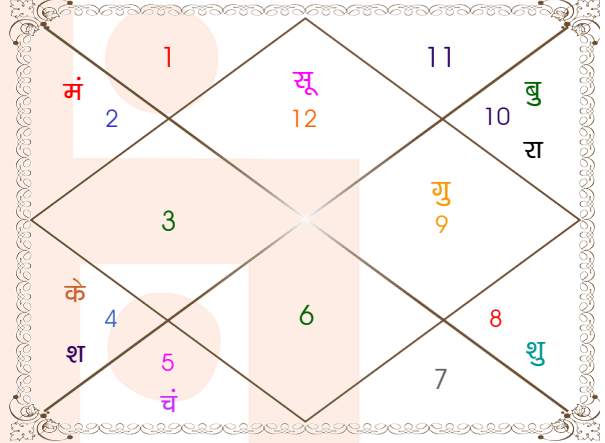
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



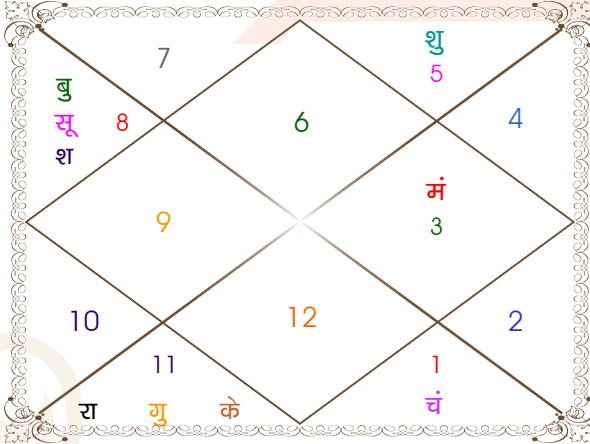
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



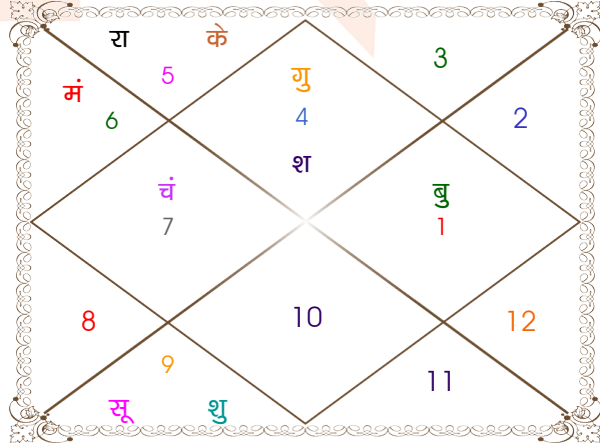
पितृसौख्यम्

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

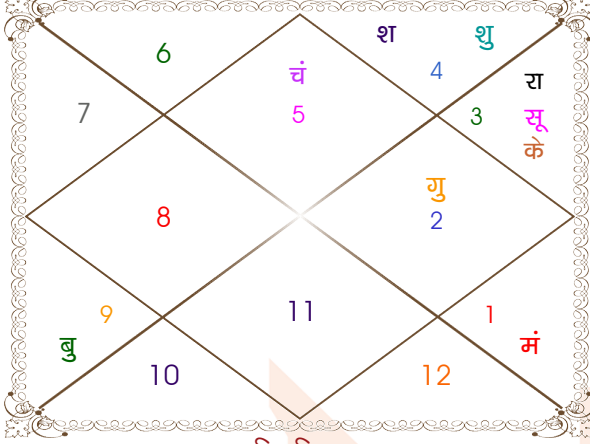
विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

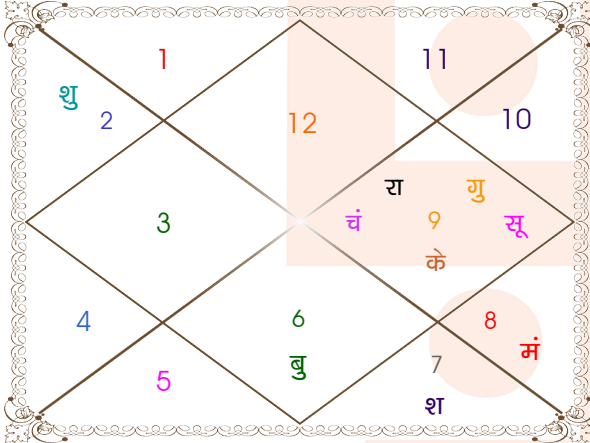
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



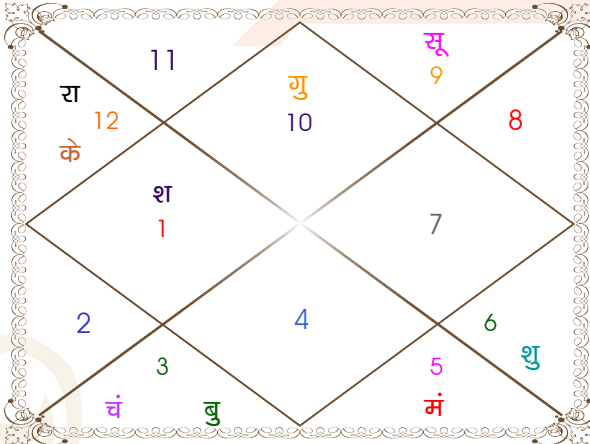
विद्याविचारः

त्रिंशश कुंडली



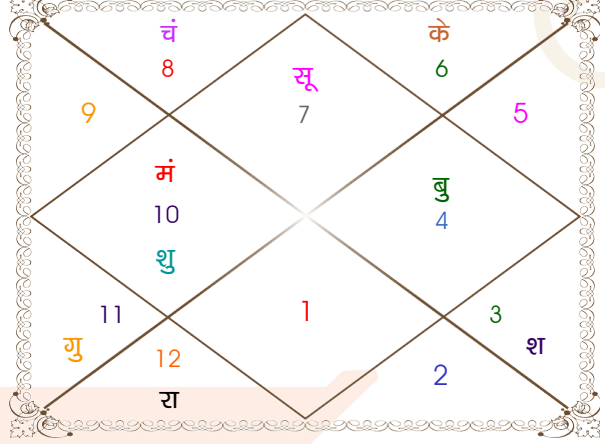
अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



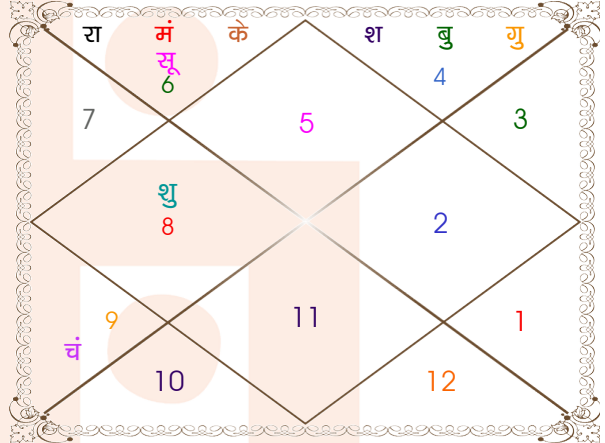
सर्वास्थितिविचारः

सप्तविंशश कुंडली



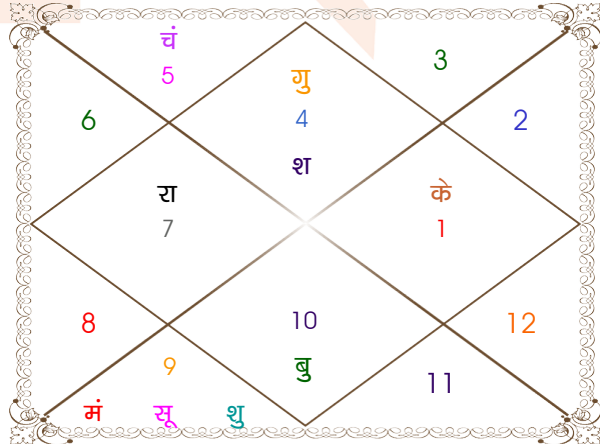
बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कन्या	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	सिंह	सिंह	कुंभ
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मक	कुंभ	मिथु	मीन	वृश्चि	धनु	वृश्चि	मेष	धनु	मिथु
चतुर्थांश	मीन	मक	सिंह	मेष	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि	वृष	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	मिथु	मक	वृष	कर्क	मिथु	तुला	वृष	कुंभ	वृश्चि	वृष
नवमांश	मिथु	कुंभ	कुंभ	मीन	कन्या	कर्क	कर्क	धनु	कर्क	मक
दशमांश	तुला	कुंभ	कर्क	वृश्चि	कन्या	वृश्चि	कर्क	वृष	धनु	मिथु
द्वादशांश	मीन	मीन	सिंह	वृष	मक	धनु	वृश्चि	कर्क	मक	कर्क
षोडशांश	कन्या	वृश्चि	मेष	मिथु	वृश्चि	कुंभ	सिंह	वृश्चि	कुंभ	कुंभ
विंशांश	कर्क	धनु	तुला	कन्या	मेष	कर्क	धनु	कर्क	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	सिंह	मिथु	सिंह	मेष	धनु	वृष	कर्क	कर्क	मिथु	मिथु
सप्तविंशांश	तुला	तुला	वृश्चि	मक	कर्क	कुंभ	मक	मिथु	मीन	कन्या
त्रिंशांश	मीन	धनु	धनु	वृश्चि	कन्या	धनु	वृष	तुला	धनु	धनु
खवेदांश	सिंह	कन्या	धनु	कन्या	कर्क	कर्क	वृश्चि	कर्क	कन्या	कन्या
अक्षवेदांश	मक	धनु	मिथु	सिंह	मिथु	मक	कन्या	मेष	मीन	मीन
षष्ट्यंश	कर्क	धनु	सिंह	धनु	मक	कर्क	धनु	कर्क	तुला	मेष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
चन्द्र	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
मंगल	1 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक
बुध	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
गुरु	4 चामर	4 चामर	5 सिंहान	7 कल्पवृक्ष
शुक्र	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	2 भेदक
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.20	10.80	14.60	12.00	16.70	8.70	8.65	8.00	7.10
सप्तवर्ग	12.20	11.25	14.00	13.30	15.80	10.25	9.97	8.28	8.23
दशवर्ग	14.55	11.35	14.70	13.73	14.43	11.85	9.73	10.95	8.88
षोडशवर्ग	14.15	10.03	14.35	12.88	13.00	11.18	9.05	10.58	8.30



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	सम	शत्रु	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	सम	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	1	34	0	43	48	11	43
सप्तवर्गज बल	105	86	116	120	150	86	75
ओजयुग्मक बल	30	0	0	0	15	30	30
केन्द्र बल	30	15	30	15	15	15	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	166	135	147	178	228	143	163
कुल दिग्बल	21	41	47	43	48	44	6
नतोन्नत बल	23	37	37	60	23	23	37
पक्ष बल	19	81	19	41	41	41	19
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	24	41	49	56	42	6	26
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	126	160	211	172	166	99	83
कुल चेष्टाबल	0	0	34	42	23	11	17
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	2	7	13	-16	19	-16	14
कुल षट्बल	376	394	469	445	518	324	292
रूप षट्बल	6.3	6.6	7.8	7.4	8.6	5.4	4.9
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.1	1.6	1.1	1.3	1.0	1.0
संबंधित पद	3	4	1	5	2	6	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	4.45	37.19	3.83	42.35	33.25	11.27	27.38
कष्ट फल	49.91	22.43	39.23	17.65	21.30	48.73	26.77

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	445	324	469	518	292	292	518	469	324	445	394	376
भावदिग्बल	60	50	20	0	50	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	11	16	13	46	20	79	39	62	74	36	28	26
कुल भाव बल	516	390	502	563	362	381	587	571	448	511	432	442
रूप भाव बल	8.6	6.5	8.4	9.4	6.0	6.3	9.8	9.5	7.5	8.5	7.2	7.4
संबंधित पद	4	10	6	3	12	11	1	2	7	5	9	8

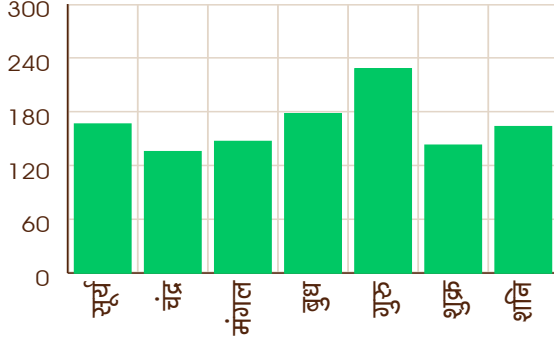


FUTUREPOINT
Astro Solutions

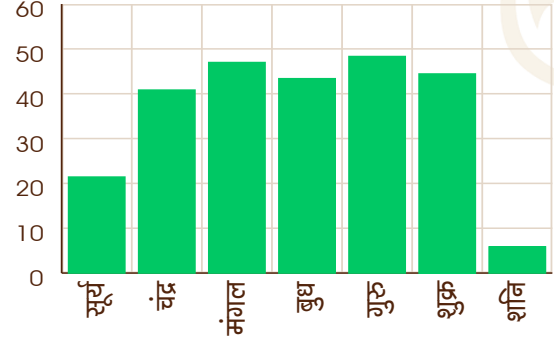


षट्बल ग्राफ

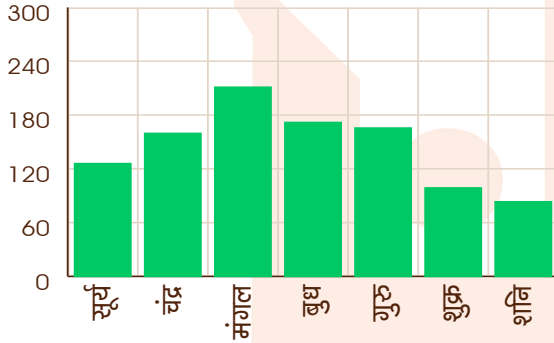
स्थान बल



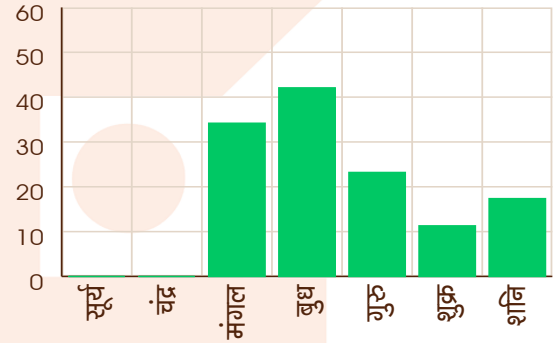
दिग्बल



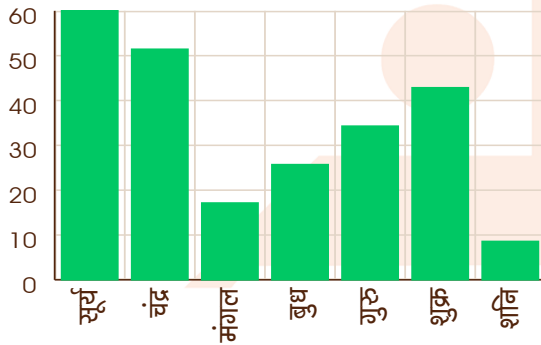
कालबल



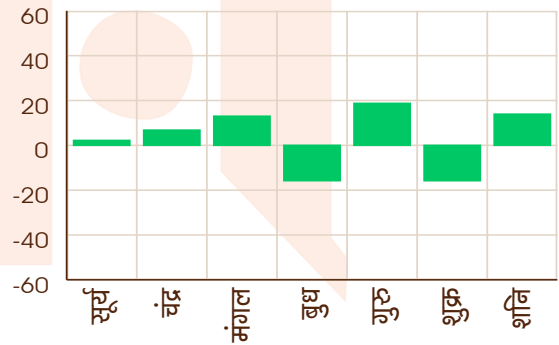
चेष्टाबल



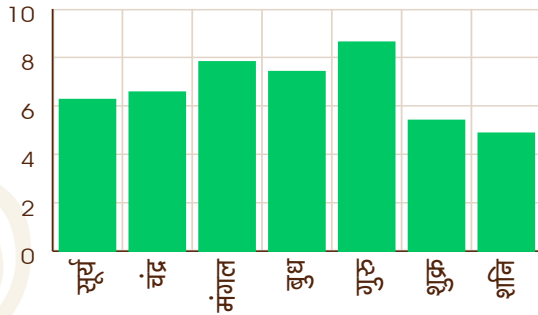
नैसर्गिक बल



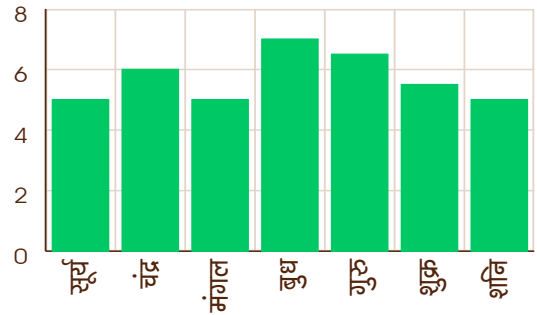
दृग्बल



रूप षट्बल



न्यूनतम षट्बल

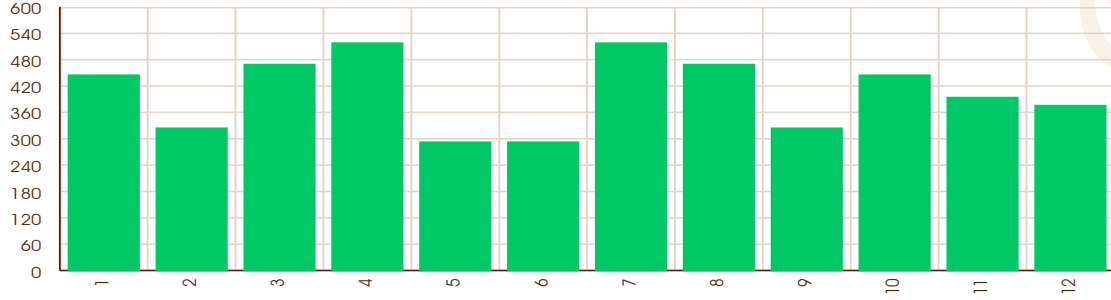


FUTUREPOINT
Astro Solutions

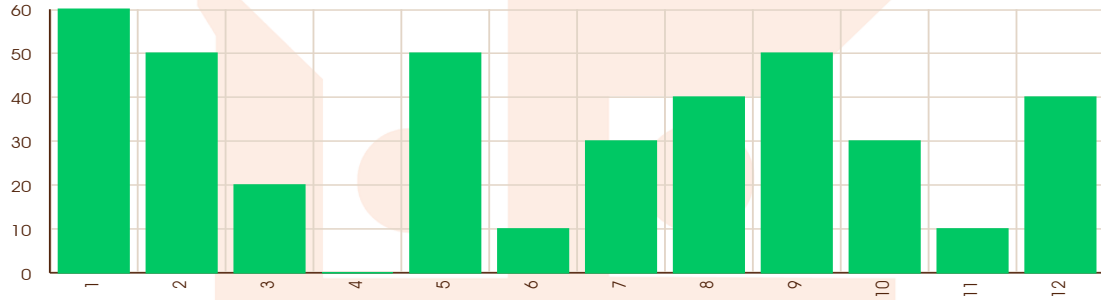


भाव बल ग्राफ

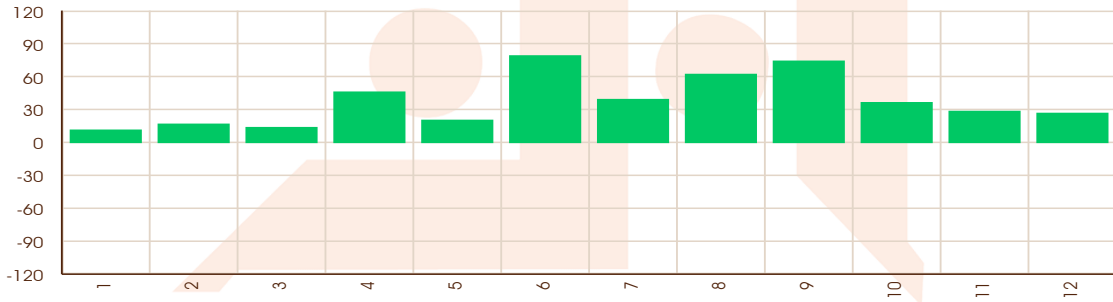
भावाधिपति बल



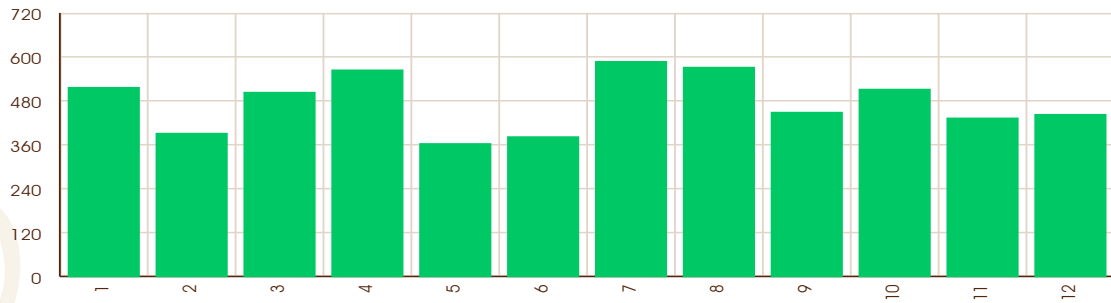
भावदिग्बल



भावदृष्टि बल



भाव बल

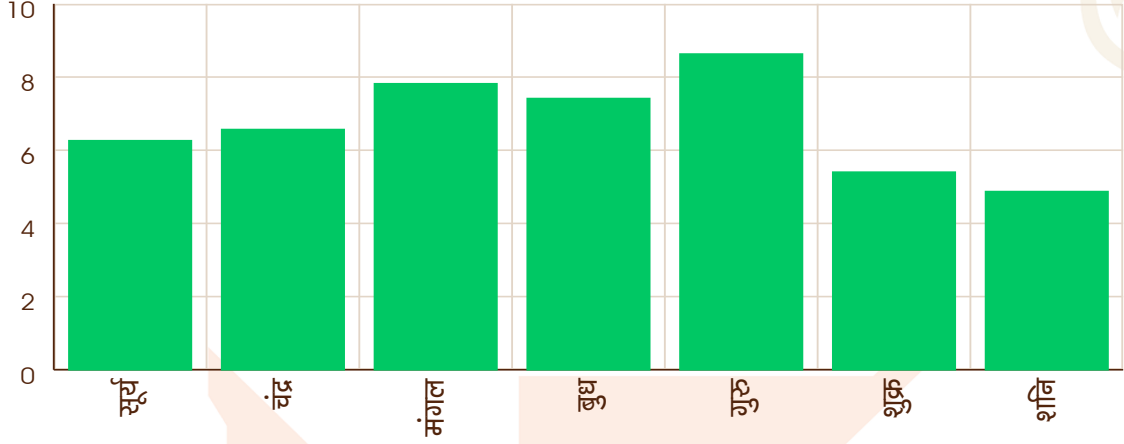


FUTUREPOINT
Astro Solutions

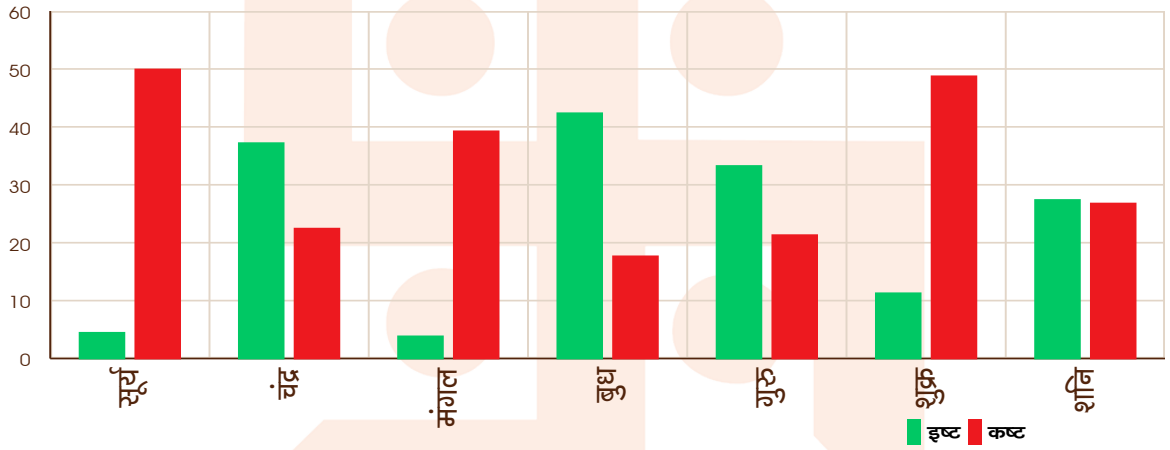


षट्बल तथा भावबल ग्राफ

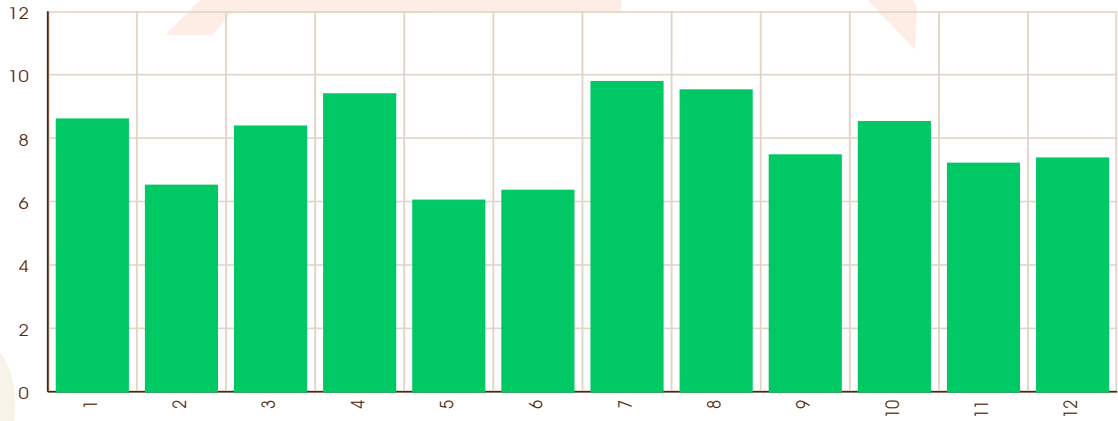
रूप षट्बल



इष्ट - कष्ट फल



रूप भाव बल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

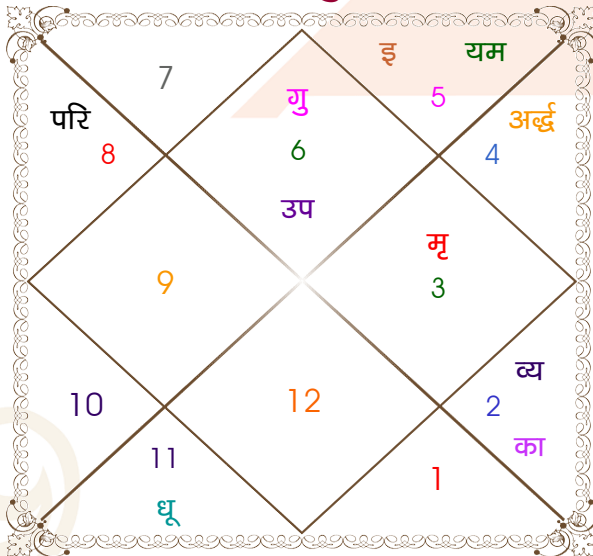


उपग्रह एवं आरुढ़

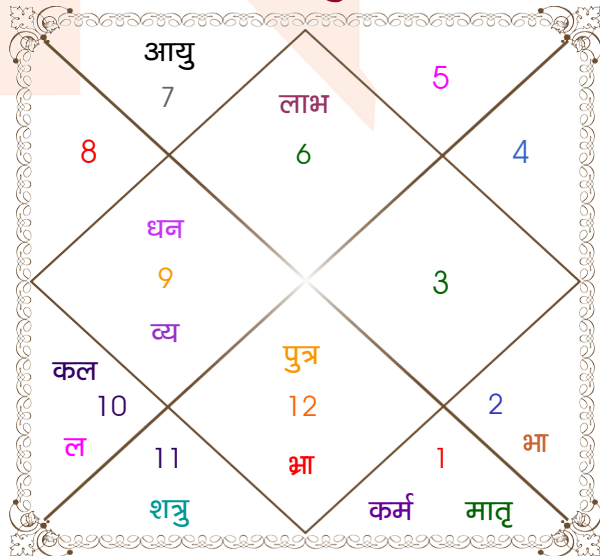
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कन्या	17:06:10	--	--	हस्त	3	13
गुलिक	गु	कन्या	22:31:44	--	--	हस्त	4	13
काल	का	वृष	13:35:16	--	--	रोहिणी	2	4
मृत्यु	मृ	मिथु	28:19:11	--	--	पुनर्वसु	3	7
यमघंटक	यम	सिंह	09:46:32	--	--	मघा	3	10
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	19:10:26	--	--	आश्लेषा	1	9
धूम	धू	कुंभ	26:41:18	नीच	--	पू०भाद्रपद	3	25
व्यतिपात	व्य	वृष	03:18:42	नीच	--	कृतिका	2	3
परिवेश	परि	वृश्चि	03:18:42	--	--	विशाखा	4	16
इन्द्रचाप	इ	सिंह	26:41:18	--	--	उ०फाल्गुनी	1	12
उपकेतु	उप	कन्या	13:21:18	--	--	हस्त	2	13

प्राणपद	:	मीन	01:23:17	कारकौश लग्न	:	धनु	26:31:11
भाव लग्न	:	सिंह	18:00:16	होरा लग्न	:	कर्क	18:54:22
घटी लग्न	:	वृष	17:51:47	वर्णद लग्न	:	मिथु	23:59:28

उपग्रह कुंडली



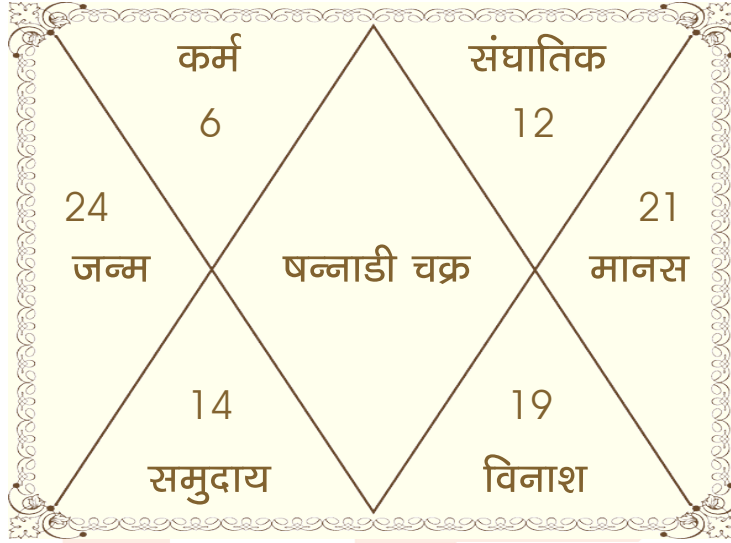
आरुढ़ कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षण्णाडी चक्र



त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
कुल	4	4	3	4	3	3	7	4	4	5	5	2	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
मंगल	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	5	4	3	5	4	4	6	4	2	5	4	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
बुध	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	5	3	3	2	2	2	3	4	3	5	3	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
कुल	4	3	4	5	7	4	3	5	6	4	6	3	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	6	4	6	3	6	4	4	5	4	4	4	6	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	कुल
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	7
गुरु	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
मंगल	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
कुल	3	6	4	2	6	5	6	5	3	2	6	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	2	4	4	3	5	3	1	0	5	2	5	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	1	6	6	5	4	2	4	3	5	5	4	49



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	2	5	5	2	4	4	3	5	3	1	0	39
गुरु	4	4	4	6	6	4	6	3	6	4	4	5	56
मंगल	5	3	4	5	3	3	2	2	2	3	4	3	39
सूर्य	7	4	4	5	5	2	4	4	3	4	3	3	48
शुक्र	5	6	5	3	2	6	4	3	6	4	2	6	52
बुध	4	3	5	6	4	6	3	4	3	4	5	7	54
चंद्र	3	5	4	4	6	4	2	5	4	3	5	4	49
बिन्दु	33	27	31	34	28	29	25	24	29	25	24	28	337
रेखा	23	29	25	22	28	27	31	32	27	31	32	28	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	0	4	5	0	2	3	3	3	1	0	0	24
गुरु	0	0	0	3	2	0	2	0	2	0	0	2	11
मंगल	3	0	2	3	1	0	0	0	0	0	2	1	12
सूर्य	4	2	1	2	2	0	1	1	0	2	0	0	15
शुक्र	3	2	3	0	0	2	2	0	4	0	0	3	19
बुध	1	0	2	2	1	3	0	0	0	1	2	3	15
चंद्र	0	2	2	0	3	1	0	1	1	0	3	0	13
रेखा	14	6	14	15	9	8	8	5	10	4	7	9	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	2	5	0	2	3	3	3	1	0	0	19
गुरु	0	0	0	3	2	0	2	0	0	0	0	0	7
मंगल	3	0	2	3	1	0	0	0	0	0	2	1	12
सूर्य	3	1	1	2	2	0	1	1	0	2	0	0	13
शुक्र	3	0	1	0	0	2	2	0	1	0	0	3	12
बुध	1	0	2	2	1	1	0	0	0	0	2	3	12
चंद्र	0	2	1	0	3	1	0	1	1	0	3	0	12
रेखा	10	3	9	15	9	6	8	5	5	3	7	7	87

शोध्य पिंड

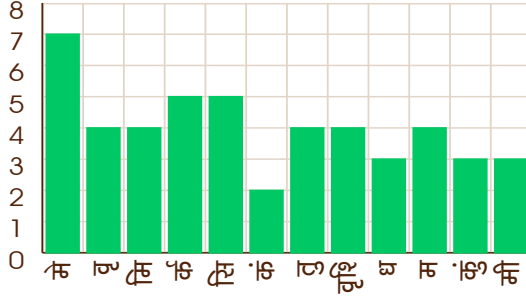
	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	92	113	93	104	46	98	123
ग्रह पिंड	63	72	49	41	64	10	91
शोध्य पिंड	155	185	142	145	110	108	214

अष्टकवर्ग सारिणी

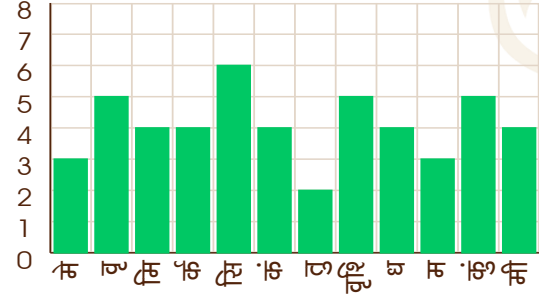
सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग

भिन्नाष्टक ग्राफ

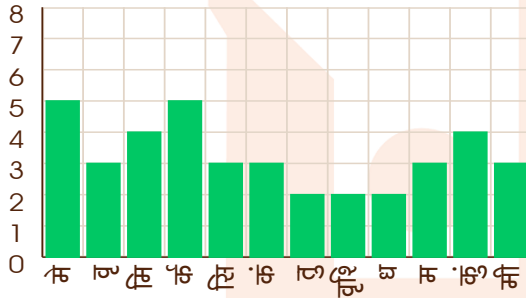
सूर्य



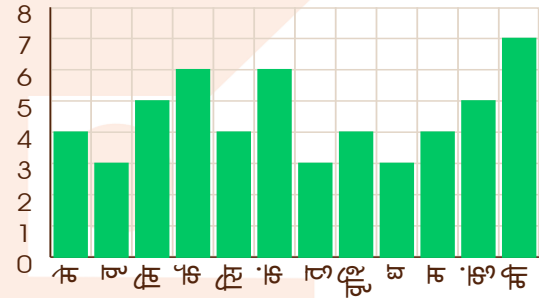
चन्द्र



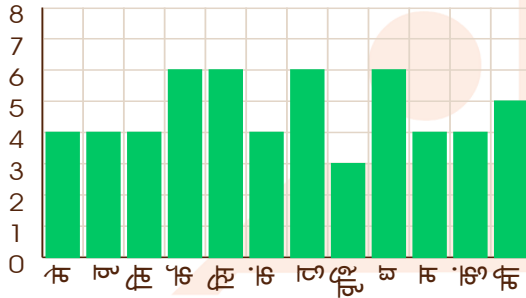
मंगल



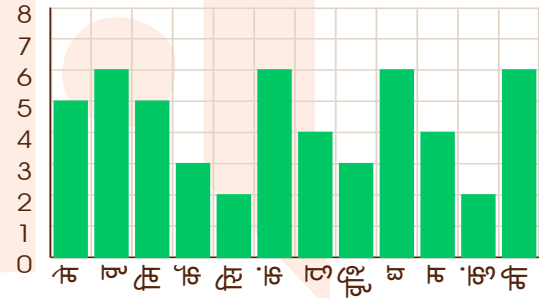
बुध



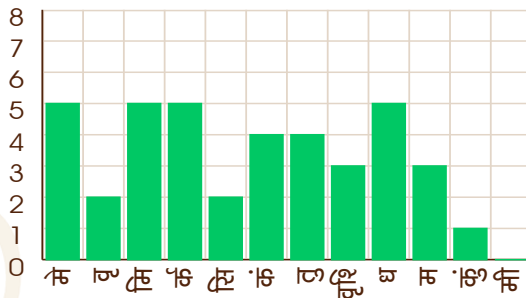
गुरु



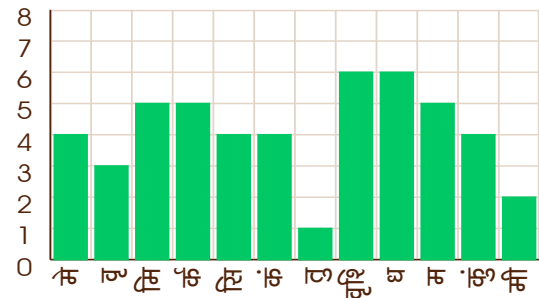
शुक्र



शनि



लग्न



FUTUREPOINT
Astro Solutions

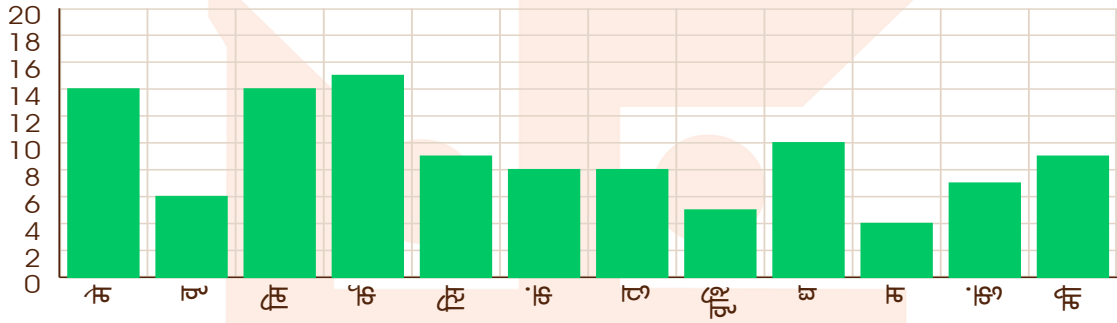


अष्टकवर्ग ग्राफ

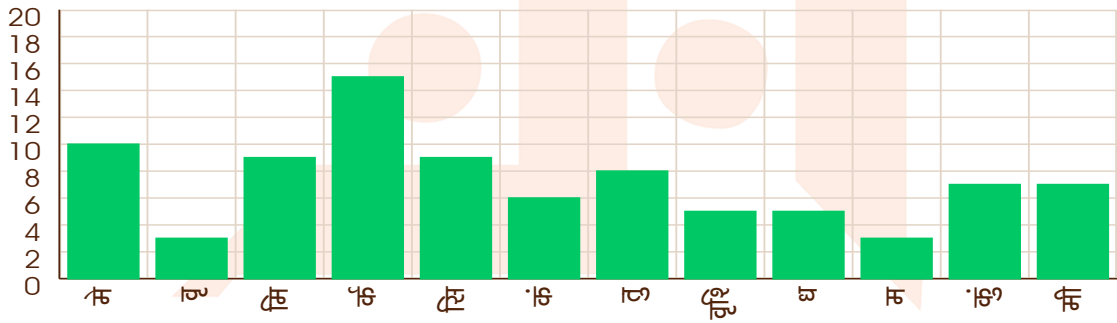
सर्वाष्टकवर्ग



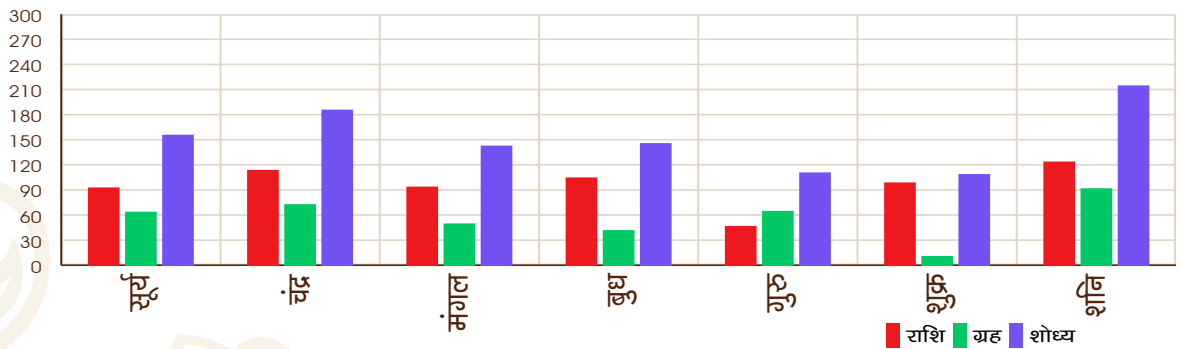
त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



शोध्य पिंड



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 6 वर्ष 6 मास 7 दिन

राहु 18 वर्ष 31/10/1979 08/05/1986	गुरु 16 वर्ष 08/05/1986 08/05/2002	शनि 19 वर्ष 08/05/2002 08/05/2021	बुध 17 वर्ष 08/05/2021 08/05/2038	केतु 7 वर्ष 08/05/2038 08/05/2045
00/00/0000	गुरु 25/06/1988	शनि 11/05/2005	बुध 04/10/2023	केतु 04/10/2038
00/00/0000	शनि 07/01/1991	बुध 19/01/2008	केतु 01/10/2024	शुक्र 04/12/2039
00/00/0000	बुध 13/04/1993	केतु 27/02/2009	शुक्र 01/08/2027	सूर्य 10/04/2040
31/10/1979	केतु 20/03/1994	शुक्र 28/04/2012	सूर्य 07/06/2028	चंद्र 09/11/2040
केतु 25/11/1979	शुक्र 18/11/1996	सूर्य 10/04/2013	चंद्र 06/11/2029	मंगल 07/04/2041
शुक्र 25/11/1982	सूर्य 07/09/1997	चंद्र 10/11/2014	मंगल 04/11/2030	राहु 26/04/2042
सूर्य 20/10/1983	चंद्र 07/01/1999	मंगल 19/12/2015	राहु 23/05/2033	गुरु 02/04/2043
चंद्र 19/04/1985	मंगल 13/12/1999	राहु 25/10/2018	गुरु 29/08/2035	शनि 11/05/2044
मंगल 08/05/1986	राहु 08/05/2002	गुरु 08/05/2021	शनि 08/05/2038	बुध 08/05/2045
शुक्र 20 वर्ष 08/05/2045 08/05/2065	सूर्य 6 वर्ष 08/05/2065 08/05/2071	चंद्र 10 वर्ष 08/05/2071 08/05/2081	मंगल 7 वर्ष 08/05/2081 08/05/2088	राहु 18 वर्ष 08/05/2088 00/00/0000
शुक्र 06/09/2048	सूर्य 25/08/2065	चंद्र 08/03/2072	मंगल 04/10/2081	राहु 19/01/2091
सूर्य 07/09/2049	चंद्र 24/02/2066	मंगल 07/10/2072	राहु 22/10/2082	गुरु 13/06/2093
चंद्र 08/05/2051	मंगल 02/07/2066	राहु 08/04/2074	गुरु 28/09/2083	शनि 19/04/2096
मंगल 07/07/2052	राहु 27/05/2067	गुरु 08/08/2075	शनि 06/11/2084	बुध 07/11/2098
राहु 08/07/2055	गुरु 14/03/2068	शनि 08/03/2077	बुध 03/11/2085	केतु 31/10/2099
गुरु 08/03/2058	शनि 24/02/2069	बुध 07/08/2078	केतु 01/04/2086	00/00/0000
शनि 08/05/2061	बुध 31/12/2069	केतु 08/03/2079	शुक्र 02/06/2087	00/00/0000
बुध 08/03/2064	केतु 08/05/2070	शुक्र 06/11/2080	सूर्य 07/10/2087	00/00/0000
केतु 08/05/2065	शुक्र 08/05/2071	सूर्य 08/05/2081	चंद्र 08/05/2088	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 6 वर्ष 5 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
31/10/1979	25/11/1979	25/11/1982	20/10/1983	19/04/1985
25/11/1979	25/11/1982	20/10/1983	19/04/1985	08/05/1986
00/00/0000	शुक्र 26/05/1980	सूर्य 11/12/1982	चंद्र 04/12/1983	मंगल 12/05/1985
00/00/0000	सूर्य 20/07/1980	चंद्र 08/01/1983	मंगल 05/01/1984	राहु 08/07/1985
00/00/0000	चंद्र 19/10/1980	मंगल 27/01/1983	राहु 27/03/1984	गुरु 29/08/1985
00/00/0000	मंगल 22/12/1980	राहु 17/03/1983	गुरु 08/06/1984	शनि 28/10/1985
00/00/0000	राहु 04/06/1981	गुरु 30/04/1983	शनि 03/09/1984	बुध 22/12/1985
00/00/0000	गुरु 28/10/1981	शनि 21/06/1983	बुध 20/11/1984	केतु 13/01/1986
00/00/0000	शनि 20/04/1982	बुध 07/08/1983	केतु 22/12/1984	शुक्र 18/03/1986
31/10/1979	बुध 22/09/1982	केतु 26/08/1983	शुक्र 23/03/1985	सूर्य 06/04/1986
बुध 25/11/1979	केतु 25/11/1982	शुक्र 20/10/1983	सूर्य 19/04/1985	चंद्र 08/05/1986
गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
08/05/1986	25/06/1988	07/01/1991	13/04/1993	20/03/1994
25/06/1988	07/01/1991	13/04/1993	20/03/1994	18/11/1996
गुरु 20/08/1986	शनि 19/11/1988	बुध 04/05/1991	केतु 03/05/1993	शुक्र 30/08/1994
शनि 21/12/1986	बुध 30/03/1989	केतु 21/06/1991	शुक्र 29/06/1993	सूर्य 17/10/1994
बुध 11/04/1987	केतु 23/05/1989	शुक्र 06/11/1991	सूर्य 16/07/1993	चंद्र 07/01/1995
केतु 26/05/1987	शुक्र 24/10/1989	सूर्य 17/12/1991	चंद्र 14/08/1993	मंगल 04/03/1995
शुक्र 03/10/1987	सूर्य 09/12/1989	चंद्र 24/02/1992	मंगल 02/09/1993	राहु 28/07/1995
सूर्य 11/11/1987	चंद्र 24/02/1990	मंगल 13/04/1992	राहु 24/10/1993	गुरु 05/12/1995
चंद्र 15/01/1988	मंगल 19/04/1990	राहु 15/08/1992	गुरु 08/12/1993	शनि 08/05/1996
मंगल 29/02/1988	राहु 05/09/1990	गुरु 03/12/1992	शनि 31/01/1994	बुध 22/09/1996
राहु 25/06/1988	गुरु 07/01/1991	शनि 13/04/1993	बुध 20/03/1994	केतु 18/11/1996
गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि
18/11/1996	07/09/1997	07/01/1999	13/12/1999	08/05/2002
07/09/1997	07/01/1999	13/12/1999	08/05/2002	11/05/2005
सूर्य 03/12/1996	चंद्र 17/10/1997	मंगल 26/01/1999	राहु 23/04/2000	शनि 29/10/2002
चंद्र 27/12/1996	मंगल 14/11/1997	राहु 19/03/1999	गुरु 18/08/2000	बुध 03/04/2003
मंगल 13/01/1997	राहु 27/01/1998	गुरु 03/05/1999	शनि 04/01/2001	केतु 06/06/2003
राहु 26/02/1997	गुरु 01/04/1998	शनि 26/06/1999	बुध 08/05/2001	शुक्र 06/12/2003
गुरु 06/04/1997	शनि 18/06/1998	बुध 13/08/1999	केतु 28/06/2001	सूर्य 30/01/2004
शनि 22/05/1997	बुध 26/08/1998	केतु 02/09/1999	शुक्र 21/11/2001	चंद्र 30/04/2004
बुध 03/07/1997	केतु 23/09/1998	शुक्र 29/10/1999	सूर्य 04/01/2002	मंगल 03/07/2004
केतु 20/07/1997	शुक्र 13/12/1998	सूर्य 15/11/1999	चंद्र 18/03/2002	राहु 15/12/2004
शुक्र 07/09/1997	सूर्य 07/01/1999	चंद्र 13/12/1999	मंगल 08/05/2002	गुरु 11/05/2005



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 11/05/2005 19/01/2008	शनि - केतु 19/01/2008 27/02/2009	शनि - शुक्र 27/02/2009 28/04/2012	शनि - सूर्य 28/04/2012 10/04/2013	शनि - चंद्र 10/04/2013 10/11/2014
बुध 27/09/2005 केतु 23/11/2005 शुक्र 06/05/2006 सूर्य 24/06/2006 चंद्र 14/09/2006 मंगल 11/11/2006 राहु 07/04/2007 गुरु 16/08/2007 शनि 19/01/2008	केतु 12/02/2008 शुक्र 19/04/2008 सूर्य 09/05/2008 चंद्र 12/06/2008 मंगल 06/07/2008 राहु 04/09/2008 गुरु 28/10/2008 शनि 31/12/2008 बुध 27/02/2009	शुक्र 08/09/2009 सूर्य 04/11/2009 चंद्र 09/02/2010 मंगल 17/04/2010 राहु 08/10/2010 गुरु 11/03/2011 शनि 10/09/2011 बुध 21/02/2012 केतु 28/04/2012	सूर्य 16/05/2012 चंद्र 14/06/2012 मंगल 04/07/2012 राहु 25/08/2012 गुरु 10/10/2012 शनि 04/12/2012 बुध 22/01/2013 केतु 12/02/2013 शुक्र 10/04/2013	चंद्र 29/05/2013 मंगल 01/07/2013 राहु 26/09/2013 गुरु 12/12/2013 शनि 14/03/2014 बुध 04/06/2014 केतु 07/07/2014 शुक्र 12/10/2014 सूर्य 10/11/2014
शनि - मंगल 10/11/2014 19/12/2015	शनि - राहु 19/12/2015 25/10/2018	शनि - गुरु 25/10/2018 08/05/2021	बुध - बुध 08/05/2021 04/10/2023	बुध - केतु 04/10/2023 01/10/2024
मंगल 03/12/2014 राहु 02/02/2015 गुरु 28/03/2015 शनि 31/05/2015 बुध 27/07/2015 केतु 20/08/2015 शुक्र 27/10/2015 सूर्य 16/11/2015 चंद्र 19/12/2015	राहु 24/05/2016 गुरु 09/10/2016 शनि 23/03/2017 बुध 18/08/2017 केतु 17/10/2017 शुक्र 09/04/2018 सूर्य 31/05/2018 चंद्र 26/08/2018 मंगल 25/10/2018	गुरु 26/02/2019 शनि 22/07/2019 बुध 30/11/2019 केतु 23/01/2020 शुक्र 26/06/2020 सूर्य 11/08/2020 चंद्र 27/10/2020 मंगल 20/12/2020 राहु 08/05/2021	बुध 09/09/2021 केतु 31/10/2021 शुक्र 26/03/2022 सूर्य 09/05/2022 चंद्र 22/07/2022 मंगल 11/09/2022 राहु 21/01/2023 गुरु 18/05/2023 शनि 04/10/2023	केतु 26/10/2023 शुक्र 25/12/2023 सूर्य 12/01/2024 चंद्र 11/02/2024 मंगल 03/03/2024 राहु 27/04/2024 गुरु 14/06/2024 शनि 10/08/2024 बुध 01/10/2024
बुध - शुक्र 01/10/2024 01/08/2027	बुध - सूर्य 01/08/2027 07/06/2028	बुध - चंद्र 07/06/2028 06/11/2029	बुध - मंगल 06/11/2029 04/11/2030	बुध - राहु 04/11/2030 23/05/2033
शुक्र 22/03/2025 सूर्य 13/05/2025 चंद्र 07/08/2025 मंगल 06/10/2025 राहु 11/03/2026 गुरु 27/07/2026 शनि 07/01/2027 बुध 02/06/2027 केतु 01/08/2027	सूर्य 17/08/2027 चंद्र 12/09/2027 मंगल 30/09/2027 राहु 16/11/2027 गुरु 27/12/2027 शनि 14/02/2028 बुध 29/03/2028 केतु 16/04/2028 शुक्र 07/06/2028	चंद्र 20/07/2028 मंगल 19/08/2028 राहु 05/11/2028 गुरु 13/01/2029 शनि 05/04/2029 बुध 17/06/2029 केतु 17/07/2029 शुक्र 12/10/2029 सूर्य 06/11/2029	मंगल 28/11/2029 राहु 21/01/2030 गुरु 10/03/2030 शनि 06/05/2030 बुध 27/06/2030 केतु 18/07/2030 शुक्र 16/09/2030 सूर्य 04/10/2030 चंद्र 04/11/2030	राहु 23/03/2031 गुरु 25/07/2031 शनि 20/12/2031 बुध 30/04/2032 केतु 23/06/2032 शुक्र 25/11/2032 सूर्य 11/01/2033 चंद्र 30/03/2033 मंगल 23/05/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 23/05/2033 29/08/2035	बुध - शनि 29/08/2035 08/05/2038	केतु - केतु 08/05/2038 04/10/2038	केतु - शुक्र 04/10/2038 04/12/2039	केतु - सूर्य 04/12/2039 10/04/2040
गुरु 10/09/2033 शनि 19/01/2034 बुध 17/05/2034 केतु 04/07/2034 शुक्र 19/11/2034 सूर्य 30/12/2034 चंद्र 09/03/2035 मंगल 27/04/2035 राहु 29/08/2035	शनि 01/02/2036 बुध 19/06/2036 केतु 15/08/2036 शुक्र 26/01/2037 सूर्य 16/03/2037 चंद्र 06/06/2037 मंगल 02/08/2037 राहु 28/12/2037 गुरु 08/05/2038	केतु 17/05/2038 शुक्र 11/06/2038 सूर्य 18/06/2038 चंद्र 30/06/2038 मंगल 09/07/2038 राहु 01/08/2038 गुरु 20/08/2038 शनि 13/09/2038 बुध 04/10/2038	शुक्र 14/12/2038 सूर्य 04/01/2039 चंद्र 09/02/2039 मंगल 06/03/2039 राहु 09/05/2039 गुरु 05/07/2039 शनि 10/09/2039 बुध 09/11/2039 केतु 04/12/2039	सूर्य 11/12/2039 चंद्र 21/12/2039 मंगल 29/12/2039 राहु 17/01/2040 गुरु 03/02/2040 शनि 23/02/2040 बुध 12/03/2040 केतु 20/03/2040 शुक्र 10/04/2040
केतु - चंद्र 10/04/2040 09/11/2040	केतु - मंगल 09/11/2040 07/04/2041	केतु - राहु 07/04/2041 26/04/2042	केतु - गुरु 26/04/2042 02/04/2043	केतु - शनि 02/04/2043 11/05/2044
चंद्र 28/04/2040 मंगल 10/05/2040 राहु 11/06/2040 गुरु 10/07/2040 शनि 12/08/2040 बुध 12/09/2040 केतु 24/09/2040 शुक्र 30/10/2040 सूर्य 09/11/2040	मंगल 18/11/2040 राहु 10/12/2040 गुरु 30/12/2040 शनि 23/01/2041 बुध 13/02/2041 केतु 22/02/2041 शुक्र 18/03/2041 सूर्य 26/03/2041 चंद्र 07/04/2041	राहु 04/06/2041 गुरु 25/07/2041 शनि 24/09/2041 बुध 17/11/2041 केतु 09/12/2041 शुक्र 11/02/2042 सूर्य 02/03/2042 चंद्र 03/04/2042 मंगल 26/04/2042	गुरु 10/06/2042 शनि 03/08/2042 बुध 21/09/2042 केतु 10/10/2042 शुक्र 06/12/2042 सूर्य 23/12/2042 चंद्र 21/01/2043 मंगल 10/02/2043 राहु 02/04/2043	शनि 05/06/2043 बुध 01/08/2043 केतु 25/08/2043 शुक्र 31/10/2043 सूर्य 20/11/2043 चंद्र 24/12/2043 मंगल 17/01/2044 राहु 18/03/2044 गुरु 11/05/2044
केतु - बुध 11/05/2044 08/05/2045	शुक्र - शुक्र 08/05/2045 06/09/2048	शुक्र - सूर्य 06/09/2048 07/09/2049	शुक्र - चंद्र 07/09/2049 08/05/2051	शुक्र - मंगल 08/05/2051 07/07/2052
बुध 01/07/2044 केतु 22/07/2044 शुक्र 20/09/2044 सूर्य 08/10/2044 चंद्र 08/11/2044 मंगल 29/11/2044 राहु 22/01/2045 गुरु 11/03/2045 शनि 08/05/2045	शुक्र 27/11/2045 सूर्य 27/01/2046 चंद्र 08/05/2046 मंगल 18/07/2046 राहु 17/01/2047 गुरु 28/06/2047 शनि 07/01/2048 बुध 27/06/2048 केतु 06/09/2048	सूर्य 25/09/2048 चंद्र 25/10/2048 मंगल 15/11/2048 राहु 09/01/2049 गुरु 27/02/2049 शनि 26/04/2049 बुध 16/06/2049 केतु 08/07/2049 शुक्र 07/09/2049	चंद्र 27/10/2049 मंगल 02/12/2049 राहु 03/03/2050 गुरु 23/05/2050 शनि 28/08/2050 बुध 22/11/2050 केतु 27/12/2050 शुक्र 08/04/2051 सूर्य 08/05/2051	मंगल 02/06/2051 राहु 05/08/2051 गुरु 01/10/2051 शनि 07/12/2051 बुध 06/02/2052 केतु 02/03/2052 शुक्र 12/05/2052 सूर्य 02/06/2052 चंद्र 07/07/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु 07/07/2052 08/07/2055	शुक्र - गुरु 08/07/2055 08/03/2058	शुक्र - शनि 08/03/2058 08/05/2061	शुक्र - बुध 08/05/2061 08/03/2064	शुक्र - केतु 08/03/2064 08/05/2065
राहु 19/12/2052 गुरु 14/05/2053 शनि 03/11/2053 बुध 08/04/2054 केतु 10/06/2054 शुक्र 10/12/2054 सूर्य 03/02/2055 चंद्र 05/05/2055 मंगल 08/07/2055	गुरु 15/11/2055 शनि 17/04/2056 बुध 02/09/2056 केतु 29/10/2056 शुक्र 09/04/2057 सूर्य 28/05/2057 चंद्र 17/08/2057 मंगल 13/10/2057 राहु 08/03/2058	शनि 07/09/2058 बुध 18/02/2059 केतु 27/04/2059 शुक्र 05/11/2059 सूर्य 02/01/2060 चंद्र 08/04/2060 मंगल 14/06/2060 राहु 05/12/2060 गुरु 08/05/2061	बुध 01/10/2061 केतु 01/12/2061 शुक्र 22/05/2062 सूर्य 13/07/2062 चंद्र 07/10/2062 मंगल 07/12/2062 राहु 11/05/2063 गुरु 26/09/2063 शनि 08/03/2064	केतु 01/04/2064 शुक्र 12/06/2064 सूर्य 03/07/2064 चंद्र 07/08/2064 मंगल 01/09/2064 राहु 04/11/2064 गुरु 31/12/2064 शनि 08/03/2065 बुध 08/05/2065
सूर्य - सूर्य 08/05/2065 25/08/2065	सूर्य - चंद्र 25/08/2065 24/02/2066	सूर्य - मंगल 24/02/2066 02/07/2066	सूर्य - राहु 02/07/2066 27/05/2067	सूर्य - गुरु 27/05/2067 14/03/2068
सूर्य 13/05/2065 चंद्र 22/05/2065 मंगल 29/05/2065 राहु 14/06/2065 गुरु 29/06/2065 शनि 16/07/2065 बुध 01/08/2065 केतु 07/08/2065 शुक्र 25/08/2065	चंद्र 10/09/2065 मंगल 20/09/2065 राहु 18/10/2065 गुरु 11/11/2065 शनि 10/12/2065 बुध 05/01/2066 केतु 15/01/2066 शुक्र 15/02/2066 सूर्य 24/02/2066	मंगल 03/03/2066 राहु 23/03/2066 गुरु 09/04/2066 शनि 29/04/2066 बुध 17/05/2066 केतु 24/05/2066 शुक्र 15/06/2066 सूर्य 21/06/2066 चंद्र 02/07/2066	राहु 20/08/2066 गुरु 03/10/2066 शनि 24/11/2066 बुध 10/01/2067 केतु 29/01/2067 शुक्र 25/03/2067 सूर्य 10/04/2067 चंद्र 07/05/2067 मंगल 27/05/2067	गुरु 04/07/2067 शनि 20/08/2067 बुध 30/09/2067 केतु 17/10/2067 शुक्र 05/12/2067 सूर्य 19/12/2067 चंद्र 13/01/2068 मंगल 30/01/2068 राहु 14/03/2068
सूर्य - शनि 14/03/2068 24/02/2069	सूर्य - बुध 24/02/2069 31/12/2069	सूर्य - केतु 31/12/2069 08/05/2070	सूर्य - शुक्र 08/05/2070 08/05/2071	चंद्र - चंद्र 08/05/2071 08/03/2072
शनि 08/05/2068 बुध 26/06/2068 केतु 16/07/2068 शुक्र 12/09/2068 सूर्य 29/09/2068 चंद्र 28/10/2068 मंगल 17/11/2068 राहु 08/01/2069 गुरु 24/02/2069	बुध 09/04/2069 केतु 27/04/2069 शुक्र 18/06/2069 सूर्य 03/07/2069 चंद्र 29/07/2069 मंगल 16/08/2069 राहु 02/10/2069 गुरु 12/11/2069 शनि 31/12/2069	केतु 08/01/2070 शुक्र 29/01/2070 सूर्य 04/02/2070 चंद्र 15/02/2070 मंगल 22/02/2070 राहु 14/03/2070 गुरु 31/03/2070 शनि 20/04/2070 बुध 08/05/2070	शुक्र 08/07/2070 सूर्य 26/07/2070 चंद्र 26/08/2070 मंगल 16/09/2070 राहु 10/11/2070 गुरु 28/12/2070 शनि 24/02/2071 बुध 17/04/2071 केतु 08/05/2071	चंद्र 03/06/2071 मंगल 20/06/2071 राहु 05/08/2071 गुरु 15/09/2071 शनि 02/11/2071 बुध 15/12/2071 केतु 02/01/2072 शुक्र 21/02/2072 सूर्य 08/03/2072



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल 08/03/2072 07/10/2072	चंद्र - राहु 07/10/2072 08/04/2074	चंद्र - गुरु 08/04/2074 08/08/2075	चंद्र - शनि 08/08/2075 08/03/2077	चंद्र - बुध 08/03/2077 07/08/2078
मंगल 20/03/2072	राहु 28/12/2072	गुरु 11/06/2074	शनि 07/11/2075	बुध 20/05/2077
राहु 21/04/2072	गुरु 11/03/2073	शनि 28/08/2074	बुध 28/01/2076	केतु 19/06/2077
गुरु 19/05/2072	शनि 06/06/2073	बुध 05/11/2074	केतु 02/03/2076	शुक्र 14/09/2077
शनि 22/06/2072	बुध 22/08/2073	केतु 03/12/2074	शुक्र 06/06/2076	सूर्य 09/10/2077
बुध 22/07/2072	केतु 23/09/2073	शुक्र 22/02/2075	सूर्य 05/07/2076	चंद्र 22/11/2077
केतु 04/08/2072	शुक्र 24/12/2073	सूर्य 19/03/2075	चंद्र 22/08/2076	मंगल 22/12/2077
शुक्र 08/09/2072	सूर्य 20/01/2074	चंद्र 28/04/2075	मंगल 25/09/2076	राहु 09/03/2078
सूर्य 19/09/2072	चंद्र 07/03/2074	मंगल 27/05/2075	राहु 21/12/2076	गुरु 17/05/2078
चंद्र 07/10/2072	मंगल 08/04/2074	राहु 08/08/2075	गुरु 08/03/2077	शनि 07/08/2078
चंद्र - केतु 07/08/2078 08/03/2079	चंद्र - शुक्र 08/03/2079 06/11/2080	चंद्र - सूर्य 06/11/2080 08/05/2081	मंगल - मंगल 08/05/2081 04/10/2081	मंगल - राहु 04/10/2081 22/10/2082
केतु 20/08/2078	शुक्र 18/06/2079	सूर्य 15/11/2080	मंगल 16/05/2081	राहु 30/11/2081
शुक्र 24/09/2078	सूर्य 18/07/2079	चंद्र 30/11/2080	राहु 08/06/2081	गुरु 21/01/2082
सूर्य 05/10/2078	चंद्र 07/09/2079	मंगल 11/12/2080	गुरु 28/06/2081	शनि 22/03/2082
चंद्र 23/10/2078	मंगल 13/10/2079	राहु 08/01/2081	शनि 21/07/2081	बुध 16/05/2082
मंगल 04/11/2078	राहु 12/01/2080	गुरु 01/02/2081	बुध 11/08/2081	केतु 07/06/2082
राहु 06/12/2078	गुरु 02/04/2080	शनि 02/03/2081	केतु 20/08/2081	शुक्र 10/08/2082
गुरु 03/01/2079	शनि 07/07/2080	बुध 28/03/2081	शुक्र 14/09/2081	सूर्य 29/08/2082
शनि 06/02/2079	बुध 02/10/2080	केतु 07/04/2081	सूर्य 21/09/2081	चंद्र 30/09/2082
बुध 08/03/2079	केतु 06/11/2080	शुक्र 08/05/2081	चंद्र 04/10/2081	मंगल 22/10/2082
मंगल - गुरु 22/10/2082 28/09/2083	मंगल - शनि 28/09/2083 06/11/2084	मंगल - बुध 06/11/2084 03/11/2085	मंगल - केतु 03/11/2085 01/04/2086	मंगल - शुक्र 01/04/2086 02/06/2087
गुरु 07/12/2082	शनि 01/12/2083	बुध 27/12/2084	केतु 12/11/2085	शुक्र 11/06/2086
शनि 30/01/2083	बुध 28/01/2084	केतु 18/01/2085	शुक्र 07/12/2085	सूर्य 03/07/2086
बुध 19/03/2083	केतु 20/02/2084	शुक्र 19/03/2085	सूर्य 14/12/2085	चंद्र 07/08/2086
केतु 08/04/2083	शुक्र 28/04/2084	सूर्य 06/04/2085	चंद्र 27/12/2085	मंगल 01/09/2086
शुक्र 04/06/2083	सूर्य 18/05/2084	चंद्र 06/05/2085	मंगल 04/01/2086	राहु 04/11/2086
सूर्य 21/06/2083	चंद्र 21/06/2084	मंगल 27/05/2085	राहु 27/01/2086	गुरु 31/12/2086
चंद्र 19/07/2083	मंगल 14/07/2084	राहु 21/07/2085	गुरु 16/02/2086	शनि 08/03/2087
मंगल 08/08/2083	राहु 13/09/2084	गुरु 07/09/2085	शनि 11/03/2086	बुध 08/05/2087
राहु 28/09/2083	गुरु 06/11/2084	शनि 03/11/2085	बुध 01/04/2086	केतु 02/06/2087

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - शुक्र - राहु 06/10/2025 22:20 11/03/2026 03:53	बुध - शुक्र - गुरु 11/03/2026 03:53 27/07/2026 03:29	बुध - शुक्र - शनि 27/07/2026 03:29 07/01/2027 00:01	बुध - शुक्र - बुध 07/01/2027 00:01 02/06/2027 14:35
राहु 30/10/2025 05:10 गुरु 19/11/2025 21:55 शनि 14/12/2025 11:47 बुध 05/01/2026 11:35 केतु 14/01/2026 12:54 शुक्र 09/02/2026 09:50 सूर्य 17/02/2026 04:06 चंद्र 02/03/2026 02:34 मंगल 11/03/2026 03:53	गुरु 29/03/2026 13:26 शनि 20/04/2026 09:46 बुध 09/05/2026 22:55 केतु 18/05/2026 00:06 शुक्र 10/06/2026 00:02 सूर्य 16/06/2026 21:36 चंद्र 28/06/2026 09:34 मंगल 06/07/2026 10:45 राहु 27/07/2026 03:29	शनि 22/08/2026 02:08 बुध 14/09/2026 07:15 केतु 23/09/2026 20:39 शुक्र 21/10/2026 04:04 सूर्य 29/10/2026 08:42 चंद्र 12/11/2026 00:24 मंगल 21/11/2026 13:48 राहु 16/12/2026 03:41 गुरु 07/01/2027 00:01	बुध 27/01/2027 18:29 केतु 05/02/2027 07:44 शुक्र 01/03/2027 18:10 सूर्य 09/03/2027 02:05 चंद्र 21/03/2027 07:18 मंगल 29/03/2027 20:33 राहु 20/04/2027 20:20 गुरु 10/05/2027 09:29 शनि 02/06/2027 14:35
बुध - शुक्र - केतु 02/06/2027 14:35 01/08/2027 23:25	बुध - सूर्य - सूर्य 01/08/2027 23:25 17/08/2027 11:58	बुध - सूर्य - चंद्र 17/08/2027 11:58 12/09/2027 08:54	बुध - सूर्य - मंगल 12/09/2027 08:54 30/09/2027 11:33
केतु 06/06/2027 03:06 शुक्र 16/06/2027 04:35 सूर्य 19/06/2027 05:01 चंद्र 24/06/2027 05:45 मंगल 27/06/2027 18:16 राहु 06/07/2027 19:35 गुरु 14/07/2027 20:46 शनि 24/07/2027 10:10 बुध 01/08/2027 23:25	सूर्य 02/08/2027 18:03 चंद्र 04/08/2027 01:05 मंगल 04/08/2027 22:49 राहु 07/08/2027 06:42 गुरु 09/08/2027 08:23 शनि 11/08/2027 19:22 बुध 14/08/2027 00:09 केतु 14/08/2027 21:53 शुक्र 17/08/2027 11:58	चंद्र 19/08/2027 15:43 मंगल 21/08/2027 03:56 राहु 25/08/2027 01:04 गुरु 28/08/2027 11:52 शनि 01/09/2027 14:11 बुध 05/09/2027 06:08 केतु 06/09/2027 18:22 शुक्र 11/09/2027 01:51 सूर्य 12/09/2027 08:54	मंगल 13/09/2027 10:15 राहु 16/09/2027 03:27 गुरु 18/09/2027 13:24 शनि 21/09/2027 10:13 बुध 23/09/2027 23:48 केतु 25/09/2027 01:09 शुक्र 28/09/2027 01:35 सूर्य 28/09/2027 23:19 चंद्र 30/09/2027 11:33
बुध - सूर्य - राहु 30/09/2027 11:33 16/11/2027 01:12	बुध - सूर्य - गुरु 16/11/2027 01:12 27/12/2027 10:41	बुध - सूर्य - शनि 27/12/2027 10:41 14/02/2028 14:27	बुध - सूर्य - बुध 14/02/2028 14:27 29/03/2028 14:01
राहु 07/10/2027 11:12 गुरु 13/10/2027 16:13 शनि 21/10/2027 01:11 बुध 27/10/2027 15:31 केतु 30/10/2027 08:43 शुक्र 07/11/2027 02:59 सूर्य 09/11/2027 10:52 चंद्र 13/11/2027 08:01 मंगल 16/11/2027 01:12	गुरु 21/11/2027 13:40 शनि 28/11/2027 02:58 बुध 03/12/2027 23:43 केतु 06/12/2027 09:40 शुक्र 13/12/2027 07:15 सूर्य 15/12/2027 08:55 चंद्र 18/12/2027 19:43 मंगल 21/12/2027 05:40 राहु 27/12/2027 10:41	शनि 04/01/2028 05:29 बुध 11/01/2028 04:37 केतु 14/01/2028 01:26 शुक्र 22/01/2028 06:04 सूर्य 24/01/2028 17:03 चंद्र 28/01/2028 19:22 मंगल 31/01/2028 16:11 राहु 08/02/2028 01:09 गुरु 14/02/2028 14:27	बुध 20/02/2028 19:59 केतु 23/02/2028 09:34 शुक्र 01/03/2028 17:29 सूर्य 03/03/2028 22:16 चंद्र 07/03/2028 14:14 मंगल 10/03/2028 03:48 राहु 16/03/2028 18:09 गुरु 22/03/2028 14:53 शनि 29/03/2028 14:01

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - सूर्य - केतु 29/03/2028 14:01 16/04/2028 16:40	बुध - सूर्य - शुक्र 16/04/2028 16:40 07/06/2028 10:31	बुध - चंद्र - चंद्र 07/06/2028 10:31 20/07/2028 13:23	बुध - चंद्र - मंगल 20/07/2028 13:23 19/08/2028 17:48
केतु 30/03/2028 15:22 शुक्र 02/04/2028 15:49 सूर्य 03/04/2028 13:33 चंद्र 05/04/2028 01:46 मंगल 06/04/2028 03:07 राहु 08/04/2028 20:19 गुरु 11/04/2028 06:16 शनि 14/04/2028 03:05 बुध 16/04/2028 16:40	शुक्र 25/04/2028 07:38 सूर्य 27/04/2028 21:44 चंद्र 02/05/2028 05:13 मंगल 05/05/2028 05:40 राहु 12/05/2028 23:56 गुरु 19/05/2028 21:31 शनि 28/05/2028 02:09 बुध 04/06/2028 10:04 केतु 07/06/2028 10:31	चंद्र 11/06/2028 00:45 मंगल 13/06/2028 13:07 राहु 20/06/2028 00:21 गुरु 25/06/2028 18:20 शनि 02/07/2028 14:12 बुध 08/07/2028 16:48 केतु 11/07/2028 05:10 शुक्र 18/07/2028 09:39 सूर्य 20/07/2028 13:23	मंगल 22/07/2028 07:39 राहु 26/07/2028 20:19 गुरु 30/07/2028 20:54 शनि 04/08/2028 15:36 बुध 08/08/2028 22:13 केतु 10/08/2028 16:29 शुक्र 15/08/2028 17:13 सूर्य 17/08/2028 05:26 चंद्र 19/08/2028 17:48
बुध - चंद्र - राहु 19/08/2028 17:48 05/11/2028 08:35	बुध - चंद्र - गुरु 05/11/2028 08:35 13/01/2029 08:23	बुध - चंद्र - शनि 13/01/2029 08:23 05/04/2029 06:38	बुध - चंद्र - बुध 05/04/2029 06:38 17/06/2029 13:56
राहु 31/08/2028 09:13 गुरु 10/09/2028 17:35 शनि 23/09/2028 00:32 बुध 04/10/2028 00:25 केतु 08/10/2028 13:05 शुक्र 21/10/2028 11:33 सूर्य 25/10/2028 08:41 चंद्र 31/10/2028 19:55 मंगल 05/11/2028 08:35	गुरु 14/11/2028 13:21 शनि 25/11/2028 11:31 बुध 05/12/2028 06:05 केतु 09/12/2028 06:41 शुक्र 20/12/2028 18:39 सूर्य 24/12/2028 05:26 चंद्र 29/12/2028 23:25 मंगल 03/01/2029 00:00 राहु 13/01/2029 08:23	शनि 26/01/2029 07:42 बुध 06/02/2029 22:15 केतु 11/02/2029 16:57 शुक्र 25/02/2029 08:40 सूर्य 01/03/2029 10:59 चंद्र 08/03/2029 06:50 मंगल 13/03/2029 01:32 राहु 25/03/2029 08:28 गुरु 05/04/2029 06:38	बुध 15/04/2029 15:52 केतु 19/04/2029 22:30 शुक्र 02/05/2029 03:43 सूर्य 05/05/2029 19:41 चंद्र 11/05/2029 22:17 मंगल 16/05/2029 04:55 राहु 27/05/2029 04:48 गुरु 05/06/2029 23:22 शनि 17/06/2029 13:56
बुध - चंद्र - केतु 17/06/2029 13:56 17/07/2029 18:20	बुध - चंद्र - शुक्र 17/07/2029 18:20 12/10/2029 00:05	बुध - चंद्र - सूर्य 12/10/2029 00:05 06/11/2029 21:01	बुध - मंगल - मंगल 06/11/2029 21:01 28/11/2029 00:06
केतु 19/06/2029 08:11 शुक्र 24/06/2029 08:55 सूर्य 25/06/2029 21:08 चंद्र 28/06/2029 09:31 मंगल 30/06/2029 03:46 राहु 04/07/2029 16:26 गुरु 08/07/2029 17:01 शनि 13/07/2029 11:43 बुध 17/07/2029 18:20	शुक्र 01/08/2029 03:18 सूर्य 05/08/2029 10:47 चंद्र 12/08/2029 15:16 मंगल 17/08/2029 16:00 राहु 30/08/2029 14:28 गुरु 11/09/2029 02:26 शनि 24/09/2029 18:08 बुध 06/10/2029 23:21 केतु 12/10/2029 00:05	सूर्य 13/10/2029 07:08 चंद्र 15/10/2029 10:53 मंगल 16/10/2029 23:06 राहु 20/10/2029 20:14 गुरु 24/10/2029 07:02 शनि 28/10/2029 09:21 बुध 01/11/2029 01:18 केतु 02/11/2029 13:32 शुक्र 06/11/2029 21:01	मंगल 08/11/2029 02:36 राहु 11/11/2029 06:40 गुरु 14/11/2029 02:16 शनि 17/11/2029 10:34 बुध 20/11/2029 10:24 केतु 21/11/2029 15:59 शुक्र 25/11/2029 04:30 सूर्य 26/11/2029 05:51 चंद्र 28/11/2029 00:06

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - मंगल - राहु 28/11/2029 00:06 21/01/2030 08:03	बुध - मंगल - गुरु 21/01/2030 08:03 10/03/2030 15:06	बुध - मंगल - शनि 10/03/2030 15:06 06/05/2030 23:29	बुध - मंगल - बुध 06/05/2030 23:29 27/06/2030 06:59
राहु 06/12/2029 03:42 गुरु 13/12/2029 09:33 शनि 22/12/2029 00:01 बुध 29/12/2029 16:44 केतु 01/01/2030 20:48 शुक्र 10/01/2030 22:07 सूर्य 13/01/2030 15:19 चंद्र 18/01/2030 03:59 मंगल 21/01/2030 08:03	गुरु 27/01/2030 18:35 शनि 04/02/2030 10:06 बुध 11/02/2030 06:18 केतु 14/02/2030 01:55 शुक्र 22/02/2030 03:06 सूर्य 24/02/2030 13:03 चंद्र 28/02/2030 13:38 मंगल 03/03/2030 09:15 राहु 10/03/2030 15:06	शनि 19/03/2030 17:02 बुध 27/03/2030 20:01 केतु 31/03/2030 04:19 शुक्र 09/04/2030 17:42 सूर्य 12/04/2030 14:32 चंद्र 17/04/2030 09:14 मंगल 20/04/2030 17:31 राहु 29/04/2030 07:58 गुरु 06/05/2030 23:29	बुध 14/05/2030 05:57 केतु 17/05/2030 05:47 शुक्र 25/05/2030 19:02 सूर्य 28/05/2030 08:37 चंद्र 01/06/2030 15:14 मंगल 04/06/2030 15:05 राहु 12/06/2030 07:48 गुरु 19/06/2030 04:00 शनि 27/06/2030 06:59
बुध - मंगल - केतु 27/06/2030 06:59 18/07/2030 10:05	बुध - मंगल - शुक्र 18/07/2030 10:05 16/09/2030 18:54	बुध - मंगल - सूर्य 16/09/2030 18:54 04/10/2030 21:33	बुध - मंगल - चंद्र 04/10/2030 21:33 04/11/2030 01:58
केतु 28/06/2030 12:34 शुक्र 02/07/2030 01:05 सूर्य 03/07/2030 02:26 चंद्र 04/07/2030 20:42 मंगल 06/07/2030 02:17 राहु 09/07/2030 06:21 गुरु 12/07/2030 01:57 शनि 15/07/2030 10:15 बुध 18/07/2030 10:05	शुक्र 28/07/2030 11:33 सूर्य 31/07/2030 12:00 चंद्र 05/08/2030 12:44 मंगल 09/08/2030 01:15 राहु 18/08/2030 02:34 गुरु 26/08/2030 03:45 शनि 04/09/2030 17:08 बुध 13/09/2030 06:23 केतु 16/09/2030 18:54	सूर्य 17/09/2030 16:38 चंद्र 19/09/2030 04:52 मंगल 20/09/2030 06:13 राहु 22/09/2030 23:25 गुरु 25/09/2030 09:22 शनि 28/09/2030 06:11 बुध 30/09/2030 19:45 केतु 01/10/2030 21:07 शुक्र 04/10/2030 21:33	चंद्र 07/10/2030 09:55 मंगल 09/10/2030 04:11 राहु 13/10/2030 16:50 गुरु 17/10/2030 17:26 शनि 22/10/2030 12:08 बुध 26/10/2030 18:45 केतु 28/10/2030 13:01 शुक्र 02/11/2030 13:45 सूर्य 04/11/2030 01:58
बुध - राहु - राहु 04/11/2030 01:58 23/03/2031 18:58	बुध - राहु - गुरु 23/03/2031 18:58 25/07/2031 23:24	बुध - राहु - शनि 25/07/2031 23:24 20/12/2031 10:40	बुध - राहु - बुध 20/12/2031 10:40 30/04/2032 09:23
राहु 25/11/2030 00:55 गुरु 13/12/2030 15:59 शनि 04/01/2031 18:52 बुध 24/01/2031 13:53 केतु 01/02/2031 17:28 शुक्र 25/02/2031 00:18 सूर्य 03/03/2031 23:57 चंद्र 15/03/2031 15:22 मंगल 23/03/2031 18:58	गुरु 09/04/2031 08:21 शनि 29/04/2031 00:15 बुध 16/05/2031 14:29 केतु 23/05/2031 20:21 शुक्र 13/06/2031 13:05 सूर्य 19/06/2031 18:06 चंद्र 30/06/2031 02:29 मंगल 07/07/2031 08:20 राहु 25/07/2031 23:24	शनि 18/08/2031 07:47 बुध 08/09/2031 05:11 केतु 16/09/2031 19:38 शुक्र 11/10/2031 09:31 सूर्य 18/10/2031 18:29 चंद्र 31/10/2031 01:25 मंगल 08/11/2031 15:53 राहु 30/11/2031 18:46 गुरु 20/12/2031 10:40	बुध 08/01/2032 03:17 केतु 15/01/2032 20:01 शुक्र 06/02/2032 19:48 सूर्य 13/02/2032 10:08 चंद्र 24/02/2032 10:02 मंगल 03/03/2032 02:45 राहु 22/03/2032 21:46 गुरु 09/04/2032 12:00 शनि 30/04/2032 09:23

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - राहु - केतु 30/04/2032 09:23 23/06/2032 17:20	बुध - राहु - शुक्र 23/06/2032 17:20 25/11/2032 22:53	बुध - राहु - सूर्य 25/11/2032 22:53 11/01/2033 12:33	बुध - राहु - चंद्र 11/01/2033 12:33 30/03/2033 03:19
केतु 03/05/2032 13:27 शुक्र 12/05/2032 14:47 सूर्य 15/05/2032 07:58 चंद्र 19/05/2032 20:38 मंगल 23/05/2032 00:42 राहु 31/05/2032 04:17 गुरु 07/06/2032 10:09 शनि 16/06/2032 00:36 बुध 23/06/2032 17:20	शुक्र 19/07/2032 14:15 सूर्य 27/07/2032 08:32 चंद्र 09/08/2032 07:00 मंगल 18/08/2032 08:19 राहु 10/09/2032 15:09 गुरु 01/10/2032 07:54 शनि 25/10/2032 21:46 बुध 16/11/2032 21:34 केतु 25/11/2032 22:53	सूर्य 28/11/2032 06:46 चंद्र 02/12/2032 03:54 मंगल 04/12/2032 21:06 राहु 11/12/2032 20:45 गुरु 18/12/2032 01:46 शनि 25/12/2032 10:44 बुध 01/01/2033 01:04 केतु 03/01/2033 18:16 शुक्र 11/01/2033 12:33	चंद्र 17/01/2033 23:47 मंगल 22/01/2033 12:26 राहु 03/02/2033 03:51 गुरु 13/02/2033 12:14 शनि 25/02/2033 19:10 बुध 08/03/2033 19:04 केतु 13/03/2033 07:43 शुक्र 26/03/2033 06:11 सूर्य 30/03/2033 03:19
बुध - राहु - मंगल 30/03/2033 03:19 23/05/2033 11:16	बुध - गुरु - गुरु 23/05/2033 11:16 10/09/2033 20:33	बुध - गुरु - शनि 10/09/2033 20:33 19/01/2034 22:34	बुध - गुरु - बुध 19/01/2034 22:34 17/05/2034 05:26
मंगल 02/04/2033 07:23 राहु 10/04/2033 10:59 गुरु 17/04/2033 16:50 शनि 26/04/2033 07:18 बुध 04/05/2033 00:01 केतु 07/05/2033 04:05 शुक्र 16/05/2033 05:24 सूर्य 18/05/2033 22:36 चंद्र 23/05/2033 11:16	गुरु 07/06/2033 04:30 शनि 24/06/2033 15:58 बुध 10/07/2033 07:17 केतु 16/07/2033 17:50 शुक्र 04/08/2033 03:22 सूर्य 09/08/2033 15:50 चंद्र 18/08/2033 20:37 मंगल 25/08/2033 07:09 राहु 10/09/2033 20:33	शनि 01/10/2033 14:40 बुध 20/10/2033 04:21 केतु 27/10/2033 19:52 शुक्र 18/11/2033 16:12 सूर्य 25/11/2033 05:30 चंद्र 06/12/2033 03:41 मंगल 13/12/2033 19:12 राहु 02/01/2034 11:06 गुरु 19/01/2034 22:34	बुध 05/02/2034 13:20 केतु 12/02/2034 09:32 शुक्र 03/03/2034 22:41 सूर्य 09/03/2034 19:25 चंद्र 19/03/2034 14:00 मंगल 26/03/2034 10:12 राहु 13/04/2034 00:25 गुरु 28/04/2034 15:44 शनि 17/05/2034 05:26
बुध - गुरु - केतु 17/05/2034 05:26 04/07/2034 12:29	बुध - गुरु - शुक्र 04/07/2034 12:29 19/11/2034 12:05	बुध - गुरु - सूर्य 19/11/2034 12:05 30/12/2034 21:34	बुध - गुरु - चंद्र 30/12/2034 21:34 09/03/2035 21:22
केतु 20/05/2034 01:02 शुक्र 28/05/2034 02:13 सूर्य 30/05/2034 12:10 चंद्र 03/06/2034 12:45 मंगल 06/06/2034 08:22 राहु 13/06/2034 14:14 गुरु 20/06/2034 00:46 शनि 27/06/2034 16:17 बुध 04/07/2034 12:29	शुक्र 27/07/2034 12:25 सूर्य 03/08/2034 10:00 चंद्र 14/08/2034 21:58 मंगल 22/08/2034 23:09 राहु 12/09/2034 15:53 गुरु 01/10/2034 01:26 शनि 22/10/2034 21:46 बुध 11/11/2034 10:55 केतु 19/11/2034 12:05	सूर्य 21/11/2034 13:46 चंद्र 25/11/2034 00:33 मंगल 27/11/2034 10:30 राहु 03/12/2034 15:31 गुरु 09/12/2034 03:59 शनि 15/12/2034 17:17 बुध 21/12/2034 14:02 केतु 23/12/2034 23:59 शुक्र 30/12/2034 21:34	चंद्र 05/01/2035 15:33 मंगल 09/01/2035 16:08 राहु 20/01/2035 00:30 गुरु 29/01/2035 05:17 शनि 09/02/2035 03:27 बुध 18/02/2035 22:01 केतु 22/02/2035 22:37 शुक्र 06/03/2035 10:35 सूर्य 09/03/2035 21:22

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - शुक्र - राहु - केतु		बुध - शुक्र - राहु - शुक्र		बुध - शुक्र - राहु - सूर्य		बुध - शुक्र - राहु - चंद्र	
05/01/2026 11:35		14/01/2026 12:54		09/02/2026 09:50		17/02/2026 04:06	
14/01/2026 12:54		09/02/2026 09:50		17/02/2026 04:06		02/03/2026 02:34	
केतु	06/01/2026 00:15	शुक्र	18/01/2026 20:23	सूर्य	09/02/2026 19:08	चंद्र	18/02/2026 05:59
शुक्र	07/01/2026 12:29	सूर्य	20/01/2026 03:26	चंद्र	10/02/2026 10:40	मंगल	19/02/2026 00:05
सूर्य	07/01/2026 23:21	चंद्र	22/01/2026 07:11	मंगल	10/02/2026 21:32	राहु	20/02/2026 22:39
चंद्र	08/01/2026 17:27	मंगल	23/01/2026 19:24	राहु	12/02/2026 01:28	गुरु	22/02/2026 16:03
मंगल	09/01/2026 06:08	राहु	27/01/2026 16:32	गुरु	13/02/2026 02:19	शनि	24/02/2026 17:12
राहु	10/01/2026 14:44	गुरु	31/01/2026 03:20	शनि	14/02/2026 07:48	बुध	26/02/2026 13:11
गुरु	11/01/2026 19:42	शनि	04/02/2026 05:38	बुध	15/02/2026 10:12	केतु	27/02/2026 07:18
शनि	13/01/2026 06:07	बुध	07/02/2026 21:36	केतु	15/02/2026 21:03	शुक्र	01/03/2026 11:03
बुध	14/01/2026 12:54	केतु	09/02/2026 09:50	शुक्र	17/02/2026 04:06	सूर्य	02/03/2026 02:34
बुध - शुक्र - राहु - मंगल		बुध - शुक्र - गुरु - गुरु		बुध - शुक्र - गुरु - शनि		बुध - शुक्र - गुरु - बुध	
02/03/2026 02:34		11/03/2026 03:53		29/03/2026 13:26		20/04/2026 09:46	
11/03/2026 03:53		29/03/2026 13:26		20/04/2026 09:46		09/05/2026 22:55	
मंगल	02/03/2026 15:15	गुरु	13/03/2026 14:46	शनि	02/04/2026 00:27	बुध	23/04/2026 04:14
राहु	03/03/2026 23:51	शनि	16/03/2026 12:40	बुध	05/04/2026 02:44	केतु	24/04/2026 07:36
गुरु	05/03/2026 04:49	बुध	19/03/2026 03:14	केतु	06/04/2026 09:19	शुक्र	27/04/2026 13:48
शनि	06/03/2026 15:14	केतु	20/03/2026 04:59	शुक्र	10/04/2026 00:43	सूर्य	28/04/2026 13:15
बुध	07/03/2026 22:01	शुक्र	23/03/2026 06:35	सूर्य	11/04/2026 02:56	चंद्र	30/04/2026 04:21
केतु	08/03/2026 10:42	सूर्य	24/03/2026 04:39	चंद्र	12/04/2026 22:38	मंगल	01/05/2026 07:43
शुक्र	09/03/2026 22:55	चंद्र	25/03/2026 17:27	मंगल	14/04/2026 05:13	राहु	04/05/2026 06:05
सूर्य	10/03/2026 09:47	मंगल	26/03/2026 19:12	राहु	17/04/2026 11:52	गुरु	06/05/2026 20:38
चंद्र	11/03/2026 03:53	राहु	29/03/2026 13:26	गुरु	20/04/2026 09:46	शनि	09/05/2026 22:55
बुध - शुक्र - गुरु - केतु		बुध - शुक्र - गुरु - शुक्र		बुध - शुक्र - गुरु - सूर्य		बुध - शुक्र - गुरु - चंद्र	
09/05/2026 22:55		18/05/2026 00:06		10/06/2026 00:02		16/06/2026 21:36	
18/05/2026 00:06		10/06/2026 00:02		16/06/2026 21:36		28/06/2026 09:34	
केतु	10/05/2026 10:11	शुक्र	21/05/2026 20:05	सूर्य	10/06/2026 08:18	चंद्र	17/06/2026 20:36
शुक्र	11/05/2026 18:23	सूर्य	22/05/2026 23:41	चंद्र	10/06/2026 22:06	मंगल	18/06/2026 12:42
सूर्य	12/05/2026 04:02	चंद्र	24/05/2026 21:40	मंगल	11/06/2026 07:46	राहु	20/06/2026 06:06
चंद्र	12/05/2026 20:08	मंगल	26/05/2026 05:52	राहु	12/06/2026 08:36	गुरु	21/06/2026 18:54
मंगल	13/05/2026 07:24	राहु	29/05/2026 16:40	गुरु	13/06/2026 06:41	शनि	23/06/2026 14:35
राहु	14/05/2026 12:23	गुरु	01/06/2026 18:15	शनि	14/06/2026 08:54	बुध	25/06/2026 05:41
गुरु	15/05/2026 14:08	शनि	05/06/2026 09:38	बुध	15/06/2026 08:21	केतु	25/06/2026 21:47
शनि	16/05/2026 20:44	बुध	08/06/2026 15:50	केतु	15/06/2026 18:01	शुक्र	27/06/2026 19:47
बुध	18/05/2026 00:06	केतु	10/06/2026 00:02	शुक्र	16/06/2026 21:36	सूर्य	28/06/2026 09:34



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - शुक्र - गुरु - मंगल		बुध - शुक्र - गुरु - राहु		बुध - शुक्र - शनि - शनि		बुध - शुक्र - शनि - बुध	
28/06/2026 09:34		06/07/2026 10:45		27/07/2026 03:29		22/08/2026 02:08	
06/07/2026 10:45		27/07/2026 03:29		22/08/2026 02:08		14/09/2026 07:15	
मंगल	28/06/2026 20:51	राहु	09/07/2026 13:16	शनि	31/07/2026 06:05	बुध	25/08/2026 09:04
राहु	30/06/2026 01:49	गुरु	12/07/2026 07:30	बुध	03/08/2026 22:17	केतु	26/08/2026 17:34
गुरु	01/07/2026 03:35	शनि	15/07/2026 14:09	केतु	05/08/2026 10:36	शुक्र	30/08/2026 14:25
शनि	02/07/2026 10:10	बुध	18/07/2026 12:31	शुक्र	09/08/2026 18:23	सूर्य	31/08/2026 18:16
बुध	03/07/2026 13:32	केतु	19/07/2026 17:30	सूर्य	11/08/2026 01:31	चंद्र	02/09/2026 16:42
केतु	04/07/2026 00:48	शुक्र	23/07/2026 04:17	चंद्र	13/08/2026 05:24	मंगल	04/09/2026 01:12
शुक्र	05/07/2026 09:00	सूर्य	24/07/2026 05:07	मंगल	14/08/2026 17:43	राहु	07/09/2026 12:45
सूर्य	05/07/2026 18:39	चंद्र	25/07/2026 22:31	राहु	18/08/2026 15:07	गुरु	10/09/2026 15:02
चंद्र	06/07/2026 10:45	मंगल	27/07/2026 03:29	गुरु	22/08/2026 02:08	शनि	14/09/2026 07:15
बुध - शुक्र - शनि - केतु		बुध - शुक्र - शनि - शुक्र		बुध - शुक्र - शनि - सूर्य		बुध - शुक्र - शनि - चंद्र	
14/09/2026 07:15		23/09/2026 20:39		21/10/2026 04:04		29/10/2026 08:42	
23/09/2026 20:39		21/10/2026 04:04		29/10/2026 08:42		12/11/2026 00:24	
केतु	14/09/2026 20:38	शुक्र	28/09/2026 09:53	सूर्य	21/10/2026 13:54	चंद्र	30/10/2026 12:00
शुक्र	16/09/2026 10:52	सूर्य	29/09/2026 18:39	चंद्र	22/10/2026 06:17	मंगल	31/10/2026 07:07
सूर्य	16/09/2026 22:20	चंद्र	02/10/2026 01:16	मंगल	22/10/2026 17:45	राहु	02/11/2026 08:16
चंद्र	17/09/2026 17:27	मंगल	03/10/2026 15:30	राहु	23/10/2026 23:15	गुरु	04/11/2026 03:58
मंगल	18/09/2026 06:50	राहु	07/10/2026 17:49	गुरु	25/10/2026 01:28	शनि	06/11/2026 07:51
राहु	19/09/2026 17:14	गुरु	11/10/2026 09:12	शनि	26/10/2026 08:36	बुध	08/11/2026 06:17
गुरु	20/09/2026 23:50	शनि	15/10/2026 16:59	बुध	27/10/2026 12:27	केतु	09/11/2026 01:24
शनि	22/09/2026 12:09	बुध	19/10/2026 13:50	केतु	27/10/2026 23:55	शुक्र	11/11/2026 08:01
बुध	23/09/2026 20:39	केतु	21/10/2026 04:04	शुक्र	29/10/2026 08:42	सूर्य	12/11/2026 00:24
बुध - शुक्र - शनि - मंगल		बुध - शुक्र - शनि - राहु		बुध - शुक्र - शनि - गुरु		बुध - शुक्र - बुध - बुध	
12/11/2026 00:24		21/11/2026 13:48		16/12/2026 03:41		07/01/2027 00:01	
21/11/2026 13:48		16/12/2026 03:41		07/01/2027 00:01		27/01/2027 18:29	
मंगल	12/11/2026 13:47	राहु	25/11/2026 06:17	गुरु	19/12/2026 01:35	बुध	09/01/2027 22:38
राहु	14/11/2026 00:12	गुरु	28/11/2026 12:56	शनि	22/12/2026 12:37	केतु	11/01/2027 03:43
गुरु	15/11/2026 06:47	शनि	02/12/2026 10:20	बुध	25/12/2026 14:53	शुक्र	14/01/2027 14:47
शनि	16/11/2026 19:06	बुध	05/12/2026 21:54	केतु	26/12/2026 21:29	सूर्य	15/01/2027 15:43
बुध	18/11/2026 03:36	केतु	07/12/2026 08:18	शुक्र	30/12/2026 12:52	चंद्र	17/01/2027 09:15
केतु	18/11/2026 16:59	शुक्र	11/12/2026 10:37	सूर्य	31/12/2026 15:05	मंगल	18/01/2027 14:19
शुक्र	20/11/2026 07:13	सूर्य	12/12/2026 16:07	चंद्र	02/01/2027 10:47	राहु	21/01/2027 17:06
सूर्य	20/11/2026 18:41	चंद्र	14/12/2026 17:16	मंगल	03/01/2027 17:22	गुरु	24/01/2027 11:33
चंद्र	21/11/2026 13:48	मंगल	16/12/2026 03:41	राहु	07/01/2027 00:01	शनि	27/01/2027 18:29

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 11 मास 24 दिन

सूर्य 11 वर्ष	मंगल 12 वर्ष	गुरु 13 वर्ष	शनि 14 वर्ष	केतु 15 वर्ष
31/10/1979	25/10/1983	25/10/1995	24/10/2008	25/10/2022
25/10/1983	25/10/1995	24/10/2008	25/10/2022	24/10/2037
00/00/0000	मंगल 20/01/1985	गुरु 09/04/1997	शनि 03/07/2010	केतु 02/10/2024
00/00/0000	गुरु 27/05/1986	शनि 03/11/1998	केतु 25/04/2012	चंद्र 28/10/2026
00/00/0000	शनि 07/11/1987	केतु 09/07/2000	चंद्र 31/03/2014	बुध 08/01/2029
00/00/0000	केतु 26/05/1989	चंद्र 25/04/2002	बुध 18/04/2016	शुक्र 08/05/2031
31/10/1979	चंद्र 21/01/1991	बुध 21/03/2004	शुक्र 21/06/2018	सूर्य 08/10/2032
चंद्र 30/06/1980	बुध 24/10/1992	शुक्र 28/03/2006	सूर्य 19/10/2019	मंगल 28/04/2034
बुध 08/02/1982	शुक्र 04/09/1994	सूर्य 21/06/2007	मंगल 31/03/2021	गुरु 02/01/2036
शुक्र 25/10/1983	सूर्य 25/10/1995	मंगल 24/10/2008	गुरु 25/10/2022	शनि 24/10/2037

चंद्र 16 वर्ष	बुध 17 वर्ष	शुक्र 18 वर्ष	सूर्य 11 वर्ष
24/10/2037	24/10/2053	25/10/2070	24/10/2088
24/10/2053	25/10/2070	24/10/2088	00/00/0000
चंद्र 09/01/2040	बुध 21/04/2056	शुक्र 10/08/2073	सूर्य 09/11/2089
बुध 14/05/2042	शुक्र 11/12/2058	सूर्य 25/04/2075	मंगल 30/12/2090
शुक्र 06/11/2044	सूर्य 22/07/2060	मंगल 05/03/2077	गुरु 24/03/2092
सूर्य 14/05/2046	मंगल 25/04/2062	गुरु 12/03/2079	शनि 22/07/2093
मंगल 09/01/2048	गुरु 21/03/2064	शनि 14/05/2081	केतु 24/12/2094
गुरु 24/10/2049	शनि 09/04/2066	केतु 11/09/2083	चंद्र 31/10/2095
शनि 30/09/2051	केतु 20/06/2068	चंद्र 06/03/2086	00/00/0000
केतु 24/10/2053	चंद्र 25/10/2070	बुध 24/10/2088	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र	सूर्य - बुध	सूर्य - शुक्र	मंगल - मंगल	मंगल - गुरु
31/10/1979	30/06/1980	08/02/1982	25/10/1983	20/01/1985
30/06/1980	08/02/1982	25/10/1983	20/01/1985	27/05/1986
00/00/0000	बुध 24/09/1980	शुक्र 16/05/1982	मंगल 11/12/1983	गुरु 16/03/1985
00/00/0000	शुक्र 24/12/1980	सूर्य 14/07/1982	गुरु 31/01/1984	शनि 15/05/1985
00/00/0000	सूर्य 18/02/1981	मंगल 17/09/1982	शनि 25/03/1984	केतु 17/07/1985
31/10/1979	मंगल 20/04/1981	गुरु 26/11/1982	केतु 23/05/1984	चंद्र 23/09/1985
मंगल 12/12/1979	गुरु 25/06/1981	शनि 09/02/1983	चंद्र 25/07/1984	बुध 04/12/1985
गुरु 12/02/1980	शनि 04/09/1981	केतु 01/05/1983	बुध 29/09/1984	शुक्र 18/02/1986
शनि 19/04/1980	केतु 19/11/1981	चंद्र 26/07/1983	शुक्र 08/12/1984	सूर्य 06/04/1986
केतु 30/06/1980	चंद्र 08/02/1982	बुध 25/10/1983	सूर्य 20/01/1985	मंगल 27/05/1986
मंगल - शनि	मंगल - केतु	मंगल - चंद्र	मंगल - बुध	मंगल - शुक्र
27/05/1986	07/11/1987	26/05/1989	21/01/1991	24/10/1992
07/11/1987	26/05/1989	21/01/1991	24/10/1992	04/09/1994
शनि 29/07/1986	केतु 19/01/1988	चंद्र 18/08/1989	बुध 25/04/1991	शुक्र 07/02/1993
केतु 06/10/1986	चंद्र 06/04/1988	बुध 14/11/1989	शुक्र 03/08/1991	सूर्य 12/04/1993
चंद्र 18/12/1986	बुध 28/06/1988	शुक्र 16/02/1990	सूर्य 03/10/1991	मंगल 22/06/1993
बुध 05/03/1987	शुक्र 24/09/1988	सूर्य 14/04/1990	मंगल 08/12/1991	गुरु 06/09/1993
शुक्र 26/05/1987	सूर्य 17/11/1988	मंगल 16/06/1990	गुरु 18/02/1992	शनि 27/11/1993
सूर्य 16/07/1987	मंगल 14/01/1989	गुरु 23/08/1990	शनि 06/05/1992	केतु 23/02/1994
मंगल 08/09/1987	गुरु 19/03/1989	शनि 04/11/1990	केतु 28/07/1992	चंद्र 28/05/1994
गुरु 07/11/1987	शनि 26/05/1989	केतु 21/01/1991	चंद्र 24/10/1992	बुध 04/09/1994
मंगल - सूर्य	गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - केतु	गुरु - चंद्र
04/09/1994	25/10/1995	09/04/1997	03/11/1998	09/07/2000
25/10/1995	09/04/1997	03/11/1998	09/07/2000	25/04/2002
सूर्य 14/10/1994	गुरु 24/12/1995	शनि 17/06/1997	केतु 22/01/1999	चंद्र 07/10/2000
मंगल 26/11/1994	शनि 26/02/1996	केतु 30/08/1997	चंद्र 16/04/1999	बुध 11/01/2001
गुरु 11/01/1995	केतु 05/05/1996	चंद्र 17/11/1997	बुध 15/07/1999	शुक्र 23/04/2001
शनि 02/03/1995	चंद्र 17/07/1996	बुध 09/02/1998	शुक्र 18/10/1999	सूर्य 24/06/2001
केतु 25/04/1995	बुध 03/10/1996	शुक्र 09/05/1998	सूर्य 16/12/1999	मंगल 31/08/2001
चंद्र 22/06/1995	शुक्र 25/12/1996	सूर्य 03/07/1998	मंगल 17/02/2000	गुरु 12/11/2001
बुध 21/08/1995	सूर्य 13/02/1997	मंगल 31/08/1998	गुरु 26/04/2000	शनि 30/01/2002
शुक्र 25/10/1995	मंगल 09/04/1997	गुरु 03/11/1998	शनि 09/07/2000	केतु 25/04/2002



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध 25/04/2002 21/03/2004	गुरु - शुक्र 21/03/2004 28/03/2006	गुरु - सूर्य 28/03/2006 21/06/2007	गुरु - मंगल 21/06/2007 24/10/2008	शनि - शनि 24/10/2008 03/07/2010
बुध 05/08/2002 शुक्र 21/11/2002 सूर्य 26/01/2003 मंगल 08/04/2003 गुरु 25/06/2003 शनि 17/09/2003 केतु 16/12/2003 चंद्र 21/03/2004	शुक्र 13/07/2004 सूर्य 21/09/2004 मंगल 06/12/2004 गुरु 27/02/2005 शनि 27/05/2005 केतु 30/08/2005 चंद्र 10/12/2005 बुध 28/03/2006	सूर्य 09/05/2006 मंगल 25/06/2006 गुरु 14/08/2006 शनि 08/10/2006 केतु 05/12/2006 चंद्र 05/02/2007 बुध 12/04/2007 शुक्र 21/06/2007	मंगल 11/08/2007 गुरु 05/10/2007 शनि 03/12/2007 केतु 05/02/2008 चंद्र 12/04/2008 बुध 23/06/2008 शुक्र 08/09/2008 सूर्य 24/10/2008	शनि 07/01/2009 केतु 27/03/2009 चंद्र 21/06/2009 बुध 19/09/2009 शुक्र 24/12/2009 सूर्य 20/02/2010 मंगल 25/04/2010 गुरु 03/07/2010
शनि - केतु 03/07/2010 25/04/2012	शनि - चंद्र 25/04/2012 31/03/2014	शनि - बुध 31/03/2014 18/04/2016	शनि - शुक्र 18/04/2016 21/06/2018	शनि - सूर्य 21/06/2018 19/10/2019
केतु 27/09/2010 चंद्र 27/12/2010 बुध 03/04/2011 शुक्र 15/07/2011 सूर्य 15/09/2011 मंगल 23/11/2011 गुरु 05/02/2012 शनि 25/04/2012	चंद्र 31/07/2012 बुध 11/11/2012 शुक्र 01/03/2013 सूर्य 07/05/2013 मंगल 19/07/2013 गुरु 06/10/2013 शनि 30/12/2013 केतु 31/03/2014	बुध 19/07/2014 शुक्र 12/11/2014 सूर्य 22/01/2015 मंगल 10/04/2015 गुरु 03/07/2015 शनि 01/10/2015 केतु 06/01/2016 चंद्र 18/04/2016	शुक्र 19/08/2016 सूर्य 03/11/2016 मंगल 24/01/2017 गुरु 23/04/2017 शनि 27/07/2017 केतु 07/11/2017 चंद्र 24/02/2018 बुध 21/06/2018	सूर्य 06/08/2018 मंगल 25/09/2018 गुरु 18/11/2018 शनि 16/01/2019 केतु 19/03/2019 चंद्र 25/05/2019 बुध 04/08/2019 शुक्र 19/10/2019
शनि - मंगल 19/10/2019 31/03/2021	शनि - गुरु 31/03/2021 25/10/2022	केतु - केतु 25/10/2022 02/10/2024	केतु - चंद्र 02/10/2024 28/10/2026	केतु - बुध 28/10/2026 08/01/2029
मंगल 12/12/2019 गुरु 10/02/2020 शनि 13/04/2020 केतु 21/06/2020 चंद्र 02/09/2020 बुध 18/11/2020 शुक्र 08/02/2021 सूर्य 31/03/2021	गुरु 03/06/2021 शनि 11/08/2021 केतु 24/10/2021 चंद्र 11/01/2022 बुध 05/04/2022 शुक्र 03/07/2022 सूर्य 26/08/2022 मंगल 25/10/2022	केतु 24/01/2023 चंद्र 02/05/2023 बुध 14/08/2023 शुक्र 02/12/2023 सूर्य 07/02/2024 मंगल 20/04/2024 गुरु 09/07/2024 शनि 02/10/2024	चंद्र 14/01/2025 बुध 05/05/2025 शुक्र 30/08/2025 सूर्य 10/11/2025 मंगल 27/01/2026 गुरु 22/04/2026 शनि 22/07/2026 केतु 28/10/2026	बुध 23/02/2027 शुक्र 27/06/2027 सूर्य 11/09/2027 मंगल 03/12/2027 गुरु 02/03/2028 शनि 07/06/2028 केतु 19/09/2028 चंद्र 08/01/2029

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - मंगल	केतु - गुरु	केतु - शनि
08/01/2029	08/05/2031	08/10/2032	28/04/2034	02/01/2036
08/05/2031	08/10/2032	28/04/2034	02/01/2036	24/10/2037
शुक्र 20/05/2029	सूर्य 26/06/2031	मंगल 06/12/2032	गुरु 06/07/2034	शनि 22/03/2036
सूर्य 08/08/2029	मंगल 19/08/2031	गुरु 08/02/2033	शनि 18/09/2034	केतु 16/06/2036
मंगल 04/11/2029	गुरु 16/10/2031	शनि 17/04/2033	केतु 07/12/2034	चंद्र 15/09/2036
गुरु 08/02/2030	शनि 18/12/2031	केतु 29/06/2033	चंद्र 01/03/2035	बुध 21/12/2036
शनि 21/05/2030	केतु 23/02/2032	चंद्र 15/09/2033	बुध 30/05/2035	शुक्र 02/04/2037
केतु 08/09/2030	चंद्र 05/05/2032	बुध 08/12/2033	शुक्र 02/09/2035	सूर्य 04/06/2037
चंद्र 03/01/2031	बुध 20/07/2032	शुक्र 05/03/2034	सूर्य 31/10/2035	मंगल 11/08/2037
बुध 08/05/2031	शुक्र 08/10/2032	सूर्य 28/04/2034	मंगल 02/01/2036	गुरु 24/10/2037
चंद्र - चंद्र	चंद्र - बुध	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	चंद्र - मंगल
24/10/2037	09/01/2040	14/05/2042	06/11/2044	14/05/2046
09/01/2040	14/05/2042	06/11/2044	14/05/2046	09/01/2048
चंद्र 13/02/2038	बुध 13/05/2040	शुक्र 02/10/2042	सूर्य 28/12/2044	मंगल 15/07/2046
बुध 11/06/2038	शुक्र 23/09/2040	सूर्य 27/12/2042	मंगल 24/02/2045	गुरु 21/09/2046
शुक्र 14/10/2038	सूर्य 13/12/2040	मंगल 30/03/2043	गुरु 27/04/2045	शनि 03/12/2046
सूर्य 29/12/2038	मंगल 12/03/2041	गुरु 10/07/2043	शनि 03/07/2045	केतु 19/02/2047
मंगल 23/03/2039	गुरु 16/06/2041	शनि 28/10/2043	केतु 12/09/2045	चंद्र 14/05/2047
गुरु 21/06/2039	शनि 27/09/2041	केतु 22/02/2044	चंद्र 28/11/2045	बुध 10/08/2047
शनि 26/09/2039	केतु 16/01/2042	चंद्र 26/06/2044	बुध 17/02/2046	शुक्र 12/11/2047
केतु 09/01/2040	चंद्र 14/05/2042	बुध 06/11/2044	शुक्र 14/05/2046	सूर्य 09/01/2048
चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - केतु	बुध - बुध	बुध - शुक्र
09/01/2048	24/10/2049	30/09/2051	24/10/2053	21/04/2056
24/10/2049	30/09/2051	24/10/2053	21/04/2056	11/12/2058
गुरु 22/03/2048	शनि 18/01/2050	केतु 05/01/2052	बुध 07/03/2054	शुक्र 18/09/2056
शनि 09/06/2048	केतु 19/04/2050	चंद्र 19/04/2052	शुक्र 26/07/2054	सूर्य 18/12/2056
केतु 02/09/2048	चंद्र 25/07/2050	बुध 07/08/2052	सूर्य 20/10/2054	मंगल 28/03/2057
चंद्र 01/12/2048	बुध 05/11/2050	शुक्र 03/12/2052	मंगल 22/01/2055	गुरु 14/07/2057
बुध 07/03/2049	शुक्र 23/02/2051	सूर्य 12/02/2053	गुरु 04/05/2055	शनि 07/11/2057
शुक्र 17/06/2049	सूर्य 01/05/2051	मंगल 02/05/2053	शनि 22/08/2055	केतु 12/03/2058
सूर्य 18/08/2049	मंगल 13/07/2051	गुरु 25/07/2053	केतु 18/12/2055	चंद्र 23/07/2058
मंगल 24/10/2049	गुरु 30/09/2051	शनि 24/10/2053	चंद्र 21/04/2056	बुध 11/12/2058

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य 11/12/2058 22/07/2060	बुध - मंगल 22/07/2060 25/04/2062	बुध - गुरु 25/04/2062 21/03/2064	बुध - शनि 21/03/2064 09/04/2066	बुध - केतु 09/04/2066 20/06/2068
सूर्य 05/02/2059 मंगल 07/04/2059 गुरु 12/06/2059 शनि 22/08/2059 केतु 06/11/2059 चंद्र 26/01/2060 बुध 21/04/2060 शुक्र 22/07/2060	मंगल 26/09/2060 गुरु 07/12/2060 शनि 23/02/2061 केतु 17/05/2061 चंद्र 13/08/2061 बुध 15/11/2061 शुक्र 23/02/2062 सूर्य 25/04/2062	गुरु 12/07/2062 शनि 04/10/2062 केतु 02/01/2063 चंद्र 08/04/2063 बुध 19/07/2063 शुक्र 04/11/2063 सूर्य 09/01/2064 मंगल 21/03/2064	शनि 19/06/2064 केतु 24/09/2064 चंद्र 06/01/2065 बुध 25/04/2065 शुक्र 20/08/2065 सूर्य 30/10/2065 मंगल 15/01/2066 गुरु 09/04/2066	केतु 22/07/2066 चंद्र 10/11/2066 बुध 08/03/2067 शुक्र 10/07/2067 सूर्य 24/09/2067 मंगल 16/12/2067 गुरु 15/03/2068 शनि 20/06/2068
बुध - चंद्र 20/06/2068 25/10/2070	शुक्र - शुक्र 25/10/2070 10/08/2073	शुक्र - सूर्य 10/08/2073 25/04/2075	शुक्र - मंगल 25/04/2075 05/03/2077	शुक्र - गुरु 05/03/2077 12/03/2079
चंद्र 16/10/2068 बुध 19/02/2069 शुक्र 02/07/2069 सूर्य 21/09/2069 मंगल 19/12/2069 गुरु 25/03/2070 शनि 06/07/2070 केतु 25/10/2070	शुक्र 01/04/2071 सूर्य 07/07/2071 मंगल 20/10/2071 गुरु 12/02/2072 शनि 14/06/2072 केतु 24/10/2072 चंद्र 13/03/2073 बुध 10/08/2073	सूर्य 08/10/2073 मंगल 11/12/2073 गुरु 19/02/2074 शनि 06/05/2074 केतु 25/07/2074 चंद्र 19/10/2074 बुध 19/01/2075 शुक्र 25/04/2075	मंगल 05/07/2075 गुरु 19/09/2075 शनि 10/12/2075 केतु 07/03/2076 चंद्र 09/06/2076 बुध 16/09/2076 शुक्र 31/12/2076 सूर्य 05/03/2077	गुरु 27/05/2077 शनि 24/08/2077 केतु 27/11/2077 चंद्र 09/03/2078 बुध 25/06/2078 शुक्र 17/10/2078 सूर्य 26/12/2078 मंगल 12/03/2079
शुक्र - शनि 12/03/2079 14/05/2081	शुक्र - केतु 14/05/2081 11/09/2083	शुक्र - चंद्र 11/09/2083 06/03/2086	शुक्र - बुध 06/03/2086 24/10/2088	सूर्य - सूर्य 24/10/2088 09/11/2089
शनि 16/06/2079 केतु 27/09/2079 चंद्र 14/01/2080 बुध 09/05/2080 शुक्र 09/09/2080 सूर्य 24/11/2080 मंगल 14/02/2081 गुरु 14/05/2081	केतु 01/09/2081 चंद्र 27/12/2081 बुध 30/04/2082 शुक्र 09/09/2082 सूर्य 29/11/2082 मंगल 25/02/2083 गुरु 31/05/2083 शनि 11/09/2083	चंद्र 14/01/2084 बुध 26/05/2084 शुक्र 14/10/2084 सूर्य 08/01/2085 मंगल 11/04/2085 गुरु 22/07/2085 शनि 08/11/2085 केतु 06/03/2086	बुध 25/07/2086 शुक्र 21/12/2086 सूर्य 23/03/2087 मंगल 30/06/2087 गुरु 16/10/2087 शनि 10/02/2088 केतु 13/06/2088 चंद्र 24/10/2088	सूर्य 29/11/2088 मंगल 08/01/2089 गुरु 19/02/2089 शनि 06/04/2089 केतु 26/05/2089 चंद्र 17/07/2089 बुध 11/09/2089 शुक्र 09/11/2089

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 4 वर्ष 4 मास 4 दिन

राहु 12 वर्ष 31/10/1979 05/03/1984	गुरु 11 वर्ष 05/03/1984 04/11/1994	शनि 13 वर्ष 04/11/1994 06/07/2007	बुध 11 वर्ष 06/07/2007 04/11/2018	केतु 5 वर्ष 04/11/2018 06/07/2023
00/00/0000	गुरु 07/08/1985	शनि 06/11/1996	बुध 11/02/2009	केतु 12/02/2019
00/00/0000	शनि 16/04/1987	बुध 23/08/1998	केतु 11/10/2009	शुक्र 23/11/2019
00/00/0000	बुध 18/10/1988	केतु 20/05/1999	शुक्र 01/09/2011	सूर्य 16/02/2020
31/10/1979	केतु 03/06/1989	शुक्र 29/06/2001	सूर्य 26/03/2012	चंद्र 07/07/2020
केतु 17/11/1979	शुक्र 14/03/1991	सूर्य 15/02/2002	चंद्र 05/03/2013	मंगल 14/10/2020
शुक्र 16/11/1981	सूर्य 25/09/1991	चंद्र 08/03/2003	मंगल 02/11/2013	राहु 27/06/2021
सूर्य 23/06/1982	चंद्र 15/08/1992	मंगल 03/12/2003	राहु 16/07/2015	गुरु 09/02/2022
चंद्र 24/06/1983	मंगल 30/03/1993	राहु 27/10/2005	गुरु 18/01/2017	शनि 06/11/2022
मंगल 05/03/1984	राहु 04/11/1994	गुरु 06/07/2007	शनि 04/11/2018	बुध 06/07/2023
शुक्र 13 वर्ष 06/07/2023 04/11/2036	सूर्य 4 वर्ष 04/11/2036 04/11/2040	चंद्र 7 वर्ष 04/11/2040 06/07/2047	मंगल 5 वर्ष 06/07/2047 05/03/2052	राहु 12 वर्ष 05/03/2052 00/00/0000
शुक्र 24/09/2025	सूर्य 16/01/2037	चंद्र 26/05/2041	मंगल 13/10/2047	राहु 23/12/2053
सूर्य 26/05/2026	चंद्र 18/05/2037	मंगल 15/10/2041	राहु 25/06/2048	गुरु 30/07/2055
चंद्र 06/07/2027	मंगल 11/08/2037	राहु 15/10/2042	गुरु 07/02/2049	शनि 23/06/2057
मंगल 15/04/2028	राहु 18/03/2038	गुरु 05/09/2043	शनि 04/11/2049	बुध 06/03/2059
राहु 15/04/2030	गुरु 29/09/2038	शनि 24/09/2044	बुध 03/07/2050	केतु 31/10/2059
गुरु 25/01/2032	शनि 18/05/2039	बुध 04/09/2045	केतु 11/10/2050	00/00/0000
शनि 06/03/2034	बुध 11/12/2039	केतु 24/01/2046	शुक्र 22/07/2051	00/00/0000
बुध 25/01/2036	केतु 05/03/2040	शुक्र 06/03/2047	सूर्य 15/10/2051	00/00/0000
केतु 04/11/2036	शुक्र 04/11/2040	सूर्य 06/07/2047	चंद्र 05/03/2052	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
31/10/1979	17/11/1979	16/11/1981	23/06/1982	24/06/1983
17/11/1979	16/11/1981	23/06/1982	24/06/1983	05/03/1984
00/00/0000	शुक्र 17/03/1980	सूर्य 27/11/1981	चंद्र 24/07/1982	मंगल 08/07/1983
00/00/0000	सूर्य 23/04/1980	चंद्र 15/12/1981	मंगल 14/08/1982	राहु 16/08/1983
00/00/0000	चंद्र 23/06/1980	मंगल 28/12/1981	राहु 08/10/1982	गुरु 19/09/1983
00/00/0000	मंगल 04/08/1980	राहु 30/01/1982	गुरु 26/11/1982	शनि 29/10/1983
00/00/0000	राहु 22/11/1980	गुरु 28/02/1982	शनि 22/01/1983	बुध 05/12/1983
00/00/0000	गुरु 27/02/1981	शनि 04/04/1982	बुध 15/03/1983	केतु 20/12/1983
00/00/0000	शनि 23/06/1981	बुध 05/05/1982	केतु 05/04/1983	शुक्र 31/01/1984
31/10/1979	बुध 05/10/1981	केतु 18/05/1982	शुक्र 05/06/1983	सूर्य 13/02/1984
बुध 17/11/1979	केतु 16/11/1981	शुक्र 23/06/1982	सूर्य 24/06/1983	चंद्र 05/03/1984
गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
05/03/1984	07/08/1985	16/04/1987	18/10/1988	03/06/1989
07/08/1985	16/04/1987	18/10/1988	03/06/1989	14/03/1991
गुरु 13/05/1984	शनि 12/11/1985	बुध 03/07/1987	केतु 01/11/1988	शुक्र 19/09/1989
शनि 04/08/1984	बुध 08/02/1986	केतु 04/08/1987	शुक्र 09/12/1988	सूर्य 21/10/1989
बुध 16/10/1984	केतु 16/03/1986	शुक्र 04/11/1987	सूर्य 20/12/1988	चंद्र 15/12/1989
केतु 16/11/1984	शुक्र 27/06/1986	सूर्य 02/12/1987	चंद्र 08/01/1989	मंगल 21/01/1990
शुक्र 10/02/1985	सूर्य 27/07/1986	चंद्र 17/01/1988	मंगल 21/01/1989	राहु 29/04/1990
सूर्य 08/03/1985	चंद्र 17/09/1986	मंगल 18/02/1988	राहु 24/02/1989	गुरु 24/07/1990
चंद्र 20/04/1985	मंगल 23/10/1986	राहु 11/05/1988	गुरु 27/03/1989	शनि 04/11/1990
मंगल 21/05/1985	राहु 23/01/1987	गुरु 23/07/1988	शनि 02/05/1989	बुध 04/02/1991
राहु 07/08/1985	गुरु 16/04/1987	शनि 18/10/1988	बुध 03/06/1989	केतु 14/03/1991
गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि
14/03/1991	25/09/1991	15/08/1992	30/03/1993	04/11/1994
25/09/1991	15/08/1992	30/03/1993	04/11/1994	06/11/1996
सूर्य 24/03/1991	चंद्र 22/10/1991	मंगल 28/08/1992	राहु 25/06/1993	शनि 28/02/1995
चंद्र 09/04/1991	मंगल 10/11/1991	राहु 01/10/1992	गुरु 11/09/1993	बुध 12/06/1995
मंगल 20/04/1991	राहु 29/12/1991	गुरु 31/10/1992	शनि 13/12/1993	केतु 25/07/1995
राहु 20/05/1991	गुरु 10/02/1992	शनि 06/12/1992	बुध 06/03/1994	शुक्र 24/11/1995
गुरु 15/06/1991	शनि 01/04/1992	बुध 07/01/1993	केतु 09/04/1994	सूर्य 30/12/1995
शनि 15/07/1991	बुध 17/05/1992	केतु 21/01/1993	शुक्र 15/07/1994	चंद्र 29/02/1996
बुध 12/08/1991	केतु 05/06/1992	शुक्र 28/02/1993	सूर्य 13/08/1994	मंगल 12/04/1996
केतु 23/08/1991	शुक्र 29/07/1992	सूर्य 11/03/1993	चंद्र 01/10/1994	राहु 31/07/1996
शुक्र 25/09/1991	सूर्य 15/08/1992	चंद्र 30/03/1993	मंगल 04/11/1994	गुरु 06/11/1996



FUTUREPOINT
Astro Solutions



त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 06/11/1996 23/08/1998	शनि - केतु 23/08/1998 20/05/1999	शनि - शुक्र 20/05/1999 29/06/2001	शनि - सूर्य 29/06/2001 15/02/2002	शनि - चंद्र 15/02/2002 08/03/2003
बुध 07/02/1997 केतु 17/03/1997 शुक्र 04/07/1997 सूर्य 06/08/1997 चंद्र 29/09/1997 मंगल 07/11/1997 राहु 13/02/1998 गुरु 11/05/1998 शनि 23/08/1998	केतु 08/09/1998 शुक्र 23/10/1998 सूर्य 05/11/1998 चंद्र 28/11/1998 मंगल 14/12/1998 राहु 23/01/1999 गुरु 28/02/1999 शनि 12/04/1999 बुध 20/05/1999	शुक्र 26/09/1999 सूर्य 03/11/1999 चंद्र 06/01/2000 मंगल 20/02/2000 राहु 15/06/2000 गुरु 26/09/2000 शनि 26/01/2001 बुध 15/05/2001 केतु 29/06/2001	सूर्य 11/07/2001 चंद्र 30/07/2001 मंगल 12/08/2001 राहु 16/09/2001 गुरु 17/10/2001 शनि 23/11/2001 बुध 25/12/2001 केतु 08/01/2002 शुक्र 15/02/2002	चंद्र 20/03/2002 मंगल 11/04/2002 राहु 08/06/2002 गुरु 29/07/2002 शनि 28/09/2002 बुध 22/11/2002 केतु 14/12/2002 शुक्र 17/02/2003 सूर्य 08/03/2003
शनि - मंगल 08/03/2003 03/12/2003	शनि - राहु 03/12/2003 27/10/2005	शनि - गुरु 27/10/2005 06/07/2007	बुध - बुध 06/07/2007 11/02/2009	बुध - केतु 11/02/2009 11/10/2009
मंगल 24/03/2003 राहु 03/05/2003 गुरु 08/06/2003 शनि 21/07/2003 बुध 28/08/2003 केतु 13/09/2003 शुक्र 28/10/2003 सूर्य 10/11/2003 चंद्र 03/12/2003	राहु 16/03/2004 गुरु 17/06/2004 शनि 04/10/2004 बुध 11/01/2005 केतु 20/02/2005 शुक्र 16/06/2005 सूर्य 21/07/2005 चंद्र 16/09/2005 मंगल 27/10/2005	गुरु 17/01/2006 शनि 25/04/2006 बुध 21/07/2006 केतु 26/08/2006 शुक्र 07/12/2006 सूर्य 07/01/2007 चंद्र 27/02/2007 मंगल 04/04/2007 राहु 06/07/2007	बुध 27/09/2007 केतु 31/10/2007 शुक्र 06/02/2008 सूर्य 06/03/2008 चंद्र 24/04/2008 मंगल 28/05/2008 राहु 24/08/2008 गुरु 10/11/2008 शनि 11/02/2009	केतु 25/02/2009 शुक्र 06/04/2009 सूर्य 19/04/2009 चंद्र 09/05/2009 मंगल 23/05/2009 राहु 28/06/2009 गुरु 30/07/2009 शनि 06/09/2009 बुध 11/10/2009
बुध - शुक्र 11/10/2009 01/09/2011	बुध - सूर्य 01/09/2011 26/03/2012	बुध - चंद्र 26/03/2012 05/03/2013	बुध - मंगल 05/03/2013 02/11/2013	बुध - राहु 02/11/2013 16/07/2015
शुक्र 03/02/2010 सूर्य 09/03/2010 चंद्र 06/05/2010 मंगल 15/06/2010 राहु 26/09/2010 गुरु 27/12/2010 शनि 16/04/2011 बुध 22/07/2011 केतु 01/09/2011	सूर्य 11/09/2011 चंद्र 28/09/2011 मंगल 10/10/2011 राहु 10/11/2011 गुरु 08/12/2011 शनि 10/01/2012 बुध 08/02/2012 केतु 20/02/2012 शुक्र 26/03/2012	चंद्र 23/04/2012 मंगल 13/05/2012 राहु 04/07/2012 गुरु 19/08/2012 शनि 13/10/2012 बुध 01/12/2012 केतु 21/12/2012 शुक्र 16/02/2013 सूर्य 05/03/2013	मंगल 20/03/2013 राहु 25/04/2013 गुरु 27/05/2013 शनि 04/07/2013 बुध 07/08/2013 केतु 22/08/2013 शुक्र 01/10/2013 सूर्य 13/10/2013 चंद्र 02/11/2013	राहु 03/02/2014 गुरु 27/04/2014 शनि 03/08/2014 बुध 30/10/2014 केतु 05/12/2014 शुक्र 19/03/2015 सूर्य 19/04/2015 चंद्र 10/06/2015 मंगल 16/07/2015

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 16/07/2015 18/01/2017	बुध - शनि 18/01/2017 04/11/2018	केतु - केतु 04/11/2018 12/02/2019	केतु - शुक्र 12/02/2019 23/11/2019	केतु - सूर्य 23/11/2019 16/02/2020
गुरु 27/09/2015 शनि 24/12/2015 बुध 11/03/2016 केतु 12/04/2016 शुक्र 13/07/2016 सूर्य 10/08/2016 चंद्र 25/09/2016 मंगल 27/10/2016 राहु 18/01/2017	शनि 02/05/2017 बुध 02/08/2017 केतु 10/09/2017 शुक्र 28/12/2017 सूर्य 30/01/2018 चंद्र 25/03/2018 मंगल 03/05/2018 राहु 09/08/2018 गुरु 04/11/2018	केतु 10/11/2018 शुक्र 27/11/2018 सूर्य 02/12/2018 चंद्र 10/12/2018 मंगल 16/12/2018 राहु 31/12/2018 गुरु 13/01/2019 शनि 29/01/2019 बुध 12/02/2019	शुक्र 31/03/2019 सूर्य 14/04/2019 चंद्र 08/05/2019 मंगल 24/05/2019 राहु 06/07/2019 गुरु 13/08/2019 शनि 27/09/2019 बुध 06/11/2019 केतु 23/11/2019	सूर्य 27/11/2019 चंद्र 04/12/2019 मंगल 09/12/2019 राहु 22/12/2019 गुरु 02/01/2020 शनि 16/01/2020 बुध 28/01/2020 केतु 02/02/2020 शुक्र 16/02/2020
केतु - चंद्र 16/02/2020 07/07/2020	केतु - मंगल 07/07/2020 14/10/2020	केतु - राहु 14/10/2020 27/06/2021	केतु - गुरु 27/06/2021 09/02/2022	केतु - शनि 09/02/2022 06/11/2022
चंद्र 28/02/2020 मंगल 07/03/2020 राहु 28/03/2020 गुरु 16/04/2020 शनि 09/05/2020 बुध 29/05/2020 केतु 06/06/2020 शुक्र 30/06/2020 सूर्य 07/07/2020	मंगल 13/07/2020 राहु 28/07/2020 गुरु 10/08/2020 शनि 26/08/2020 बुध 09/09/2020 केतु 15/09/2020 शुक्र 01/10/2020 सूर्य 06/10/2020 चंद्र 14/10/2020	राहु 22/11/2020 गुरु 26/12/2020 शनि 04/02/2021 बुध 13/03/2021 केतु 27/03/2021 शुक्र 09/05/2021 सूर्य 22/05/2021 चंद्र 12/06/2021 मंगल 27/06/2021	गुरु 27/07/2021 शनि 01/09/2021 बुध 04/10/2021 केतु 17/10/2021 शुक्र 24/11/2021 सूर्य 05/12/2021 चंद्र 24/12/2021 मंगल 06/01/2022 राहु 09/02/2022	शनि 24/03/2022 बुध 01/05/2022 केतु 17/05/2022 शुक्र 01/07/2022 सूर्य 15/07/2022 चंद्र 06/08/2022 मंगल 22/08/2022 राहु 01/10/2022 गुरु 06/11/2022
केतु - बुध 06/11/2022 06/07/2023	शुक्र - शुक्र 06/07/2023 24/09/2025	शुक्र - सूर्य 24/09/2025 26/05/2026	शुक्र - चंद्र 26/05/2026 06/07/2027	शुक्र - मंगल 06/07/2027 15/04/2028
बुध 10/12/2022 केतु 25/12/2022 शुक्र 03/02/2023 सूर्य 15/02/2023 चंद्र 07/03/2023 मंगल 21/03/2023 राहु 26/04/2023 गुरु 28/05/2023 शनि 06/07/2023	शुक्र 18/11/2023 सूर्य 29/12/2023 चंद्र 05/03/2024 मंगल 22/04/2024 राहु 21/08/2024 गुरु 08/12/2024 शनि 15/04/2025 बुध 08/08/2025 केतु 24/09/2025	सूर्य 07/10/2025 चंद्र 27/10/2025 मंगल 10/11/2025 राहु 17/12/2025 गुरु 18/01/2026 शनि 26/02/2026 बुध 01/04/2026 केतु 15/04/2026 शुक्र 26/05/2026	चंद्र 29/06/2026 मंगल 22/07/2026 राहु 21/09/2026 गुरु 14/11/2026 शनि 18/01/2027 बुध 16/03/2027 केतु 09/04/2027 शुक्र 15/06/2027 सूर्य 06/07/2027	मंगल 22/07/2027 राहु 03/09/2027 गुरु 11/10/2027 शनि 25/11/2027 बुध 04/01/2028 केतु 21/01/2028 शुक्र 08/03/2028 सूर्य 22/03/2028 चंद्र 15/04/2028

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु 15/04/2028 15/04/2030	शुक्र - गुरु 15/04/2030 25/01/2032	शुक्र - शनि 25/01/2032 06/03/2034	शुक्र - बुध 06/03/2034 25/01/2036	शुक्र - केतु 25/01/2036 04/11/2036
राहु 02/08/2028 गुरु 08/11/2028 शनि 03/03/2029 बुध 15/06/2029 केतु 28/07/2029 शुक्र 26/11/2029 सूर्य 02/01/2030 चंद्र 04/03/2030 मंगल 15/04/2030	गुरु 11/07/2030 शनि 22/10/2030 बुध 22/01/2031 केतु 01/03/2031 शुक्र 17/06/2031 सूर्य 19/07/2031 चंद्र 11/09/2031 मंगल 19/10/2031 राहु 25/01/2032	शनि 26/05/2032 बुध 12/09/2032 केतु 27/10/2032 शुक्र 04/03/2033 सूर्य 12/04/2033 चंद्र 15/06/2033 मंगल 30/07/2033 राहु 23/11/2033 गुरु 06/03/2034	बुध 11/06/2034 केतु 22/07/2034 शुक्र 14/11/2034 सूर्य 18/12/2034 चंद्र 14/02/2035 मंगल 26/03/2035 राहु 07/07/2035 गुरु 07/10/2035 शनि 25/01/2036	केतु 10/02/2036 शुक्र 29/03/2036 सूर्य 12/04/2036 चंद्र 05/05/2036 मंगल 22/05/2036 राहु 04/07/2036 गुरु 11/08/2036 शनि 24/09/2036 बुध 04/11/2036
सूर्य - सूर्य 04/11/2036 16/01/2037	सूर्य - चंद्र 16/01/2037 18/05/2037	सूर्य - मंगल 18/05/2037 11/08/2037	सूर्य - राहु 11/08/2037 18/03/2038	सूर्य - गुरु 18/03/2038 29/09/2038
सूर्य 07/11/2036 चंद्र 13/11/2036 मंगल 18/11/2036 राहु 29/11/2036 गुरु 08/12/2036 शनि 20/12/2036 बुध 30/12/2036 केतु 04/01/2037 शुक्र 16/01/2037	चंद्र 26/01/2037 मंगल 02/02/2037 राहु 20/02/2037 गुरु 09/03/2037 शनि 28/03/2037 बुध 14/04/2037 केतु 21/04/2037 शुक्र 11/05/2037 सूर्य 18/05/2037	मंगल 23/05/2037 राहु 04/06/2037 गुरु 16/06/2037 शनि 29/06/2037 बुध 11/07/2037 केतु 16/07/2037 शुक्र 30/07/2037 सूर्य 04/08/2037 चंद्र 11/08/2037	राहु 13/09/2037 गुरु 12/10/2037 शनि 16/11/2037 बुध 17/12/2037 केतु 29/12/2037 शुक्र 04/02/2038 सूर्य 15/02/2038 चंद्र 05/03/2038 मंगल 18/03/2038	गुरु 13/04/2038 शनि 14/05/2038 बुध 10/06/2038 केतु 22/06/2038 शुक्र 24/07/2038 सूर्य 03/08/2038 चंद्र 19/08/2038 मंगल 30/08/2038 राहु 29/09/2038
सूर्य - शनि 29/09/2038 18/05/2039	सूर्य - बुध 18/05/2039 11/12/2039	सूर्य - केतु 11/12/2039 05/03/2040	सूर्य - शुक्र 05/03/2040 04/11/2040	चंद्र - चंद्र 04/11/2040 26/05/2041
शनि 04/11/2038 बुध 07/12/2038 केतु 21/12/2038 शुक्र 28/01/2039 सूर्य 09/02/2039 चंद्र 28/02/2039 मंगल 13/03/2039 राहु 17/04/2039 गुरु 18/05/2039	बुध 16/06/2039 केतु 28/06/2039 शुक्र 02/08/2039 सूर्य 12/08/2039 चंद्र 30/08/2039 मंगल 11/09/2039 राहु 12/10/2039 गुरु 08/11/2039 शनि 11/12/2039	केतु 16/12/2039 शुक्र 30/12/2039 सूर्य 03/01/2040 चंद्र 11/01/2040 मंगल 16/01/2040 राहु 28/01/2040 गुरु 09/02/2040 शनि 22/02/2040 बुध 05/03/2040	शुक्र 15/04/2040 सूर्य 27/04/2040 चंद्र 17/05/2040 मंगल 31/05/2040 राहु 07/07/2040 गुरु 08/08/2040 शनि 16/09/2040 बुध 21/10/2040 केतु 04/11/2040	चंद्र 21/11/2040 मंगल 02/12/2040 राहु 02/01/2041 गुरु 29/01/2041 शनि 02/03/2041 बुध 31/03/2041 केतु 12/04/2041 शुक्र 16/05/2041 सूर्य 26/05/2041

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध
26/05/2041	15/10/2041	15/10/2042	05/09/2043	24/09/2044
15/10/2041	15/10/2042	05/09/2043	24/09/2044	04/09/2045
मंगल 03/06/2041	राहु 08/12/2041	गुरु 27/11/2042	शनि 05/11/2043	बुध 12/11/2044
राहु 24/06/2041	गुरु 26/01/2042	शनि 18/01/2043	बुध 29/12/2043	केतु 02/12/2044
गुरु 13/07/2041	शनि 25/03/2042	बुध 05/03/2043	केतु 21/01/2044	शुक्र 29/01/2045
शनि 05/08/2041	बुध 16/05/2042	केतु 24/03/2043	शुक्र 25/03/2044	सूर्य 15/02/2045
बुध 25/08/2041	केतु 06/06/2042	शुक्र 17/05/2043	सूर्य 13/04/2044	चंद्र 16/03/2045
केतु 02/09/2041	शुक्र 06/08/2042	सूर्य 02/06/2043	चंद्र 15/05/2044	मंगल 05/04/2045
शुक्र 26/09/2041	सूर्य 24/08/2042	चंद्र 29/06/2043	मंगल 07/06/2044	राहु 26/05/2045
सूर्य 03/10/2041	चंद्र 24/09/2042	मंगल 18/07/2043	राहु 04/08/2044	गुरु 11/07/2045
चंद्र 15/10/2041	मंगल 15/10/2042	राहु 05/09/2043	गुरु 24/09/2044	शनि 04/09/2045
चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु
04/09/2045	24/01/2046	06/03/2047	06/07/2047	13/10/2047
24/01/2046	06/03/2047	06/07/2047	13/10/2047	25/06/2048
केतु 12/09/2045	शुक्र 02/04/2046	सूर्य 12/03/2047	मंगल 12/07/2047	राहु 21/11/2047
शुक्र 06/10/2045	सूर्य 22/04/2046	चंद्र 22/03/2047	राहु 26/07/2047	गुरु 25/12/2047
सूर्य 13/10/2045	चंद्र 26/05/2046	मंगल 29/03/2047	गुरु 09/08/2047	शनि 03/02/2048
चंद्र 25/10/2045	मंगल 19/06/2046	राहु 17/04/2047	शनि 24/08/2047	बुध 10/03/2048
मंगल 02/11/2045	राहु 18/08/2046	गुरु 03/05/2047	बुध 08/09/2047	केतु 25/03/2048
राहु 24/11/2045	गुरु 12/10/2046	शनि 22/05/2047	केतु 13/09/2047	शुक्र 07/05/2048
गुरु 13/12/2045	शनि 15/12/2046	बुध 08/06/2047	शुक्र 30/09/2047	सूर्य 20/05/2048
शनि 04/01/2046	बुध 10/02/2047	केतु 15/06/2047	सूर्य 05/10/2047	चंद्र 10/06/2048
बुध 24/01/2046	केतु 06/03/2047	शुक्र 06/07/2047	चंद्र 13/10/2047	मंगल 25/06/2048
मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र
25/06/2048	07/02/2049	04/11/2049	03/07/2050	11/10/2050
07/02/2049	04/11/2049	03/07/2050	11/10/2050	22/07/2051
गुरु 25/07/2048	शनि 22/03/2049	बुध 08/12/2049	केतु 09/07/2050	शुक्र 27/11/2050
शनि 30/08/2048	बुध 29/04/2049	केतु 22/12/2049	शुक्र 26/07/2050	सूर्य 11/12/2050
बुध 01/10/2048	केतु 15/05/2049	शुक्र 01/02/2050	सूर्य 31/07/2050	चंद्र 04/01/2051
केतु 15/10/2048	शुक्र 29/06/2049	सूर्य 13/02/2050	चंद्र 08/08/2050	मंगल 21/01/2051
शुक्र 21/11/2048	सूर्य 12/07/2049	चंद्र 05/03/2050	मंगल 14/08/2050	राहु 04/03/2051
सूर्य 03/12/2048	चंद्र 04/08/2049	मंगल 19/03/2050	राहु 29/08/2050	गुरु 11/04/2051
चंद्र 22/12/2048	मंगल 20/08/2049	राहु 24/04/2050	गुरु 11/09/2050	शनि 26/05/2051
मंगल 04/01/2049	राहु 29/09/2049	गुरु 26/05/2050	शनि 27/09/2050	बुध 05/07/2051
राहु 07/02/2049	गुरु 04/11/2049	शनि 03/07/2050	बुध 11/10/2050	केतु 22/07/2051

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 5 वर्ष 5 मास 11 दिन

राहु 12 वर्ष	शुक्र 21 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 15 वर्ष	मंगल 8 वर्ष
31/10/1979	12/04/1985	12/04/2006	12/04/2012	12/04/2027
12/04/1985	12/04/2006	12/04/2012	12/04/2027	12/04/2035
00/00/0000	शुक्र 12/05/1989	सूर्य 12/08/2006	चंद्र 13/05/2014	मंगल 15/11/2027
00/00/0000	सूर्य 12/07/1990	चंद्र 12/06/2007	मंगल 22/06/2015	बुध 17/02/2029
00/00/0000	चंद्र 12/06/1993	मंगल 22/11/2007	बुध 01/11/2017	शनि 14/11/2029
31/10/1979	मंगल 01/01/1995	बुध 01/11/2008	शनि 23/03/2019	गुरु 12/04/2031
मंगल 02/03/1980	बुध 22/04/1998	शनि 22/05/2009	गुरु 11/11/2021	राहु 02/03/2032
बुध 21/01/1982	शनि 01/04/2000	गुरु 12/06/2010	राहु 13/07/2023	शुक्र 21/09/2033
शनि 03/03/1983	गुरु 12/12/2003	राहु 10/02/2011	शुक्र 12/06/2026	सूर्य 03/03/2034
गुरु 12/04/1985	राहु 12/04/2006	शुक्र 12/04/2012	सूर्य 12/04/2027	चंद्र 12/04/2035

बुध 17 वर्ष	शनि 10 वर्ष	गुरु 19 वर्ष	राहु 12 वर्ष
12/04/2035	12/04/2052	12/04/2062	12/04/2081
12/04/2052	12/04/2062	12/04/2081	00/00/0000
बुध 15/12/2037	शनि 16/03/2053	गुरु 15/08/2065	राहु 12/08/2082
शनि 13/07/2039	गुरु 18/12/2054	राहु 25/09/2067	शुक्र 11/12/2084
गुरु 09/07/2042	राहु 28/01/2056	शुक्र 05/06/2071	सूर्य 12/08/2085
राहु 29/05/2044	शुक्र 07/01/2058	सूर्य 25/06/2072	चंद्र 12/04/2087
शुक्र 18/09/2047	सूर्य 29/07/2058	चंद्र 14/02/2075	मंगल 31/10/2087
सूर्य 28/08/2048	चंद्र 19/12/2059	मंगल 12/07/2076	00/00/0000
चंद्र 08/01/2051	मंगल 14/09/2060	बुध 09/07/2079	00/00/0000
मंगल 12/04/2052	बुध 12/04/2062	शनि 12/04/2081	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - मंगल 31/10/1979 02/03/1980	राहु - बुध 02/03/1980 21/01/1982	राहु - शनि 21/01/1982 03/03/1983	राहु - गुरु 03/03/1983 12/04/1985	शुक्र - शुक्र 12/04/1985 12/05/1989
00/00/0000	बुध 19/06/1980	शनि 28/02/1982	गुरु 16/07/1983	शुक्र 27/01/1986
00/00/0000	शनि 22/08/1980	गुरु 10/05/1982	राहु 10/10/1983	सूर्य 20/04/1986
00/00/0000	गुरु 21/12/1980	राहु 24/06/1982	शुक्र 08/03/1984	चंद्र 13/11/1986
00/00/0000	राहु 08/03/1981	शुक्र 11/09/1982	सूर्य 20/04/1984	मंगल 03/03/1987
31/10/1979	शुक्र 20/07/1981	सूर्य 03/10/1982	चंद्र 05/08/1984	बुध 24/10/1987
शुक्र 30/12/1979	सूर्य 27/08/1981	चंद्र 29/11/1982	मंगल 01/10/1984	शनि 10/03/1988
सूर्य 17/01/1980	चंद्र 01/12/1981	मंगल 29/12/1982	बुध 30/01/1985	गुरु 28/11/1988
चंद्र 02/03/1980	मंगल 21/01/1982	बुध 03/03/1983	शनि 12/04/1985	राहु 12/05/1989
शुक्र - सूर्य 12/05/1989 12/07/1990	शुक्र - चंद्र 12/07/1990 12/06/1993	शुक्र - मंगल 12/06/1993 01/01/1995	शुक्र - बुध 01/01/1995 22/04/1998	शुक्र - शनि 22/04/1998 01/04/2000
सूर्य 05/06/1989	चंद्र 07/12/1990	मंगल 24/07/1993	बुध 10/07/1995	शनि 27/06/1998
चंद्र 03/08/1989	मंगल 24/02/1991	बुध 21/10/1993	शनि 30/10/1995	गुरु 30/10/1998
मंगल 04/09/1989	बुध 11/08/1991	शनि 13/12/1993	गुरु 29/05/1996	राहु 17/01/1999
बुध 10/11/1989	शनि 18/11/1991	गुरु 23/03/1994	राहु 10/10/1996	शुक्र 04/06/1999
शनि 19/12/1989	गुरु 23/05/1992	राहु 25/05/1994	शुक्र 02/06/1997	सूर्य 13/07/1999
गुरु 04/03/1990	राहु 18/09/1992	शुक्र 12/09/1994	सूर्य 08/08/1997	चंद्र 20/10/1999
राहु 21/04/1990	शुक्र 14/04/1993	सूर्य 14/10/1994	चंद्र 23/01/1998	मंगल 12/12/1999
शुक्र 12/07/1990	सूर्य 12/06/1993	चंद्र 01/01/1995	मंगल 22/04/1998	बुध 01/04/2000
शुक्र - गुरु 01/04/2000 12/12/2003	शुक्र - राहु 12/12/2003 12/04/2006	सूर्य - सूर्य 12/04/2006 12/08/2006	सूर्य - चंद्र 12/08/2006 12/06/2007	सूर्य - मंगल 12/06/2007 22/11/2007
गुरु 25/11/2000	राहु 16/03/2004	सूर्य 19/04/2006	चंद्र 23/09/2006	मंगल 24/06/2007
राहु 24/04/2001	शुक्र 28/08/2004	चंद्र 06/05/2006	मंगल 16/10/2006	बुध 20/07/2007
शुक्र 11/01/2002	सूर्य 15/10/2004	मंगल 15/05/2006	बुध 03/12/2006	शनि 04/08/2007
सूर्य 27/03/2002	चंद्र 10/02/2005	बुध 03/06/2006	शनि 31/12/2006	गुरु 01/09/2007
चंद्र 01/10/2002	मंगल 14/04/2005	शनि 14/06/2006	गुरु 22/02/2007	राहु 19/09/2007
मंगल 09/01/2003	बुध 26/08/2005	गुरु 06/07/2006	राहु 28/03/2007	शुक्र 21/10/2007
बुध 09/08/2003	शनि 13/11/2005	राहु 19/07/2006	शुक्र 26/05/2007	सूर्य 30/10/2007
शनि 12/12/2003	गुरु 12/04/2006	शुक्र 12/08/2006	सूर्य 12/06/2007	चंद्र 22/11/2007



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध 22/11/2007 01/11/2008	सूर्य - शनि 01/11/2008 22/05/2009	सूर्य - गुरु 22/05/2009 12/06/2010	सूर्य - राहु 12/06/2010 10/02/2011	सूर्य - शुक्र 10/02/2011 12/04/2012
बुध 15/01/2008 शनि 16/02/2008 गुरु 17/04/2008 राहु 25/05/2008 शुक्र 31/07/2008 सूर्य 19/08/2008 चंद्र 06/10/2008 मंगल 01/11/2008	शनि 19/11/2008 गुरु 25/12/2008 राहु 17/01/2009 शुक्र 25/02/2009 सूर्य 08/03/2009 चंद्र 05/04/2009 मंगल 21/04/2009 बुध 22/05/2009	गुरु 29/07/2009 राहु 10/09/2009 शुक्र 24/11/2009 सूर्य 16/12/2009 चंद्र 07/02/2010 मंगल 08/03/2010 बुध 07/05/2010 शनि 12/06/2010	राहु 09/07/2010 शुक्र 25/08/2010 सूर्य 08/09/2010 चंद्र 12/10/2010 मंगल 30/10/2010 बुध 07/12/2010 शनि 30/12/2010 गुरु 10/02/2011	शुक्र 04/05/2011 सूर्य 28/05/2011 चंद्र 26/07/2011 मंगल 27/08/2011 बुध 02/11/2011 शनि 11/12/2011 गुरु 24/02/2012 राहु 12/04/2012
चंद्र - चंद्र 12/04/2012 13/05/2014	चंद्र - मंगल 13/05/2014 22/06/2015	चंद्र - बुध 22/06/2015 01/11/2017	चंद्र - शनि 01/11/2017 23/03/2019	चंद्र - गुरु 23/03/2019 11/11/2021
चंद्र 26/07/2012 मंगल 21/09/2012 बुध 18/01/2013 शनि 30/03/2013 गुरु 11/08/2013 राहु 03/11/2013 शुक्र 31/03/2014 सूर्य 13/05/2014	मंगल 12/06/2014 बुध 15/08/2014 शनि 21/09/2014 गुरु 01/12/2014 राहु 16/01/2015 शुक्र 04/04/2015 सूर्य 27/04/2015 चंद्र 22/06/2015	बुध 05/11/2015 शनि 24/01/2016 गुरु 24/06/2016 राहु 28/09/2016 शुक्र 14/03/2017 सूर्य 01/05/2017 चंद्र 29/08/2017 मंगल 01/11/2017	शनि 18/12/2017 गुरु 17/03/2018 राहु 12/05/2018 शुक्र 19/08/2018 सूर्य 16/09/2018 चंद्र 26/11/2018 मंगल 02/01/2019 बुध 23/03/2019	गुरु 09/09/2019 राहु 25/12/2019 शुक्र 29/06/2020 सूर्य 22/08/2020 चंद्र 03/01/2021 मंगल 15/03/2021 बुध 14/08/2021 शनि 11/11/2021
चंद्र - राहु 11/11/2021 13/07/2023	चंद्र - शुक्र 13/07/2023 12/06/2026	चंद्र - सूर्य 12/06/2026 12/04/2027	मंगल - मंगल 12/04/2027 15/11/2027	मंगल - बुध 15/11/2027 17/02/2029
राहु 18/01/2022 शुक्र 16/05/2022 सूर्य 19/06/2022 चंद्र 11/09/2022 मंगल 26/10/2022 बुध 30/01/2023 शनि 28/03/2023 गुरु 13/07/2023	शुक्र 05/02/2024 सूर्य 04/04/2024 चंद्र 30/08/2024 मंगल 17/11/2024 बुध 04/05/2025 शनि 10/08/2025 गुरु 14/02/2026 राहु 12/06/2026	सूर्य 29/06/2026 चंद्र 10/08/2026 मंगल 02/09/2026 बुध 20/10/2026 शनि 17/11/2026 गुरु 09/01/2027 राहु 12/02/2027 शुक्र 12/04/2027	मंगल 28/04/2027 बुध 01/06/2027 शनि 22/06/2027 गुरु 30/07/2027 राहु 23/08/2027 शुक्र 04/10/2027 सूर्य 16/10/2027 चंद्र 15/11/2027	बुध 26/01/2028 शनि 09/03/2028 गुरु 29/05/2028 राहु 19/07/2028 शुक्र 16/10/2028 सूर्य 11/11/2028 चंद्र 14/01/2029 मंगल 17/02/2029



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि 17/02/2029 14/11/2029	मंगल - गुरु 14/11/2029 12/04/2031	मंगल - राहु 12/04/2031 02/03/2032	मंगल - शुक्र 02/03/2032 21/09/2033	मंगल - सूर्य 21/09/2033 03/03/2034
शनि 14/03/2029 गुरु 30/04/2029 राहु 30/05/2029 शुक्र 22/07/2029 सूर्य 06/08/2029 चंद्र 13/09/2029 मंगल 03/10/2029 बुध 14/11/2029	गुरु 13/02/2030 राहु 11/04/2030 शुक्र 20/07/2030 सूर्य 17/08/2030 चंद्र 28/10/2030 मंगल 05/12/2030 बुध 24/02/2031 शनि 12/04/2031	राहु 18/05/2031 शुक्र 21/07/2031 सूर्य 08/08/2031 चंद्र 22/09/2031 मंगल 16/10/2031 बुध 06/12/2031 शनि 05/01/2032 गुरु 02/03/2032	शुक्र 21/06/2032 सूर्य 22/07/2032 चंद्र 09/10/2032 मंगल 20/11/2032 बुध 18/02/2033 शनि 11/04/2033 गुरु 20/07/2033 राहु 21/09/2033	सूर्य 30/09/2033 चंद्र 23/10/2033 मंगल 04/11/2033 बुध 29/11/2033 शनि 14/12/2033 गुरु 12/01/2034 राहु 30/01/2034 शुक्र 03/03/2034
मंगल - चंद्र 03/03/2034 12/04/2035	बुध - बुध 12/04/2035 15/12/2037	बुध - शनि 15/12/2037 13/07/2039	बुध - गुरु 13/07/2039 09/07/2042	बुध - राहु 09/07/2042 29/05/2044
चंद्र 28/04/2034 मंगल 28/05/2034 बुध 31/07/2034 शनि 06/09/2034 गुरु 17/11/2034 राहु 01/01/2035 शुक्र 21/03/2035 सूर्य 12/04/2035	बुध 13/09/2035 शनि 13/12/2035 गुरु 02/06/2036 राहु 18/09/2036 शुक्र 27/03/2037 सूर्य 21/05/2037 चंद्र 03/10/2037 मंगल 15/12/2037	शनि 06/02/2038 गुरु 18/05/2038 राहु 21/07/2038 शुक्र 10/11/2038 सूर्य 12/12/2038 चंद्र 02/03/2039 मंगल 13/04/2039 बुध 13/07/2039	गुरु 21/01/2040 राहु 21/05/2040 शुक्र 20/12/2040 सूर्य 18/02/2041 चंद्र 20/07/2041 मंगल 09/10/2041 बुध 30/03/2042 शनि 09/07/2042	राहु 24/09/2042 शुक्र 05/02/2043 सूर्य 15/03/2043 चंद्र 19/06/2043 मंगल 09/08/2043 बुध 26/11/2043 शनि 29/01/2044 गुरु 29/05/2044
बुध - शुक्र 29/05/2044 18/09/2047	बुध - सूर्य 18/09/2047 28/08/2048	बुध - चंद्र 28/08/2048 08/01/2051	बुध - मंगल 08/01/2051 12/04/2052	शनि - शनि 12/04/2052 16/03/2053
शुक्र 19/01/2045 सूर्य 27/03/2045 चंद्र 10/09/2045 मंगल 09/12/2045 बुध 17/06/2046 शनि 07/10/2046 गुरु 07/05/2047 राहु 18/09/2047	सूर्य 07/10/2047 चंद्र 24/11/2047 मंगल 20/12/2047 बुध 12/02/2048 शनि 15/03/2048 गुरु 15/05/2048 राहु 22/06/2048 शुक्र 28/08/2048	चंद्र 26/12/2048 मंगल 28/02/2049 बुध 14/07/2049 शनि 02/10/2049 गुरु 02/03/2050 राहु 06/06/2050 शुक्र 21/11/2050 सूर्य 08/01/2051	मंगल 11/02/2051 बुध 24/04/2051 शनि 06/06/2051 गुरु 26/08/2051 राहु 16/10/2051 शुक्र 13/01/2052 सूर्य 08/02/2052 चंद्र 12/04/2052	शनि 13/05/2052 गुरु 11/07/2052 राहु 18/08/2052 शुक्र 23/10/2052 सूर्य 11/11/2052 चंद्र 28/12/2052 मंगल 22/01/2053 बुध 16/03/2053



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु	शनि - राहु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र
16/03/2053	18/12/2054	28/01/2056	07/01/2058	29/07/2058
18/12/2054	28/01/2056	07/01/2058	29/07/2058	19/12/2059
गुरु 07/07/2053	राहु 01/02/2055	शुक्र 14/06/2056	सूर्य 19/01/2058	चंद्र 08/10/2058
राहु 16/09/2053	शुक्र 21/04/2055	सूर्य 24/07/2056	चंद्र 16/02/2058	मंगल 14/11/2058
शुक्र 19/01/2054	सूर्य 14/05/2055	चंद्र 30/10/2056	मंगल 03/03/2058	बुध 02/02/2059
सूर्य 24/02/2054	चंद्र 09/07/2055	मंगल 22/12/2056	बुध 04/04/2058	शनि 21/03/2059
चंद्र 24/05/2054	मंगल 08/08/2055	बुध 13/04/2057	शनि 23/04/2058	गुरु 18/06/2059
मंगल 11/07/2054	बुध 11/10/2055	शनि 18/06/2057	गुरु 28/05/2058	राहु 14/08/2059
बुध 20/10/2054	शनि 18/11/2055	गुरु 21/10/2057	राहु 20/06/2058	शुक्र 20/11/2059
शनि 18/12/2054	गुरु 28/01/2056	राहु 07/01/2058	शुक्र 29/07/2058	सूर्य 19/12/2059
शनि - मंगल	शनि - बुध	गुरु - गुरु	गुरु - राहु	गुरु - शुक्र
19/12/2059	14/09/2060	12/04/2062	15/08/2065	25/09/2067
14/09/2060	12/04/2062	15/08/2065	25/09/2067	05/06/2071
मंगल 08/01/2060	बुध 14/12/2060	गुरु 13/11/2062	राहु 09/11/2065	शुक्र 13/06/2068
बुध 19/02/2060	शनि 05/02/2061	राहु 29/03/2063	शुक्र 08/04/2066	सूर्य 27/08/2068
शनि 15/03/2060	गुरु 17/05/2061	शुक्र 21/11/2063	सूर्य 20/05/2066	चंद्र 03/03/2069
गुरु 02/05/2060	राहु 20/07/2061	सूर्य 28/01/2064	चंद्र 05/09/2066	मंगल 11/06/2069
राहु 01/06/2060	शुक्र 09/11/2061	चंद्र 15/07/2064	मंगल 01/11/2066	बुध 09/01/2070
शुक्र 24/07/2060	सूर्य 11/12/2061	मंगल 14/10/2064	बुध 02/03/2067	शनि 14/05/2070
सूर्य 08/08/2060	चंद्र 01/03/2062	बुध 24/04/2065	शनि 12/05/2067	गुरु 07/01/2071
चंद्र 14/09/2060	मंगल 12/04/2062	शनि 15/08/2065	गुरु 25/09/2067	राहु 05/06/2071
गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - बुध	गुरु - शनि
05/06/2071	25/06/2072	14/02/2075	12/07/2076	09/07/2079
25/06/2072	14/02/2075	12/07/2076	09/07/2079	12/04/2081
सूर्य 27/06/2071	चंद्र 06/11/2072	मंगल 24/03/2075	बुध 31/12/2076	शनि 07/09/2079
चंद्र 19/08/2071	मंगल 16/01/2073	बुध 13/06/2075	शनि 11/04/2077	गुरु 29/12/2079
मंगल 17/09/2071	बुध 17/06/2073	शनि 30/07/2075	गुरु 20/10/2077	राहु 09/03/2080
बुध 17/11/2071	शनि 14/09/2073	गुरु 29/10/2075	राहु 19/02/2078	शुक्र 12/07/2080
शनि 22/12/2071	गुरु 03/03/2074	राहु 25/12/2075	शुक्र 19/09/2078	सूर्य 17/08/2080
गुरु 28/02/2072	राहु 18/06/2074	शुक्र 03/04/2076	सूर्य 19/11/2078	चंद्र 14/11/2080
राहु 11/04/2072	शुक्र 22/12/2074	सूर्य 02/05/2076	चंद्र 19/04/2079	मंगल 01/01/2081
शुक्र 25/06/2072	सूर्य 14/02/2075	चंद्र 12/07/2076	मंगल 09/07/2079	बुध 12/04/2081



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 1 वर्ष 1 मास 1 दिन

धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
31/10/1979	01/12/1980	01/12/1984	01/12/1989	01/12/1995
01/12/1980	01/12/1984	01/12/1989	01/12/1995	01/12/2002
00/00/0000	भाम 12/05/1981	भद्रि 11/08/1985	उल्क 01/12/1990	सिद्ध 11/04/1997
00/00/0000	भद्रि 01/12/1981	उल्क 12/06/1986	सिद्ध 31/01/1992	संक 01/11/1998
00/00/0000	उल्क 01/08/1982	सिद्ध 02/06/1987	संक 01/06/1993	मंग 11/01/1999
31/10/1979	सिद्ध 12/05/1983	संक 12/07/1988	मंग 01/08/1993	पिंग 02/06/1999
सिद्ध 01/01/1980	संक 01/04/1984	मंग 31/08/1988	पिंग 01/12/1993	धांय 01/01/2000
संक 31/08/1980	मंग 12/05/1984	पिंग 11/12/1988	धांय 01/06/1994	भाम 11/10/2000
मंग 01/10/1980	पिंग 01/08/1984	धांय 12/05/1989	भाम 31/01/1995	भद्रि 01/10/2001
पिंग 01/12/1980	धांय 01/12/1984	भाम 01/12/1989	भद्रि 01/12/1995	उल्क 01/12/2002

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष
01/12/2002	01/12/2010	01/12/2011	01/12/2013	01/12/2016
01/12/2010	01/12/2011	01/12/2013	01/12/2016	01/12/2020
संक 10/09/2004	मंग 11/12/2010	पिंग 11/01/2012	धांय 02/03/2014	भाम 12/05/2017
मंग 01/12/2004	पिंग 01/01/2011	धांय 12/03/2012	भाम 02/07/2014	भद्रि 01/12/2017
पिंग 12/05/2005	धांय 31/01/2011	भाम 01/06/2012	भद्रि 01/12/2014	उल्क 01/08/2018
धांय 10/01/2006	भाम 13/03/2011	भद्रि 10/09/2012	उल्क 02/06/2015	सिद्ध 12/05/2019
भाम 01/12/2006	भद्रि 02/05/2011	उल्क 10/01/2013	सिद्ध 01/01/2016	संक 01/04/2020
भद्रि 11/01/2008	उल्क 02/07/2011	सिद्ध 01/06/2013	संक 31/08/2016	मंग 12/05/2020
उल्क 12/05/2009	सिद्ध 11/09/2011	संक 11/11/2013	मंग 01/10/2016	पिंग 01/08/2020
सिद्ध 01/12/2010	संक 01/12/2011	मंग 01/12/2013	पिंग 01/12/2016	धांय 01/12/2020

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष 01/12/2020 01/12/2025	उल्का 6 वर्ष 01/12/2025 01/12/2031	सिद्धा 7 वर्ष 01/12/2031 01/12/2038	संकटा 8 वर्ष 01/12/2038 01/12/2046	मंगला 1 वर्ष 01/12/2046 01/12/2047
भद्रि 11/08/2021 उल्क 12/06/2022 सिद्ध 02/06/2023 संक 12/07/2024 मंग 31/08/2024 पिंग 11/12/2024 धांय 12/05/2025 भ्राम 01/12/2025	उल्क 01/12/2026 सिद्ध 31/01/2028 संक 01/06/2029 मंग 01/08/2029 पिंग 01/12/2029 धांय 01/06/2030 भ्राम 31/01/2031 भद्रि 01/12/2031	सिद्ध 11/04/2033 संक 01/11/2034 मंग 11/01/2035 पिंग 02/06/2035 धांय 01/01/2036 भ्राम 11/10/2036 भद्रि 01/10/2037 उल्क 01/12/2038	संक 10/09/2040 मंग 01/12/2040 पिंग 12/05/2041 धांय 10/01/2042 भ्राम 01/12/2042 भद्रि 11/01/2044 उल्क 12/05/2045 सिद्ध 01/12/2046	मंग 11/12/2046 पिंग 01/01/2047 धांय 31/01/2047 भ्राम 13/03/2047 भद्रि 02/05/2047 उल्क 02/07/2047 सिद्ध 11/09/2047 संक 01/12/2047
पिंगला 2 वर्ष 01/12/2047 01/12/2049	धान्या 3 वर्ष 01/12/2049 01/12/2052	भ्रामरी 4 वर्ष 01/12/2052 01/12/2056	भद्रिका 5 वर्ष 01/12/2056 01/12/2061	उल्का 6 वर्ष 01/12/2061 01/12/2067
पिंग 11/01/2048 धांय 12/03/2048 भ्राम 01/06/2048 भद्रि 10/09/2048 उल्क 10/01/2049 सिद्ध 01/06/2049 संक 11/11/2049 मंग 01/12/2049	धांय 02/03/2050 भ्राम 02/07/2050 भद्रि 01/12/2050 उल्क 02/06/2051 सिद्ध 01/01/2052 संक 31/08/2052 मंग 01/10/2052 पिंग 01/12/2052	भ्राम 12/05/2053 भद्रि 01/12/2053 उल्क 01/08/2054 सिद्ध 12/05/2055 संक 01/04/2056 मंग 12/05/2056 पिंग 01/08/2056 धांय 01/12/2056	भद्रि 11/08/2057 उल्क 12/06/2058 सिद्ध 02/06/2059 संक 12/07/2060 मंग 31/08/2060 पिंग 11/12/2060 धांय 12/05/2061 भ्राम 01/12/2061	उल्क 01/12/2062 सिद्ध 31/01/2064 संक 01/06/2065 मंग 01/08/2065 पिंग 01/12/2065 धांय 01/06/2066 भ्राम 31/01/2067 भद्रि 01/12/2067
सिद्धा 7 वर्ष 01/12/2067 01/12/2074	संकटा 8 वर्ष 01/12/2074 01/12/2082	मंगला 1 वर्ष 01/12/2082 01/12/2083	पिंगला 2 वर्ष 01/12/2083 01/12/2085	धान्या 3 वर्ष 01/12/2085 00/00/0000
सिद्ध 11/04/2069 संक 01/11/2070 मंग 11/01/2071 पिंग 02/06/2071 धांय 01/01/2072 भ्राम 11/10/2072 भद्रि 01/10/2073 उल्क 01/12/2074	संक 10/09/2076 मंग 01/12/2076 पिंग 12/05/2077 धांय 10/01/2078 भ्राम 01/12/2078 भद्रि 11/01/2080 उल्क 12/05/2081 सिद्ध 01/12/2082	मंग 11/12/2082 पिंग 01/01/2083 धांय 31/01/2083 भ्राम 13/03/2083 भद्रि 02/05/2083 उल्क 02/07/2083 सिद्ध 11/09/2083 संक 01/12/2083	पिंग 11/01/2084 धांय 12/03/2084 भ्राम 01/06/2084 भद्रि 10/09/2084 उल्क 10/01/2085 सिद्ध 01/06/2085 संक 11/11/2085 मंग 01/12/2085	धांय 02/03/2086 भ्राम 02/07/2086 भद्रि 01/12/2086 उल्क 02/06/2087 सिद्ध 31/10/2087 00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - उल्क	उल्क - सिद्ध	उल्क - संक	उल्क - मंग	उल्क - पिंग
01/12/2025 01/12/2026	01/12/2026 31/01/2028	31/01/2028 01/06/2029	01/06/2029 01/08/2029	01/08/2029 01/12/2029
उल्क 31/01/2026	सिद्ध 22/02/2027	संक 18/05/2028	मंग 03/06/2029	पिंग 08/08/2029
सिद्ध 12/04/2026	संक 28/05/2027	मंग 01/06/2028	पिंग 06/06/2029	धांय 18/08/2029
संक 02/07/2026	मंग 08/06/2027	पिंग 28/06/2028	धांय 11/06/2029	भ्राम 01/09/2029
मंग 12/07/2026	पिंग 02/07/2027	धांय 08/08/2028	भ्राम 18/06/2029	भद्रि 17/09/2029
पिंग 01/08/2026	धांय 07/08/2027	भ्राम 01/10/2028	भद्रि 27/06/2029	उल्क 08/10/2029
धांय 01/09/2026	भ्राम 23/09/2027	भद्रि 07/12/2028	उल्क 07/07/2029	सिद्ध 31/10/2029
भ्राम 11/10/2026	भद्रि 21/11/2027	उल्क 27/02/2029	सिद्ध 19/07/2029	संक 27/11/2029
भद्रि 01/12/2026	उल्क 31/01/2028	सिद्ध 01/06/2029	संक 01/08/2029	मंग 01/12/2029
उल्क - धांय	उल्क - भ्राम	उल्क - भद्रि	सिद्ध - सिद्ध	सिद्ध - संक
01/12/2029 01/06/2030	01/06/2030 31/01/2031	31/01/2031 01/12/2031	01/12/2031 11/04/2033	11/04/2033 01/11/2034
धांय 16/12/2029	भ्राम 29/06/2030	भद्रि 14/03/2031	सिद्ध 07/03/2032	संक 16/08/2033
भ्राम 05/01/2030	भद्रि 01/08/2030	उल्क 04/05/2031	संक 25/06/2032	मंग 01/09/2033
भद्रि 31/01/2030	उल्क 11/09/2030	सिद्ध 02/07/2031	मंग 09/07/2032	पिंग 02/10/2033
उल्क 02/03/2030	सिद्ध 28/10/2030	संक 08/09/2031	पिंग 06/08/2032	धांय 18/11/2033
सिद्ध 07/04/2030	संक 21/12/2030	मंग 16/09/2031	धांय 16/09/2032	भ्राम 21/01/2034
संक 17/05/2030	मंग 28/12/2030	पिंग 03/10/2031	भ्राम 11/11/2032	भद्रि 09/04/2034
मंग 22/05/2030	पिंग 11/01/2031	धांय 29/10/2031	भद्रि 19/01/2033	उल्क 13/07/2034
पिंग 01/06/2030	धांय 31/01/2031	भ्राम 01/12/2031	उल्क 11/04/2033	सिद्ध 01/11/2034
सिद्ध - मंग	सिद्ध - पिंग	सिद्ध - धांय	सिद्ध - भ्राम	सिद्ध - भद्रि
01/11/2034 11/01/2035	11/01/2035 02/06/2035	02/06/2035 01/01/2036	01/01/2036 11/10/2036	11/10/2036 01/10/2037
मंग 03/11/2034	पिंग 19/01/2035	धांय 19/06/2035	भ्राम 01/02/2036	भद्रि 29/11/2036
पिंग 07/11/2034	धांय 30/01/2035	भ्राम 13/07/2035	भद्रि 12/03/2036	उल्क 27/01/2037
धांय 12/11/2034	भ्राम 15/02/2035	भद्रि 12/08/2035	उल्क 28/04/2036	सिद्ध 06/04/2037
भ्राम 20/11/2034	भद्रि 07/03/2035	उल्क 16/09/2035	सिद्ध 22/06/2036	संक 24/06/2037
भद्रि 30/11/2034	उल्क 31/03/2035	सिद्ध 28/10/2035	संक 24/08/2036	मंग 04/07/2037
उल्क 12/12/2034	सिद्ध 27/04/2035	संक 14/12/2035	मंग 01/09/2036	पिंग 24/07/2037
सिद्ध 26/12/2034	संक 29/05/2035	मंग 20/12/2035	पिंग 17/09/2036	धांय 22/08/2037
संक 11/01/2035	मंग 02/06/2035	पिंग 01/01/2036	धांय 11/10/2036	भ्राम 01/10/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - उल्क	संक - संक	संक - मंग	संक - पिंग	संक - धांय
01/10/2037	01/12/2038	10/09/2040	01/12/2040	12/05/2041
01/12/2038	10/09/2040	01/12/2040	12/05/2041	10/01/2042
उल्क 11/12/2037	संक 24/04/2039	मंग 13/09/2040	पिंग 10/12/2040	धांय 01/06/2041
सिद्ध 04/03/2038	मंग 12/05/2039	पिंग 17/09/2040	धांय 23/12/2040	भ्राम 28/06/2041
संक 07/06/2038	पिंग 17/06/2039	धांय 24/09/2040	भ्राम 10/01/2041	भद्रि 01/08/2041
मंग 18/06/2038	धांय 11/08/2039	भ्राम 03/10/2040	भद्रि 02/02/2041	उल्क 11/09/2041
पिंग 12/07/2038	भ्राम 22/10/2039	भद्रि 14/10/2040	उल्क 01/03/2041	सिद्ध 28/10/2041
धांय 17/08/2038	भद्रि 20/01/2040	उल्क 28/10/2040	सिद्ध 01/04/2041	संक 21/12/2041
भ्राम 03/10/2038	उल्क 07/05/2040	सिद्ध 13/11/2040	संक 07/05/2041	मंग 28/12/2041
भद्रि 01/12/2038	सिद्ध 10/09/2040	संक 01/12/2040	मंग 12/05/2041	पिंग 10/01/2042
संक - भ्राम	संक - भद्रि	संक - उल्क	संक - सिद्ध	मंग - मंग
10/01/2042	01/12/2042	11/01/2044	12/05/2045	01/12/2046
01/12/2042	11/01/2044	12/05/2045	01/12/2046	11/12/2046
भ्राम 15/02/2042	भद्रि 26/01/2043	उल्क 01/04/2044	सिद्ध 30/08/2045	मंग 01/12/2046
भद्रि 02/04/2042	उल्क 04/04/2043	सिद्ध 05/07/2044	संक 04/01/2046	पिंग 02/12/2046
उल्क 26/05/2042	सिद्ध 22/06/2043	संक 21/10/2044	मंग 19/01/2046	धांय 03/12/2046
सिद्ध 28/07/2042	संक 20/09/2043	मंग 04/11/2044	पिंग 20/02/2046	भ्राम 04/12/2046
संक 08/10/2042	मंग 01/10/2043	पिंग 01/12/2044	धांय 08/04/2046	भद्रि 05/12/2046
मंग 17/10/2042	पिंग 24/10/2043	धांय 10/01/2045	भ्राम 10/06/2046	उल्क 07/12/2046
पिंग 04/11/2042	धांय 27/11/2043	भ्राम 05/03/2045	भद्रि 28/08/2046	सिद्ध 09/12/2046
धांय 01/12/2042	भ्राम 11/01/2044	भद्रि 12/05/2045	उल्क 01/12/2046	संक 11/12/2046
मंग - पिंग	मंग - धांय	मंग - भ्राम	मंग - भद्रि	मंग - उल्क
11/12/2046	01/01/2047	31/01/2047	13/03/2047	02/05/2047
01/01/2047	31/01/2047	13/03/2047	02/05/2047	02/07/2047
पिंग 12/12/2046	धांय 03/01/2047	भ्राम 04/02/2047	भद्रि 20/03/2047	उल्क 12/05/2047
धांय 14/12/2046	भ्राम 06/01/2047	भद्रि 10/02/2047	उल्क 28/03/2047	सिद्ध 24/05/2047
भ्राम 16/12/2046	भद्रि 11/01/2047	उल्क 17/02/2047	सिद्ध 07/04/2047	संक 07/06/2047
भद्रि 19/12/2046	उल्क 16/01/2047	सिद्ध 25/02/2047	संक 18/04/2047	मंग 08/06/2047
उल्क 22/12/2046	सिद्ध 22/01/2047	संक 06/03/2047	मंग 20/04/2047	पिंग 12/06/2047
सिद्ध 26/12/2046	संक 28/01/2047	मंग 07/03/2047	पिंग 22/04/2047	धांय 17/06/2047
संक 31/12/2046	मंग 29/01/2047	पिंग 09/03/2047	धांय 27/04/2047	भ्राम 24/06/2047
मंग 01/01/2047	पिंग 31/01/2047	धांय 13/03/2047	भ्राम 02/05/2047	भद्रि 02/07/2047

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 13 वर्ष 1 मास 24 दिन

कुल दशाकाल : 85 वर्ष

तिथि : शतभिषा - 3 अपसव्य

देह : कुम्भ जीव : कन्या

तुला 16 वर्ष	वृश्चिक 7 वर्ष	मीन 10 वर्ष	कुम्भ 4 वर्ष	मकर 4 वर्ष
31/10/1979	23/12/1992	24/12/1999	24/12/2009	24/12/2013
23/12/1992	24/12/1999	24/12/2009	24/12/2013	24/12/2017
तुला 29/12/1979	वृश्चिक 22/07/1993	मीन 26/02/2001	कुंभ 02/03/2010	मक 02/03/2014
वृश्चिक 23/04/1981	मीन 19/05/1994	कुंभ 17/08/2001	मक 10/05/2010	मिथु 04/08/2014
मीन 11/03/1983	कुंभ 16/09/1994	मक 05/02/2002	मिथु 12/10/2010	सिंह 29/10/2014
कुंभ 11/12/1983	मक 14/01/1995	मिथु 26/02/2003	सिंह 06/01/2011	कर्क 25/10/2015
मक 11/09/1984	मिथु 12/10/1995	सिंह 29/09/2003	कर्क 02/01/2012	कन्या 28/03/2016
मिथु 23/05/1986	सिंह 11/03/1996	कर्क 20/03/2006	कन्या 05/06/2012	तुला 28/12/2016
सिंह 02/05/1987	कर्क 02/12/1997	कन्या 10/04/2007	तुला 07/03/2013	वृश्चिक 27/04/2017
कर्क 15/04/1991	कन्या 30/08/1998	तुला 26/02/2009	वृश्चिक 05/07/2013	मीन 16/10/2017
कन्या 23/12/1992	तुला 24/12/1999	वृश्चिक 24/12/2009	मीन 24/12/2013	कुंभ 24/12/2017
मिथुन 9 वर्ष	सिंह 5 वर्ष	कर्क 21 वर्ष	कन्या 9 वर्ष	तुला 16 वर्ष
24/12/2017	24/12/2026	24/12/2031	23/12/2052	24/12/2061
24/12/2026	24/12/2031	23/12/2052	24/12/2061	00/00/0000
मिथु 07/12/2018	सिंह 10/04/2027	कर्क 02/03/2037	कन्या 07/12/2053	तुला 30/10/2064
सिंह 18/06/2019	कर्क 05/07/2028	कन्या 23/05/2039	तुला 17/08/2055	00/00/0000
कर्क 07/09/2021	कन्या 14/01/2029	तुला 06/05/2043	वृश्चिक 14/05/2056	00/00/0000
कन्या 21/08/2022	तुला 24/12/2029	वृश्चिक 27/01/2045	मीन 05/06/2057	00/00/0000
तुला 01/05/2024	वृश्चिक 23/05/2030	मीन 18/07/2047	कुंभ 06/11/2057	00/00/0000
वृश्चिक 27/01/2025	मीन 24/12/2030	कुंभ 13/07/2048	मक 10/04/2058	00/00/0000
मीन 18/02/2026	कुंभ 20/03/2031	मक 09/07/2049	मिथु 24/03/2059	00/00/0000
कुंभ 22/07/2026	मक 14/06/2031	मिथु 29/09/2051	सिंह 04/10/2059	00/00/0000
मक 24/12/2026	मिथु 24/12/2031	सिंह 23/12/2052	कर्क 24/12/2061	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - मीन 27/01/2025 18/02/2026	मिथु - कुंभ 18/02/2026 22/07/2026	मिथु - मक 22/07/2026 24/12/2026	सिंह - सिंह 24/12/2026 10/04/2027	सिंह - कर्क 10/04/2027 05/07/2028
मीन 13/03/2025 कुंभ 01/04/2025 मक 19/04/2025 मिथु 30/05/2025 सिंह 21/06/2025 कर्क 25/09/2025 कन्या 05/11/2025 तुला 17/01/2026 वृश्चि 18/02/2026	कुंभ 25/02/2026 मक 04/03/2026 मिथु 21/03/2026 सिंह 30/03/2026 कर्क 07/05/2026 कन्या 23/05/2026 तुला 21/06/2026 वृश्चि 04/07/2026 मीन 22/07/2026	मक 30/07/2026 मिथु 15/08/2026 सिंह 24/08/2026 कर्क 01/10/2026 कन्या 18/10/2026 तुला 16/11/2026 वृश्चि 29/11/2026 मीन 17/12/2026 कुंभ 24/12/2026	सिंह 30/12/2026 कर्क 26/01/2027 कन्या 06/02/2027 तुला 26/02/2027 वृश्चि 07/03/2027 मीन 20/03/2027 कुंभ 25/03/2027 मक 30/03/2027 मिथु 10/04/2027	कर्क 31/07/2027 कन्या 17/09/2027 तुला 11/12/2027 वृश्चि 17/01/2028 मीन 10/03/2028 कुंभ 31/03/2028 मक 21/04/2028 मिथु 08/06/2028 सिंह 05/07/2028
सिंह - कन्या 05/07/2028 14/01/2029	सिंह - तुला 14/01/2029 24/12/2029	सिंह - वृश्चि 24/12/2029 23/05/2030	सिंह - मीन 23/05/2030 24/12/2030	सिंह - कुंभ 24/12/2030 20/03/2031
कन्या 25/07/2028 तुला 30/08/2028 वृश्चि 15/09/2028 मीन 08/10/2028 कुंभ 17/10/2028 मक 26/10/2028 मिथु 16/11/2028 सिंह 27/11/2028 कर्क 14/01/2029	तुला 20/03/2029 वृश्चि 17/04/2029 मीन 27/05/2029 कुंभ 13/06/2029 मक 29/06/2029 मिथु 04/08/2029 सिंह 24/08/2029 कर्क 17/11/2029 कन्या 24/12/2029	वृश्चि 05/01/2030 मीन 23/01/2030 कुंभ 30/01/2030 मक 06/02/2030 मिथु 22/02/2030 सिंह 03/03/2030 कर्क 09/04/2030 कन्या 25/04/2030 तुला 23/05/2030	मीन 17/06/2030 कुंभ 28/06/2030 मक 08/07/2030 मिथु 30/07/2030 सिंह 12/08/2030 कर्क 04/10/2030 कन्या 27/10/2030 तुला 06/12/2030 वृश्चि 24/12/2030	कुंभ 28/12/2030 मक 01/01/2031 मिथु 10/01/2031 सिंह 15/01/2031 कर्क 05/02/2031 कन्या 15/02/2031 तुला 03/03/2031 वृश्चि 10/03/2031 मीन 20/03/2031
सिंह - मक 20/03/2031 14/06/2031	सिंह - मिथु 14/06/2031 24/12/2031	कर्क - कर्क 24/12/2031 02/03/2037	कर्क - कन्या 02/03/2037 23/05/2039	कर्क - तुला 23/05/2039 06/05/2043
मक 24/03/2031 मिथु 02/04/2031 सिंह 07/04/2031 कर्क 28/04/2031 कन्या 07/05/2031 तुला 24/05/2031 वृश्चि 31/05/2031 मीन 10/06/2031 कुंभ 14/06/2031	मिथु 04/07/2031 सिंह 16/07/2031 कर्क 01/09/2031 कन्या 22/09/2031 तुला 28/10/2031 वृश्चि 13/11/2031 मीन 06/12/2031 कुंभ 15/12/2031 मक 24/12/2031	कर्क 05/04/2033 कन्या 23/10/2033 तुला 15/10/2034 वृश्चि 20/03/2035 मीन 29/10/2035 कुंभ 26/01/2036 मक 24/04/2036 मिथु 11/11/2036 सिंह 02/03/2037	कन्या 27/05/2037 तुला 27/10/2037 वृश्चि 02/01/2038 मीन 08/04/2038 कुंभ 16/05/2038 मक 23/06/2038 मिथु 17/09/2038 सिंह 04/11/2038 कर्क 23/05/2039	तुला 19/02/2040 वृश्चि 17/06/2040 मीन 04/12/2040 कुंभ 10/02/2041 मक 19/04/2041 मिथु 19/09/2041 सिंह 13/12/2041 कर्क 04/12/2042 कन्या 06/05/2043

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - वृश्चि 06/05/2043 27/01/2045	कर्क - मीन 27/01/2045 18/07/2047	कर्क - कुंभ 18/07/2047 13/07/2048	कर्क - मक 13/07/2048 09/07/2049	कर्क - मिथु 09/07/2049 29/09/2051
वृश्चि 27/06/2043 मीन 10/09/2043 कुंभ 09/10/2043 मक 08/11/2043 मिथु 14/01/2044 सिंह 20/02/2044 कर्क 25/07/2044 कन्या 30/09/2044 तुला 27/01/2045	मीन 13/05/2045 कुंभ 24/06/2045 मक 06/08/2045 मिथु 10/11/2045 सिंह 02/01/2046 कर्क 13/08/2046 कन्या 16/11/2046 तुला 05/05/2047 वृश्चि 18/07/2047	कुंभ 04/08/2047 मक 21/08/2047 मिथु 28/09/2047 सिंह 20/10/2047 कर्क 17/01/2048 कन्या 24/02/2048 तुला 02/05/2048 वृश्चि 01/06/2048 मीन 13/07/2048	मक 30/07/2048 मिथु 06/09/2048 सिंह 28/09/2048 कर्क 26/12/2048 कन्या 02/02/2049 तुला 11/04/2049 वृश्चि 11/05/2049 मीन 22/06/2049 कुंभ 09/07/2049	मिथु 03/10/2049 सिंह 20/11/2049 कर्क 09/06/2050 कन्या 03/09/2050 तुला 02/02/2051 वृश्चि 10/04/2051 मीन 15/07/2051 कुंभ 22/08/2051 मक 29/09/2051
कर्क - सिंह 29/09/2051 23/12/2052	कन्या - कन्या 23/12/2052 07/12/2053	कन्या - तुला 07/12/2053 17/08/2055	कन्या - वृश्चि 17/08/2055 14/05/2056	कन्या - मीन 14/05/2056 05/06/2057
सिंह 26/10/2051 कर्क 14/02/2052 कन्या 02/04/2052 तुला 26/06/2052 वृश्चि 02/08/2052 मीन 24/09/2052 कुंभ 15/10/2052 मक 06/11/2052 मिथु 23/12/2052	कन्या 29/01/2053 तुला 05/04/2053 वृश्चि 04/05/2053 मीन 13/06/2053 कुंभ 30/06/2053 मक 16/07/2053 मिथु 22/08/2053 सिंह 12/09/2053 कर्क 07/12/2053	तुला 02/04/2054 वृश्चि 23/05/2054 मीन 04/08/2054 कुंभ 02/09/2054 मक 01/10/2054 मिथु 06/12/2054 सिंह 11/01/2055 कर्क 13/06/2055 कन्या 17/08/2055	वृश्चि 09/09/2055 मीन 10/10/2055 कुंभ 23/10/2055 मक 05/11/2055 मिथु 04/12/2055 सिंह 20/12/2055 कर्क 24/02/2056 कन्या 24/03/2056 तुला 14/05/2056	मीन 29/06/2056 कुंभ 17/07/2056 मक 04/08/2056 मिथु 14/09/2056 सिंह 07/10/2056 कर्क 10/01/2057 कन्या 20/02/2057 तुला 04/05/2057 वृश्चि 05/06/2057
कन्या - कुंभ 05/06/2057 06/11/2057	कन्या - मक 06/11/2057 10/04/2058	कन्या - मिथु 10/04/2058 24/03/2059	कन्या - सिंह 24/03/2059 04/10/2059	कन्या - कर्क 04/10/2059 24/12/2061
कुंभ 12/06/2057 मक 19/06/2057 मिथु 06/07/2057 सिंह 15/07/2057 कर्क 22/08/2057 कन्या 07/09/2057 तुला 07/10/2057 वृश्चि 19/10/2057 मीन 06/11/2057	मक 14/11/2057 मिथु 30/11/2057 सिंह 09/12/2057 कर्क 16/01/2058 कन्या 02/02/2058 तुला 03/03/2058 वृश्चि 16/03/2058 मीन 03/04/2058 कुंभ 10/04/2058	मिथु 17/05/2058 सिंह 06/06/2058 कर्क 31/08/2058 कन्या 07/10/2058 तुला 12/12/2058 वृश्चि 10/01/2059 मीन 19/02/2059 कुंभ 08/03/2059 मक 24/03/2059	सिंह 05/04/2059 कर्क 22/05/2059 कन्या 12/06/2059 तुला 18/07/2059 वृश्चि 03/08/2059 मीन 26/08/2059 कुंभ 04/09/2059 मक 13/09/2059 मिथु 04/10/2059	कर्क 21/04/2060 कन्या 16/07/2060 तुला 16/12/2060 वृश्चि 21/02/2061 मीन 28/05/2061 कुंभ 05/07/2061 मक 12/08/2061 मिथु 06/11/2061 सिंह 24/12/2061

चर दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 10 वर्ष 0 मास 0 दिन

कन्या 10 वर्ष 31/10/1979 30/10/1989	तुला 1 वर्ष 30/10/1989 30/10/1990	वृश्चिक 3 वर्ष 30/10/1990 30/10/1993	धनु 8 वर्ष 30/10/1993 30/10/2001
तुला 30/08/1980	वृश्चिक 30/11/1989	तुला 30/01/1991	वृश्चिक 01/07/1994
वृश्चिक 30/06/1981	धनु 30/12/1989	कन्या 01/05/1991	तुला 01/03/1995
धनु 01/05/1982	मकर 30/01/1990	सिंह 31/07/1991	कन्या 31/10/1995
मकर 01/03/1983	कुंभ 01/03/1990	कर्क 31/10/1991	सिंह 30/06/1996
कुंभ 31/12/1983	मीन 31/03/1990	मिथु 30/01/1992	कर्क 01/03/1997
मीन 30/10/1984	मेष 01/05/1990	वृष 30/04/1992	मिथु 30/10/1997
मेष 30/08/1985	वृष 31/05/1990	मेष 31/07/1992	वृष 01/07/1998
वृष 01/07/1986	मिथु 01/07/1990	मीन 30/10/1992	मेष 01/03/1999
मिथु 01/05/1987	कर्क 31/07/1990	कुंभ 29/01/1993	मीन 31/10/1999
कर्क 29/02/1988	सिंह 31/08/1990	मकर 01/05/1993	कुंभ 30/06/2000
सिंह 30/12/1988	कन्या 30/09/1990	धनु 31/07/1993	मकर 01/03/2001
कन्या 30/10/1989	तुला 30/10/1990	वृश्चिक 30/10/1993	धनु 30/10/2001
मकर 5 वर्ष 30/10/2001 30/10/2006	कुम्भ 6 वर्ष 30/10/2006 30/10/2012	मीन 7 वर्ष 30/10/2012 31/10/2019	मेष 3 वर्ष 31/10/2019 30/10/2022
धनु 31/03/2002	मीन 01/05/2007	मेष 31/05/2013	वृष 30/01/2020
वृश्चिक 31/08/2002	मेष 31/10/2007	वृष 30/12/2013	मिथु 30/04/2020
तुला 30/01/2003	वृष 30/04/2008	मिथु 31/07/2014	कर्क 31/07/2020
कन्या 01/07/2003	मिथु 30/10/2008	कर्क 01/03/2015	सिंह 30/10/2020
सिंह 30/11/2003	कर्क 01/05/2009	सिंह 30/09/2015	कन्या 29/01/2021
कर्क 30/04/2004	सिंह 30/10/2009	कन्या 30/04/2016	तुला 01/05/2021
मिथु 30/09/2004	कन्या 01/05/2010	तुला 29/11/2016	वृश्चिक 31/07/2021
वृष 01/03/2005	तुला 30/10/2010	वृश्चिक 30/06/2017	धनु 30/10/2021
मेष 31/07/2005	वृश्चिक 01/05/2011	धनु 30/01/2018	मकर 30/01/2022
मीन 30/12/2005	धनु 31/10/2011	मकर 31/08/2018	कुंभ 01/05/2022
कुंभ 31/05/2006	मकर 30/04/2012	कुंभ 01/04/2019	मीन 31/07/2022
मकर 30/10/2006	कुंभ 30/10/2012	मीन 31/10/2019	मेष 30/10/2022
वृष 6 वर्ष 30/10/2022 30/10/2028	मिथुन 5 वर्ष 30/10/2028 30/10/2033	कर्क 5 वर्ष 30/10/2033 30/10/2038	सिंह 10 वर्ष 30/10/2038 30/10/2048
मेष 01/05/2023	वृष 31/03/2029	मिथु 31/03/2034	कन्या 31/08/2039
मीन 31/10/2023	मेष 30/08/2029	वृष 31/08/2034	तुला 30/06/2040
कुंभ 30/04/2024	मीन 30/01/2030	मेष 30/01/2035	वृश्चिक 01/05/2041
मकर 30/10/2024	कुंभ 01/07/2030	मीन 01/07/2035	धनु 01/03/2042
धनु 01/05/2025	मकर 30/11/2030	कुंभ 30/11/2035	मकर 30/12/2042
वृश्चिक 30/10/2025	धनु 01/05/2031	मकर 30/04/2036	कुंभ 31/10/2043
तुला 01/05/2026	वृश्चिक 30/09/2031	धनु 30/09/2036	मीन 30/08/2044
कन्या 30/10/2026	तुला 29/02/2032	वृश्चिक 01/03/2037	मेष 30/06/2045
सिंह 01/05/2027	कन्या 31/07/2032	तुला 31/07/2037	वृष 01/05/2046
कर्क 31/10/2027	सिंह 30/12/2032	कन्या 30/12/2037	मिथु 01/03/2047
मिथु 30/04/2028	कर्क 31/05/2033	सिंह 31/05/2038	कर्क 31/12/2047
वृष 30/10/2028	मिथु 30/10/2033	कर्क 30/10/2038	सिंह 30/10/2048

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - तुला 30/10/2025 01/05/2026	वृष - कन्या 01/05/2026 30/10/2026	वृष - सिंह 30/10/2026 01/05/2027	वृष - कर्क 01/05/2027 31/10/2027	वृष - मिथु 31/10/2027 30/04/2028
वृश्चि 14/11/2025 धनु 30/11/2025 मक 15/12/2025 कुंभ 30/12/2025 मीन 14/01/2026 मेष 30/01/2026 वृष 14/02/2026 मिथु 01/03/2026 कर्क 16/03/2026 सिंह 31/03/2026 कन्या 16/04/2026 तुला 01/05/2026	तुला 16/05/2026 वृश्चि 31/05/2026 धनु 15/06/2026 मक 01/07/2026 कुंभ 16/07/2026 मीन 31/07/2026 मेष 15/08/2026 वृष 31/08/2026 मिथु 15/09/2026 कर्क 30/09/2026 सिंह 15/10/2026 कन्या 30/10/2026	कन्या 15/11/2026 तुला 30/11/2026 वृश्चि 15/12/2026 धनु 30/12/2026 मक 15/01/2027 कुंभ 30/01/2027 मीन 14/02/2027 मेष 01/03/2027 वृष 16/03/2027 मिथु 01/04/2027 कर्क 16/04/2027 सिंह 01/05/2027	मिथु 16/05/2027 वृष 01/06/2027 मेष 16/06/2027 मीन 01/07/2027 कुंभ 16/07/2027 मक 31/07/2027 धनु 16/08/2027 वृश्चि 31/08/2027 तुला 15/09/2027 कन्या 30/09/2027 सिंह 15/10/2027 कर्क 31/10/2027	वृष 15/11/2027 मेष 30/11/2027 मीन 15/12/2027 कुंभ 31/12/2027 मक 15/01/2028 धनु 30/01/2028 वृश्चि 14/02/2028 तुला 29/02/2028 कन्या 16/03/2028 सिंह 31/03/2028 कर्क 15/04/2028 मिथु 30/04/2028
वृष - वृष 30/04/2028 30/10/2028	मिथु - वृष 30/10/2028 31/03/2029	मिथु - मेष 31/03/2029 30/08/2029	मिथु - मीन 30/08/2029 30/01/2030	मिथु - कुंभ 30/01/2030 01/07/2030
मेष 16/05/2028 मीन 31/05/2028 कुंभ 15/06/2028 मक 30/06/2028 धनु 15/07/2028 वृश्चि 31/07/2028 तुला 15/08/2028 कन्या 30/08/2028 सिंह 14/09/2028 कर्क 30/09/2028 मिथु 15/10/2028 वृष 30/10/2028	मेष 12/11/2028 मीन 24/11/2028 कुंभ 07/12/2028 मक 20/12/2028 धनु 01/01/2029 वृश्चि 14/01/2029 तुला 27/01/2029 कन्या 08/02/2029 सिंह 21/02/2029 कर्क 06/03/2029 मिथु 18/03/2029 वृष 31/03/2029	वृष 13/04/2029 मिथु 25/04/2029 कर्क 08/05/2029 सिंह 21/05/2029 कन्या 03/06/2029 तुला 15/06/2029 वृश्चि 28/06/2029 धनु 11/07/2029 मक 23/07/2029 कुंभ 05/08/2029 मीन 18/08/2029 मेष 30/08/2029	मेष 12/09/2029 वृष 25/09/2029 मिथु 07/10/2029 कर्क 20/10/2029 सिंह 02/11/2029 कन्या 14/11/2029 तुला 27/11/2029 वृश्चि 10/12/2029 धनु 22/12/2029 मक 04/01/2030 कुंभ 17/01/2030 मीन 30/01/2030	मीन 11/02/2030 मेष 24/02/2030 वृष 09/03/2030 मिथु 21/03/2030 कर्क 03/04/2030 सिंह 16/04/2030 कन्या 28/04/2030 तुला 11/05/2030 वृश्चि 24/05/2030 धनु 05/06/2030 मक 18/06/2030 कुंभ 01/07/2030
मिथु - मक 01/07/2030 30/11/2030	मिथु - धनु 30/11/2030 01/05/2031	मिथु - वृश्चि 01/05/2031 30/09/2031	मिथु - तुला 30/09/2031 29/02/2032	मिथु - कन्या 29/02/2032 31/07/2032
धनु 13/07/2030 वृश्चि 26/07/2030 तुला 08/08/2030 कन्या 20/08/2030 सिंह 02/09/2030 कर्क 15/09/2030 मिथु 27/09/2030 वृष 10/10/2030 मेष 23/10/2030 मीन 05/11/2030 कुंभ 17/11/2030 मक 30/11/2030	वृश्चि 13/12/2030 तुला 25/12/2030 कन्या 07/01/2031 सिंह 20/01/2031 कर्क 01/02/2031 मिथु 14/02/2031 वृष 27/02/2031 मेष 11/03/2031 मीन 24/03/2031 कुंभ 06/04/2031 मक 18/04/2031 धनु 01/05/2031	तुला 14/05/2031 कन्या 26/05/2031 सिंह 08/06/2031 कर्क 21/06/2031 मिथु 03/07/2031 वृष 16/07/2031 मेष 29/07/2031 मीन 11/08/2031 कुंभ 23/08/2031 मक 05/09/2031 धनु 18/09/2031 वृश्चि 30/09/2031	वृश्चि 13/10/2031 धनु 26/10/2031 मक 07/11/2031 कुंभ 20/11/2031 मीन 03/12/2031 मेष 15/12/2031 वृष 28/12/2031 मिथु 10/01/2032 कर्क 22/01/2032 सिंह 04/02/2032 कन्या 17/02/2032 तुला 29/02/2032	तुला 13/03/2032 वृश्चि 26/03/2032 धनु 07/04/2032 मक 20/04/2032 कुंभ 03/05/2032 मीन 16/05/2032 मेष 28/05/2032 वृष 10/06/2032 मिथु 23/06/2032 कर्क 05/07/2032 सिंह 18/07/2032 कन्या 31/07/2032



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - सिंह 31/07/2032 30/12/2032	मिथु - कर्क 30/12/2032 31/05/2033	मिथु - मिथु 31/05/2033 30/10/2033	कर्क - मिथु 30/10/2033 31/03/2034	कर्क - वृष 31/03/2034 31/08/2034
कन्या 12/08/2032 तुला 25/08/2032 वृश्चि 07/09/2032 धनु 19/09/2032 मक 02/10/2032 कुंभ 15/10/2032 मीन 27/10/2032 मेष 09/11/2032 वृष 22/11/2032 मिथु 04/12/2032 कर्क 17/12/2032 सिंह 30/12/2032	मिथु 11/01/2033 वृष 24/01/2033 मेष 06/02/2033 मीन 19/02/2033 कुंभ 03/03/2033 मक 16/03/2033 धनु 29/03/2033 वृश्चि 10/04/2033 तुला 23/04/2033 कन्या 06/05/2033 सिंह 18/05/2033 कर्क 31/05/2033	वृष 13/06/2033 मेष 25/06/2033 मीन 08/07/2033 कुंभ 21/07/2033 मक 02/08/2033 धनु 15/08/2033 वृश्चि 28/08/2033 तुला 09/09/2033 कन्या 22/09/2033 सिंह 05/10/2033 कर्क 18/10/2033 मिथु 30/10/2033	वृष 12/11/2033 मेष 25/11/2033 मीन 07/12/2033 कुंभ 20/12/2033 मक 02/01/2034 धनु 14/01/2034 वृश्चि 27/01/2034 तुला 09/02/2034 कन्या 21/02/2034 सिंह 06/03/2034 कर्क 19/03/2034 मिथु 31/03/2034	मेष 13/04/2034 मीन 26/04/2034 कुंभ 08/05/2034 मक 21/05/2034 धनु 03/06/2034 वृश्चि 15/06/2034 तुला 28/06/2034 कन्या 11/07/2034 सिंह 24/07/2034 कर्क 05/08/2034 मिथु 18/08/2034 वृष 31/08/2034
कर्क - मेष 31/08/2034 30/01/2035	कर्क - मीन 30/01/2035 01/07/2035	कर्क - कुंभ 01/07/2035 30/11/2035	कर्क - मक 30/11/2035 30/04/2036	कर्क - धनु 30/04/2036 30/09/2036
वृष 12/09/2034 मिथु 25/09/2034 कर्क 08/10/2034 सिंह 20/10/2034 कन्या 02/11/2034 तुला 15/11/2034 वृश्चि 27/11/2034 धनु 10/12/2034 मक 23/12/2034 कुंभ 04/01/2035 मीन 17/01/2035 मेष 30/01/2035	मेष 11/02/2035 वृष 24/02/2035 मिथु 09/03/2035 कर्क 21/03/2035 सिंह 03/04/2035 कन्या 16/04/2035 तुला 29/04/2035 वृश्चि 11/05/2035 धनु 24/05/2035 मक 06/06/2035 कुंभ 18/06/2035 मीन 01/07/2035	मीन 14/07/2035 मेष 26/07/2035 वृष 08/08/2035 मिथु 21/08/2035 कर्क 02/09/2035 सिंह 15/09/2035 कन्या 28/09/2035 तुला 10/10/2035 वृश्चि 23/10/2035 धनु 05/11/2035 मक 17/11/2035 कुंभ 30/11/2035	धनु 13/12/2035 वृश्चि 25/12/2035 तुला 07/01/2036 कन्या 20/01/2036 सिंह 02/02/2036 कर्क 14/02/2036 मिथु 27/02/2036 वृष 11/03/2036 मेष 23/03/2036 मीन 05/04/2036 कुंभ 18/04/2036 मक 30/04/2036	वृश्चि 13/05/2036 तुला 26/05/2036 कन्या 07/06/2036 सिंह 20/06/2036 कर्क 03/07/2036 मिथु 15/07/2036 वृष 28/07/2036 मेष 10/08/2036 मीन 22/08/2036 कुंभ 04/09/2036 मक 17/09/2036 धनु 30/09/2036
कर्क - वृश्चि 30/09/2036 01/03/2037	कर्क - तुला 01/03/2037 31/07/2037	कर्क - कन्या 31/07/2037 30/12/2037	कर्क - सिंह 30/12/2037 31/05/2038	कर्क - कर्क 31/05/2038 30/10/2038
तुला 12/10/2036 कन्या 25/10/2036 सिंह 07/11/2036 कर्क 19/11/2036 मिथु 02/12/2036 वृष 15/12/2036 मेष 27/12/2036 मीन 09/01/2037 कुंभ 22/01/2037 मक 03/02/2037 धनु 16/02/2037 वृश्चि 01/03/2037	वृश्चि 13/03/2037 धनु 26/03/2037 मक 08/04/2037 कुंभ 20/04/2037 मीन 03/05/2037 मेष 16/05/2037 वृष 28/05/2037 मिथु 10/06/2037 कर्क 23/06/2037 सिंह 06/07/2037 कन्या 18/07/2037 तुला 31/07/2037	तुला 13/08/2037 वृश्चि 25/08/2037 धनु 07/09/2037 मक 20/09/2037 कुंभ 02/10/2037 मीन 15/10/2037 मेष 28/10/2037 वृष 09/11/2037 मिथु 22/11/2037 कर्क 05/12/2037 सिंह 17/12/2037 कन्या 30/12/2037	कन्या 12/01/2038 तुला 24/01/2038 वृश्चि 06/02/2038 धनु 19/02/2038 मक 03/03/2038 कुंभ 16/03/2038 मीन 29/03/2038 मेष 11/04/2038 वृष 23/04/2038 मिथु 06/05/2038 कर्क 19/05/2038 सिंह 31/05/2038	मिथु 13/06/2038 वृष 26/06/2038 मेष 08/07/2038 मीन 21/07/2038 कुंभ 03/08/2038 मक 15/08/2038 धनु 28/08/2038 वृश्चि 10/09/2038 तुला 22/09/2038 कन्या 05/10/2038 सिंह 18/10/2038 कर्क 30/10/2038



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

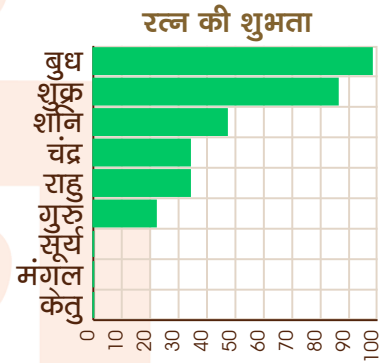


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	86%	पराक्रम, भाग्योदय, धन
नीलम	शनि	47%	व्यय, सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
मोती	चंद्र	34%	शत्रु व रोग, हानि
गोमेद	राहु	34%	व्यय, धन हानि
पुखराज	गुरु	22%	व्यय, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	धन हानि, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि
लहसुनिया	केतु	0%	शत्रु व रोग, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	08/05/1986	0%	9%	0%	98%	22%	92%	55%	55%	0%
गुरु	08/05/2002	12%	47%	6%	86%	47%	73%	47%	34%	0%
शनि	08/05/2021	0%	9%	0%	100%	22%	92%	61%	47%	0%
बुध	08/05/2038	12%	9%	0%	100%	22%	92%	47%	34%	0%
केतु	08/05/2045	0%	9%	6%	98%	22%	92%	22%	9%	19%
शुक्र	08/05/2065	0%	9%	0%	100%	22%	98%	55%	47%	6%
सूर्य	08/05/2071	25%	47%	6%	98%	34%	73%	22%	9%	0%
चंद्र	08/05/2081	12%	55%	0%	100%	22%	86%	47%	9%	0%
मंगल	08/05/2088	12%	47%	19%	86%	34%	86%	47%	9%	6%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

नीलम, मोती व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पुखराज, माणिक्य, मूंगा व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको व्यापारी सफलता देगा। व्यापारी वर्ग से मित्रवत संबंध स्थापित करेगा। व्यापारादि कार्यों रुचि आती है। आपको भाई-बंधुओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बनेंगे। रत्न प्रभाव से शौर्य, पराक्रम और वीरता के स्थान पर बुद्धि बल का प्रयोग अधिक करेंगे। लेखन और कला के पक्ष से भी पन्ना रत्न अनुकूल फल देगा। यह रत्न आपको विचार एवं भाव अभिव्यक्ति की योग्यता देगा। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आप यह रत्न धारण कर सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। आपके लिए शुक्र रत्न हीरा शुभदायक रहेगा। शुक्र रत्न हीरा आपको संगीत एवं कला के क्षेत्र में रुचि बना सकता है। रत्न की शुभता से आपकी श्रवण क्षमता का विकास होगा। यह हीरा रत्न धन व वैभवता देगा। हीरा रत्न आपको पराक्रमी, विद्वान, भाग्यवान एवं पर्यटनशील बना सकता है। रत्न की शक्तियां आपको साहसी व समर्थक बनायेगी। आप भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहेंगे। दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि के लिए भी हीरा रत्न उत्तम रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए हैं।

शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्न से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम आपको असंतोषी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आपका व्यक्तिगत विकास बाधित हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर हो सकता है कि आपको जीवन के मूल उद्देश्य की प्राप्ति न हों। इसका एक कारण आपके जीवन उद्देश्यों का अत्यंत दुष्कर होना भी हो सकता है। यह रत्न धारण कर आप वकालत एवं धर्म क्षेत्र में अनुकूल आय एवं सम्मान प्राप्त नहीं कर पायें। रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर और रुखे हो सकते हैं। नियमों और सिद्धान्तों का सख्ती से पालने कराने के कारण आपका परिवार आपसे कुछ भयभीत भी रहेगा। शनि रत्न नीलम आपको कुसंगति का शिकार बना सकता है। कुटुंब से आपके संबंध प्रभावित होकर मधुरता में कमी ला सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। षष्ठेश शनि का रत्न नीलम आपके रोगों को प्रभावी कर सकता है। नीलम रत्न आपके रोग, ऋण और सेवा भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। स्वास्थ्य की अनियमितता भी यह रत्न आपको दे सकता है। शत्रु वृद्धि के कारण आप अपनी ऊर्जा शक्ति सकारात्मक कार्यों में नहीं लगा पाएंगे। छूटे भाव का रत्न आपको जीवन में अर्थ की कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप नौकरी क्षेत्र में लगाए रखेगा। इसके कारण आपको व्यापार आदि कार्यों से दूर रहना पड़ सकता है। नीलम रत्न आपमें सदभाव और रनेह की कमी कर सकता है। अधिक मेहनत के कार्यों में आपको रुचि की कमी हो सकती है। नीलम रत्न आपमें आलस्य भाव भी दे सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्रमा का मोती रत्न धारण करने पर किसी विशेष मामले में आपको अपमानित होना पड़ सकता है। आपके अपने मामा-मौसी से संबंध प्रतिकूल हो सकते हैं। अपने शत्रुओं की पहचान करना आपके लिए सरल नहीं होगा। यह रत्न आपको कफ रोगी, नेत्र रोगी, अल्पायु, आसक्त, व्यथी बना सकता है। इसके प्रभाव से आप अस्वस्थता का अनुभव करेंगे। बढ़ते कर्ज आपको मानसिक चिंताएं दे सकते हैं। कर्ज का भुगदान ज्यादा आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्यों को शीघ्रता से करने की प्रवृत्ति कार्यों में गुणवत्ता का अभाव ला सकती है। मोती रत्न आपमें असंतोष का भाव ला सकता है। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। चंद्र का रत्न मोती धारण करने पर आपको धनार्जन एवं धन संचय करने में कष्ट की स्थिति आ सकती है। मोती रत्न आपकी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति को बाधित कर सकता है। यह रत्न आपकी व्यापारी कुशलता में भी कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके वैवाहिक जीवन को दुःखद कर सकता है। मोती रत्न धारण से आय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा और समाज से आपकी द्वेष भाव की स्थिति बन सकती है। मोती रत्न आपको प्रवास और गुप्त चिंताएं दे सकता है। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपमें संकल्प शक्ति की कमी हो सकती है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करना आपके मन में भ्रम दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके सुख चैन में कमी हो सकती है। आपके दिमाग में अनेक भ्रान्तियां जन्म ले सकती हैं। उन्नतिशील होने के लिए आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते हैं। अनेक योजनाएं आपके मस्तिष्क में निर्मित हो सकती हैं। यह रत्न आपके दिमाग को अत्यधिक क्रियाशील बनाए रखेगा। गोमेद रत्न प्रभाव से आप बढ़ चढ़ कर बातें करने वाले हो सकते हैं। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग दे सकता है। गोमेद रत्न आपको वैचारिक अस्थिरता दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको पिता को सुख भी कम ही मिल पाएगा। कार्यों में अनिष्टता का भाव प्रभावी हो सकता है।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य दूसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न पहनने पर आपके स्वभाव में मृदुता की कमी होगी। पारिवारिक जीवन में आपको कष्ट का सामना करना होगा। आपके कुटुंब में मतभेद और विभिन्न विचारधाराएं जन्म लेंगी। इस रत्न को रत्न धारण करने से आपके संचित धन में कमी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में अस्थिरता आयेगी। आपको कुटुंब सुख-सहयोग प्राप्त नहीं हो पाएंगे। यह रत्न पहनने पर आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंच सकती है। रत्न में शुभता का सहयोग प्राप्त न होने के कारण यह रत्न आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। धन और आयु दोनों के लिए यह रत्न आपके लिए प्रतिकूल रत्न सिद्ध होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण कर आपमें आशावादिता भाव की कमी आ सकती है। दूसरों के लिए आपमें सहानुभूति तो बहुत होगी परन्तु आप चाहकर भी किसी के काम नहीं आ पाएंगे। कई बार आप दुष्ट लोगों पर भी सहानुभूति रखेंगे। पुखराज रत्न आपको जीवन में हानि करा सकता है। आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। आपको सम्मान की कमी का सामना करना पड़ सकता है। पुखराज रत्न आपकी प्रसन्नता, सुख एवं सौभाग्य में कमी करेगा। यह रत्न रोग, ऋण और शत्रु आपके प्रबल कर सकता है। आयु और मातृ सुख में कमी कर सकता है। विदेश स्थानों से आपको धन हानि हो सकती है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर सुखों का हास हो सकता है। आपको माता की सेवा के अवसर कम ही मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको सरकारी नौकरी में बाधाएं दे सकता है। धन-धान्य और वाहन सुख में भी यह रत्न कमी कर रहा है। गुरु रत्न पुखराज आपकी तीर्थयात्राओं को सीमित कर सकता है। आपके द्वारा माता-पिता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको इष्टमित्रों से दूर रख सकता है। रत्न प्रभाव से आपके वायु रोग प्रभावी हो सकते हैं। रत्न आपके धन में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न पहनने पर आपको पराश्रय में रहना पड़ सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आपको शुभ कार्यों में सम्मिलित होने के अवसर कम ही मिल पाएंगे। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपका खान-पान प्रभावित होगा जिससे आपको अपच और उससे संबंधित कुछ अन्य रोग हो सकते हैं। माणिक्य रत्न के प्रभाव से आपको धन संचय में परेशानियां आ सकती हैं। तथा कुटुंब सौहार्द में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी आत्मनिर्भरता में कमी का कारण बन सकता है। हड्डियों से जुड़े रोगों का सामना आपको करना पड़ सकता है। तांबा, सोना एवं अन्य धातुओं के व्यापार क्षेत्र में आपको अनुकूल लाभ की कमी का सामना करना पड़ सकता है। सरकारी कर अधिक देना पड़ सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यों में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते हैं। माणिक्य रत्न आपको

विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों से आय प्राप्त के अवसर दे सकता है। आपके बड़े भाई में अत्यधिक क्रोध भाव आ सकता है। आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है। मूंगा रत्न आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है। इस रत्न से संतान की पैदाइश में विलम्ब या गर्भपात जैसी स्थितियां भी आ सकती हैं। आपके बड़े भाई बहन वाद-विवाद में सम्मिलित हो सकते हैं। मूंगा रत्न आपको मित्रों से मतभेद और विरोध दे सकते हैं। इस रत्न को धारण करने पर आपके विरोधी प्रबल हो सकते हैं। आपको रोग, ऋण और शत्रुओं की अधिकता से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके कुटुंब में वाद-विवाद का कारण बन सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते हैं। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आपके रोग ठीक होने में समय अधिक ले सकते हैं। माता से मतभेद की स्थिति यह रत्न बना सकता है। नैनिहाल पक्ष से आदर सम्मान की प्राप्ति कम हो सकती है। यह रत्न आपका स्वभाव झगडालू बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप फिजूलखर्ची के आदी हो सकते हैं। आपको विवादों में सफलता पाने में कुछ अधिक समय लग सकता है। भूत-प्रेत जैसी बाधाओं से आपको कष्ट मिल सकते हैं। दांत का रोग अथवा होंठों से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है। लहसुनिया रत्न रोगों को प्रभावी करेगा। ऋणों को बढ़ाएगा तथा शत्रुओं से कष्ट दे सकता है।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती हैं। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ

अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

बुध

(08/05/2021 - 08/05/2038)

बुध की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, माणिक्य, मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु

(08/05/2038 - 08/05/2045)

केतु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम, लहसुनिया, मोती, गोमेद, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र

(08/05/2045 - 08/05/2065)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, मोती, लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य

(08/05/2065 - 08/05/2071)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, पुखराज व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और नीलम, गोमेद, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(08/05/2071 - 08/05/2081)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, माणिक्य, गोमेद, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

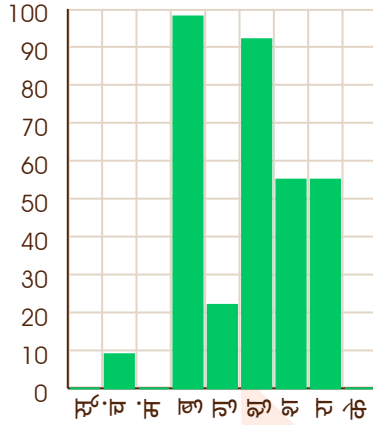
मंगल
(08/05/2081 - 08/05/2088)

मंगल की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

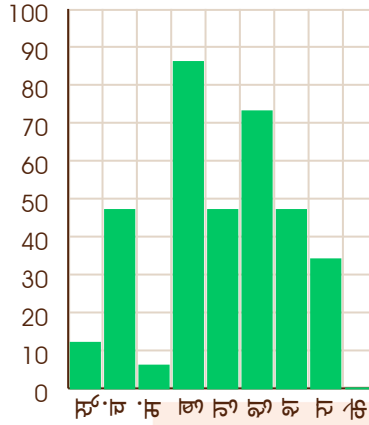
मोती, नीलम व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, माणिक्य, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

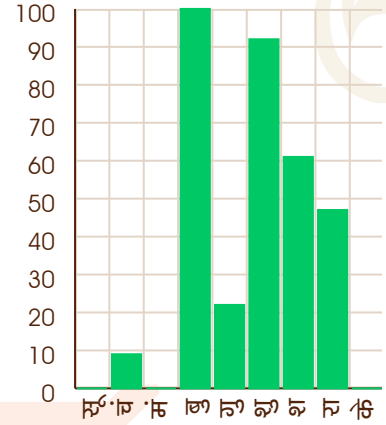
राहु - 08/05/1986



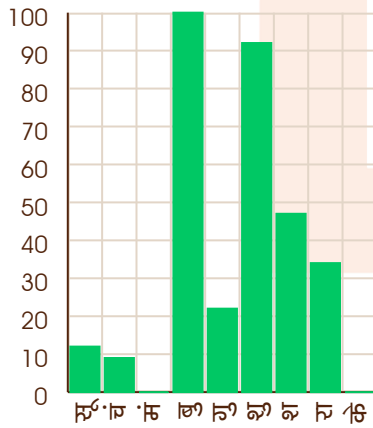
गुरु - 08/05/2002



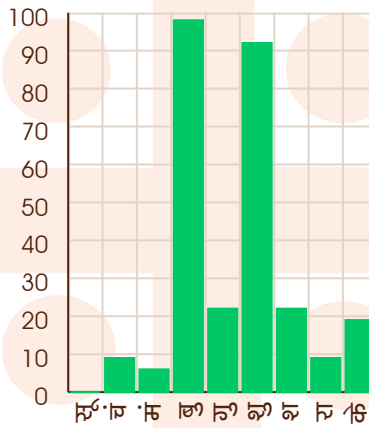
शनि - 08/05/2021



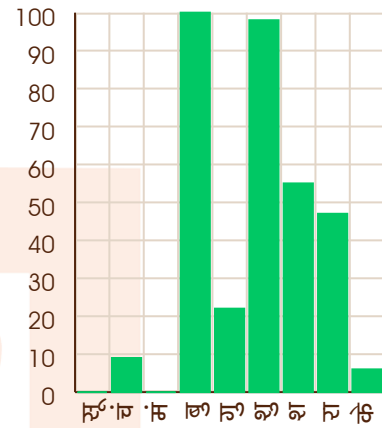
बुध - 08/05/2038



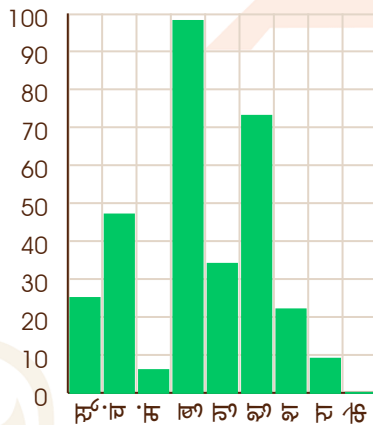
केतु - 08/05/2045



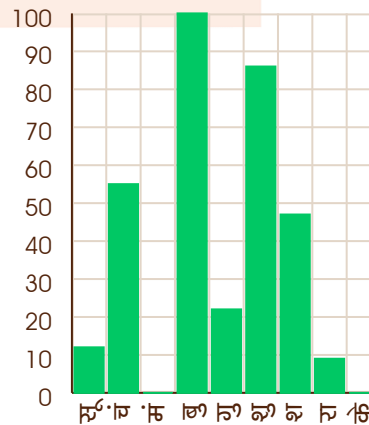
शुक्र - 08/05/2065



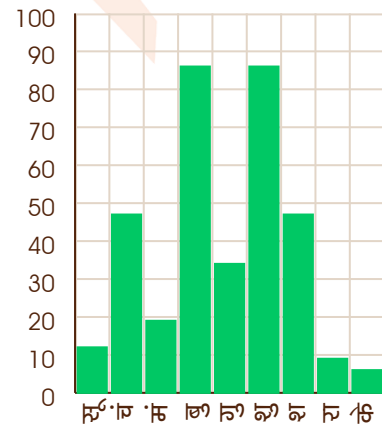
सूर्य - 08/05/2071



चन्द्र - 08/05/2081



मंगल - 08/05/2088



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ॐ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्ठेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते हैं। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता है।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्ठेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता है, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता है।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित है। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित है, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सद्दा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपत्ति का नाश और माता-पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रुचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृत्तियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते हैं। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980 27/07/1980-06/10/1982	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

स्वास्थ्य
सन्तति सुख
शत्रु व रोग मुक्ति
दम्पति
भाग्योदय



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।

स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके कय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक के जीवन में मनोभिलाषित कार्य प्रायः पूरा नहीं होता है। यदि कार्य सिद्ध भी होता है तो थोड़ा बिलम्ब से होता है। जातक जन्म स्थान व देश से दूर चला जाता है। गुप्त शत्रुओं से जातक थोड़ा बहुत भयाक्रान्त रहता है। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े में जातक को प्रायः हार का सामना करना पड़ता है तथा न्यायालय से भी थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और समय-समय पर बदनामी का भय होता रहता है।

इस योग के कारण जातक का जीवन रहस्यमय रहता है तथा मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग प्रायः परेशान रहता है। कोई न कोई रोग व्याधि समय-समय पर परेशान करता रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। आमदनी से विशेष खर्च रहता है। परिणामस्वरूप जातक को आर्थिक विपन्नता लग जाती है। जातक बहुत कर्जदार हो जाते हैं और कर्जा उतारने हेतु किये गए प्रयासों में आंशिक रूप में असफलता मिलती है। जीवन में प्रायः अनेकों बार संघर्ष करना पड़ता है। जातक को शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है। सामाजिक मान सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मृत्यु के उपरान्त विशेष रूप से ख्याति (प्रसिद्धि) मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 31 होने से तीन एवं एक के योग से आपका मूलांक चार होता है। इसका अधिष्ठाता भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मतानुसार हर्षल ग्रह को माना गया है। अंक तीन का स्वामी बृहस्पति तथा अंक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है।

मूलांक चार के प्रभाव से आप अचानक एवं आश्चर्य जनक प्रगति प्राप्त करेंगे। आपको वही कार्य अच्छे लगेंगे, जिनके द्वारा शीघ्रता से ऊँचाईयाँ प्राप्त की जा सके। ऐसा ही कार्यक्षेत्र आपके लिये अनुकूल रहेगा, जिनमें कम समय में अधिक लाभ कमाया जा सके। आपकी विचारधारा थोड़ी आधुनिक रहेगी एवं पुरानी रीतियों, मान्यताओं के आप हिमायती नहीं होंगे। उनमें परिवर्तन की इच्छा रखेंगे। इससे आपको विरोधियों का सामना करना पड़ेगा।

धन संग्रह आप अधिक नहीं कर पायेंगे। किन्तु आपको समाज में नाम, यश, पद-प्रतिष्ठा अच्छी प्राप्त होगी। सामाजिक क्षेत्र में आप आमूल-चूल परिवर्तन के हामी होंगे। लेकिन परिस्थितियाँ हर समय आपका साथ दें यह संभव नहीं है। कभी आपकी बात मानी जायेगी कभी नकार दी जायेगी। आप अपनी सफलता का मार्ग स्वयं संघर्ष करते हुए बनायेंगे। अतः संघर्ष करना आपकी आदत में आ जायेगा। जिससे एकाध घटनाएं ऐसी घटेंगी जो आपका मार्ग बदल देगी या स्थायी प्रभाव छोड़ जायेंगी।

अंक तीन के स्वामी बृहस्पति के प्रभाव से आप में बौद्धिक स्तर उच्चकोटि का रहेगा। आपके कई निर्णय चमत्कारिक होंगे। जिनसे आपको ख्याति मिलेगी। एक अंक के स्वामी सूर्य के प्रभाववश आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी और समाज में नाम तथा यश प्राप्त होगा।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 4 है एवं भाग्यांक भी 4 है। मूलांक 4 एवं भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल ग्रह को माना गया है। मूलांक तथा भाग्यांक एक ही होने से आपके अंदर इनके प्रभाव

द्विगुणित मात्रा में आएंगे। आपका व्यापार-रोजगार परिवर्तनशील रहेगा एवं अपनी मेहनत तथा संघर्ष के द्वारा आप अपना भाग्य बनाएंगे। जीवन में आपको अचानक सफलताएं प्राप्त होंगी। एकाध बार कटु असफलता का सामना भी करना पड़ेगा। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में परिवर्तन करते रहना आपकी नियति में शामिल रहेगा। आप रुढ़िवादिता से थोड़ा हट कर कार्य करेंगे तथा ऐसे ही कार्यों को आप पसंद करेंगे जिसमें परिवर्तन आम बात हो। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी यात्राएं निरंतर चलती रहेंगी, हालांकि यात्राओं से आपको धन की प्राप्ति होगी। एकाध यात्रा तो आपको अधिक मात्रा में धन-संपत्ति इत्यादि देगी तथा एकाध यात्राओं में दुर्घटना की संभावना भी रहेगी। अतः सोच-समझ कर कार्य करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। आपकी सामाजिक स्थिति मध्यम श्रेणी की रहेगी एवं समाज में आप थोड़ा बहुत लोकप्रिय भी रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में आपकी लोकप्रियता उच्च कोटि की रहेगी।

आपका भाग्योदय 22 वर्ष से प्रारंभ होगा। 31 वें वर्ष पर उन्नति प्राप्त होगी तथा 40 वें वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है तथा भाग्यांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक-भाग्यांक एक ही होने से मूलांक-भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 4 एवं भाग्यांक 4 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19 28, 37, 46, 55, 64, 73

4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67

8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनशील रहेंगे। इन वर्षों में कुछ ऐसी घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

हर्षल आपके लिए दिनांक 21 जून से 31 अगस्त तक, पाश्चात्य मतानुसार, सूर्य के कर्क एवं सिंह राशि में रहने पर तथा भारतीय मत से 16 जुलाई से 16 सितंबर तक कर्क एवं सिंह राशि में सूर्य के रहने पर हर्षल की स्थिति प्रबल मानी गयी है। इस समय जल एवं अग्नि तत्व प्रबल रहते हैं, जो हर्षल या राहु के गुण हैं। अतः उपर्युक्त समय मूलांक 4 के लिये कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह के रविवार, सोमवार, शनिवार आपके लिए शुभ रहेंगे। यदि आप अपना कोई भी कार्य इन दिवसों में तथा अनुकूल तारीखों में प्रारंभ करें तो आपके लिए शुभ रहेगा।

शुभ तारीखें

आपको अपने किसी विशिष्ट व्यक्ति से, उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र इत्यादि लिखना हो अथवा कोई महत्वपूर्ण कार्य-व्यापार आदि प्रारंभ करना हो तो किसी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों का चुनाव करना कार्य में सफलतादायक रहेगा।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 5, 12, 14, 21, 23 एवं 30 दिनांक आपके लिए अशुभ फलदायी रहेंगे। अतः कोई भी रोजगार-व्यापार संबंधी या अन्य कार्य या उच्चाधिकारी या किसी विशिष्ट अधिकारी से संबंध बनाने हेतु उपर्युक्त दिनांक आपके लिए ठीक नहीं रहेंगे।

मित्रता या साझेदारी

आप अपनी मित्रता ऐसे लोगों से करें जिनका जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। इन तारीखों को जन्मे लोग आपके लिए शुभ रहेंगे। ऐसे व्यक्तियों से आपकी लंबी मित्रता रहेगी तथा ये आपके रोजगार-व्यवसाय में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 प्रभावी पुरुष आपकी अच्छे साथी सिद्ध हो सकते हैं। उपर्युक्त मूलांक वाले पुरुषों से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकती हैं तथा उसमें सफल भी हो सकती हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को हुआ हो तो वे सभी पुरुष सहायक एवं लाभपूर्ण रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अनुकूल रंग

यदि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तो आपको चाहिए कि आप नीला, धूप-छांव, भूरा मिश्रित रंग के कपड़े पहनें और हो सके तो इस रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें। यह रंग आपके लिए अनुकूल रहेगा। हो सके तो अपने घर की दीवारों तथा पर्दों का चयन भी इन्हीं रंगों का करें। यह रंग आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपको चाहिए कि यदि आप भवन, कॉम्पलेक्स का चुनाव करते समय दिशा का चुनाव करें तो आपके लिए नैऋत्य कोण दिशा अच्छी रहेगी। आपका शयन कक्ष नैऋत्य दिशा में होने से रोजगार-व्यापार शुभ रहेगा तथा फर्नीचर आदि का रंग नीला, धूप छांव, भूरा मिश्रित रंग रखेंगे तो आपके लिए अधिक हितकर रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपका मूलांक 4 है। मूलांक 4 के मित्र अंक 1, 8 हैं। ये अंक आपके लिए सफलता के द्योतक हैं। यदि वाहन इत्यादि खरीदती हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 1,4,8 अंकों में से रखें। उदाहरणार्थ वाहन क्रमांक 5233 = 4 इत्यादि। आपकी यात्रा का वाहन नंबर यही होने से आपकी यात्रा सफल रहेगी। अगर आप होटल में कमरा आदि बुक करवाती हैं तो उसका नंबर 103 = 4 लेना चाहिए।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तभी आपको रक्तचाप दोष या जुकाम, छूत के रोग शीघ्र हो जाते हैं। रोग होने पर, अशुभ समय आने पर, कष्ट और विपत्ति के समय आप गणेश चतुर्थी का व्रत करें तथा गजानन गणपति की उपासना करें।

व्यवसाय

दारु, स्पिरिट, तेल, मिट्टी का तेल, अर्क, इत्र, रेल विभाग, वायुसेना, जलदाय विभाग, कुलीगिरी, तकनीशियन, रंगसाज, अभियांत्रिकी, नक्शानवीस, दर्जी, बढ़ई का कार्य, डिजाइन के छापे का कार्य, बाबू, टेलीफोन ऑपरेटर, स्टेनो, टाइपिस्ट, शिल्पकार, पत्रकार, संग्रहकर्ता, विद्युत कार्य, वक्ता, उपदेशक, राज्य कर्मचारी, खनिज मजदूर, ठेकेदार, मोटर चालक आदि।

व्रतोपवास

शनिवार को हर्षल अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तैल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

चांदी की अंगूठी में आप सात से ग्यारह रत्ती का गोमेद बनवा कर शनिवार के दिन धारण करें। गोमेद के न मिलने पर आप कत्थई या काला-लाल हकीक भी पहन सकते हैं। इसे आप शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, दायें हाथ की मध्यमा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप राहु ग्रह की उपासना करें अथवा गणेश भगवान की आराधना करें। भगवान गणेश के अठ्ठाईशाक्षरी मंत्र 'ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जनं मे वशमानय स्वाहा' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा चतुर्थी के दिन व्रत करें एवं भगवान गणेश को मोदक भोग लगाएं। इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि ऐसा संभव न हो सके तो भगवान गणेश के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके राहु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु राहु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

राहु गायत्री मंत्र - ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप राहु का ध्यान करें, मन में राहु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥

ग्रह जप मंत्र

अशुभ राहु को अनुकूल बनाने हेतु राहु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ अस्सी माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ॐ भ्रौं भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ॥ जप संख्या 18000 ॥

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी सफेद चंदन की जड़ ला कर, नीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या त्रिधातु या लोहे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे हर्षल/राहु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में नागबेल, लोबान, तिल के पत्र, बचा, गडूची और तगर आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ राहु/हर्षल के प्रभाव क्षीण होकर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

राहु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को राहु के पदार्थ-अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र पात्र, सप्त धान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कंबल, घोड़ा, खड्ग आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

राहु को अनुकूल बनाए रखने हेतु राहु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न फल

आपका जन्म हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में कन्या लग्नोदय काल हुआ था। उस समय मेदिनीय क्षितिज पर मिथुन राशि का नवमांश एवं मकर राशि का द्रेष्काण भी साथ-साथ उदित था। आपके जन्मकाल के समन्वित ग्रह प्रभाव से यह परिलक्षित हो रहा है कि आप अध्ययनप्रिय हैं तथा आप सृजनात्मक लक्ष्य के प्रति सतत प्रयत्नशील तथा समर्पित प्राणी हैं। आपको इस प्रवृत्ति को लाभजनक स्थिति में परिवर्तित करना चाहिए।

आप बुद्धिजीवी व्यक्ति हैं। परन्तु आपका चारित्रिक बल का महत्त्व प्रदर्शन आपके लिए व्यवधान कारक हो सकता है। आपकी सर्वत्र आलोचना होती है तथा आप जन्म सामान्य के दृष्टिकोण से पथभ्रष्ट होने के नाते आप इनकी श्रेणी में नहीं आते परिणाम स्वरूप अच्छी जामात के लोग आपको अपना प्रतिपक्षी (विरोधी) समझते हैं। आपके कुछ मित्रगण एवं आपके नौकर अधिक विरुद्ध एक जुट होकर आपको जन सामान्य की नजरों से पतित प्रमाणित करने का प्रयास कर सकते हैं। अतः आपको धैर्यपूर्वक एवं शान्त चित्त से अन्य के साथ अपना उत्तम व्यवहार बनाना होगा।

आपमें अन्य दुर्बलता यह है कि आप मध्यपान करने एवं संभोगात्मक प्रवृत्ति से आकर्षित एवं वशीभूत हैं। आपको उत्तम स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए इन आदतों को नियंत्रित करना होगा तथा सुव्यवस्थित पारिवारिक वातावरण को सुनिश्चित करना होगा। क्योंकि मुख्यतः आपको इस बात का गर्व होगा कि आपकी पत्नी बुद्धिमति है तथा आपको अच्छी सन्तान का संयोग प्राप्त है।

आपको अपने उत्तम स्वास्थ्य हेतु अनावश्यक सम्बन्ध की कोई आवश्यकता नहीं है। आपके उत्तम जीवन हेतु अच्छा वातावरण एवं कार्य कलाप अपनाना चाहिए। परन्तु वर्तमान काल आपको उदर विकार एवं मूर्च्छा जनित रोगों के प्रति अति संवेदनशील रहना होगा। आपको कतिपय संभावित रोगादि के प्रति रक्षात्मक प्रवृत्ति रखनी चाहिए। यथा टायफाइड, पेचीश एवं बेहोशी मूर्च्छा जनित आदि रोग आपको स्तम्भित कर सकता है। आपको सतर्कता पूर्वक अतिरिक्त भोजनादि में शाकाहार ग्रहण करना चाहिए। यह आहार-विहार आपके लिए लाभप्रद सिद्ध है।

आप निश्चय ही धनी होकर सुखमय जीवन यापन कर सकते हों परन्तु आपको प्रयत्नशील रहना होगा। आपको नियमितता बरतनी होगी। सम्प्रति आपकी बुद्धि अस्थिर है। प्रायः आपका अस्थिर बुद्धि से अपनी दुलमुल नीति के अनुसार कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। आपको सर्वप्रथम गम्भीरता पूर्वक अपनी योजना एवं कार्यकलाप के प्रति विचार कर एकाग्रता पूर्वक निर्णयानुसार कार्याम्भ करें।

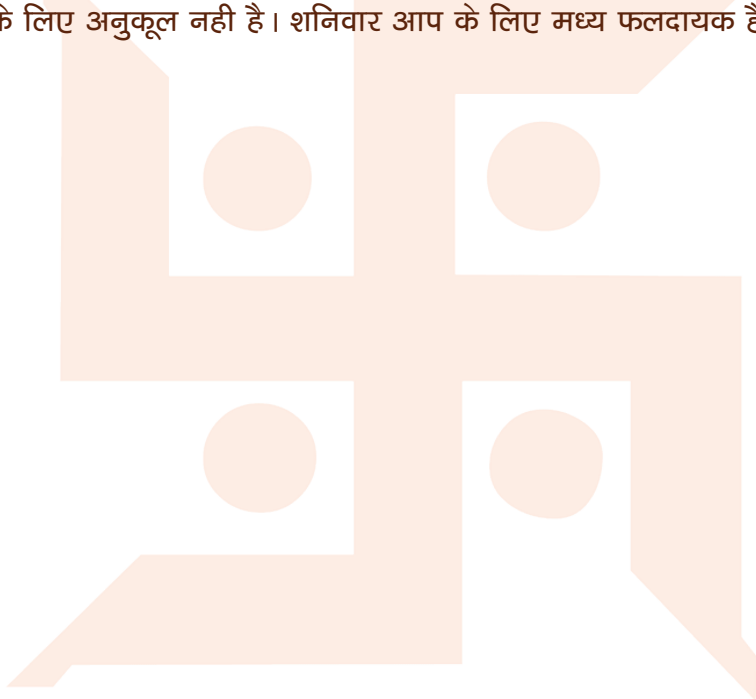
आपको शीघ्रतापूर्वक धन उपार्जन हेतु अतिरिक्त शक्ति सम्पन्न होना होगा। आप अनुकूल व्यवसायिक कार्यकलाप में धन का विनियोग कर सकते हैं। बहुधा आप ठोस व्यवसाय अपना सकते हैं। आप अपनी उत्तेजनात्मक प्रवृत्ति के प्रति उपेक्षात्मक आचरण का निर्माण करें। आपको अपनी लागत की वापसी हेतु किसी प्रकार की उद्घोषणा करने की आवश्यकता है।

आप भ्रमणशील प्रवृत्ति के प्राणी है तथा बहुधा आप अपने निवास को परिवर्तित करते रहते हैं। कुछ भी हो आप अपनी परिवर्तनशील प्रवृत्ति को अटल करें। यह आपके स्वभाव के लिए एक चाभी प्रमाणित होगा। आप अपने अस्थिर रहन-सहन की आदतों को अपूर्ण नहीं रखें अन्यथा यह आपको अति संचालित करता रहेगा। यदि आप अपने जीवन स्तर को उच्चता प्रदान करना चाहते हैं तो आप इस प्रकार की विशेषता का समावेश अपने जीवन में करें।

आपके लिए अंको में सर्वोत्तम अंक 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक है। जीवन के लिए स्वाभाविक है। अंक 1 एवं 8 अंक त्याज्यनीय हैं।

आपके लिए रंग नीला, काला एवं लाल रंग अनुकूल नहीं है। आपको रंगों में पीला, सफेद, हरा एवं सूआपंखी रंग पूर्णतः अनुकूल एवं प्रसन्नतादायक है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरुवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नहीं है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, कोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुखर्ष, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, कोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

षष्ठभावे में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रुचि रहती है। सदगुणों से वे युक्त रहते हैं परन्तु स्त्रियों के प्रति उनके मन में आकर्षण की प्रबलता रहती है। वे भाग्यशाली भी होते हैं तथा उनके सांसारिक महत्व के कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाते हैं फलतः कार्यक्षेत्र में वे उन्नतिशील रहते हैं। उनकी बुद्धि भी तीक्ष्ण होती है तथा कठिन से कठिन विषय को समझने तथा समाधान करने में वे समर्थ रहते हैं। राजनीति में यद्यपि उनकी रुचि अल्प होती है तथापि राजकार्यों में सलाहकार या सचिव अथवा प्रशासनिक क्षेत्र में वे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बुद्धि द्वारा संचालित होते हैं तथा भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि रहेगी तथा कला लेखन मनोविज्ञान या आलोचना आदि के क्षेत्र में आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी। अपनी योग्यता एवं स्वभाव से जीवन में आपको सुखैश्वर्य एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति होगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी एवं गूढ़ से गूढ़ समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे।

लग्न में बुध की राशि के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे। आपकी वाणी मधुर एवं ओजस्वी होगी तथा आदर्श वक्ता के रूप में आप जाने जाएंगे। व्यावहारिक रूप से आप अत्यंत ही कुशलता का प्रदर्शन करेंगे जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। कला एवं साहित्य के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी तथा लेखन सम्पादन आदि में भी सफलता अर्जित करेंगे। शारीरिक बल की आप में प्रचुरता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में इच्छित धनवैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही समाज एवं कार्य क्षेत्र में आप प्रतिष्ठित तथा यशस्वी व्यक्ति होंगे।

स्वभाव से आप शांत एवं उदार रहेंगे तथा समय पर अन्य जनों के उपकार करने में भी तत्पर होंगे श्रेष्ठ कार्यों को करने में आपकी हमेशा रुचि रहेगी। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करेंगे एवं गूढ़ से गूढ़ विषय को भी आत्मसात करने में सफल होंगे।

धर्म के प्रति आपकी प्रबल आस्था रहेगी तथा समय समय पर श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। अपने इन कार्यों से आपको आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप अपनी बुद्धिमता योग्यता एवं पराक्रम से अपने महत्वपूर्ण कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें इच्छित सफलता अर्जित करके शांतिपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म काल में द्वितीय भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है । अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा समस्त पारिवारिक जन परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मृदु एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। रहेंगे। प्रौढ़वास्था में आपको अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त हो सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक एवं अन्य शुभ मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही अन्य उत्सवों का आयोजन करने में भी आपकी रुचि रहेगी। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से भी आप वांछित धनऐश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे। पारिवारिक जनों को प्रसन्नता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक आदरणीय पुरुष होंगे तथा सौभाग्य बल से आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को याद करने में दीर्घकाल तक समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराकमी पुरुष होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से युक्त होकर समस्त सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

चूंकि मंगल भाई बहिनों तथा भूमि संबंधी जायदाद का कारक है। अतः भाई बहिनों से युक्त रहकर उनका पूर्ण सुख, सहयोग प्राप्त करेंगे तथा वे भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे एवं आपके प्रति हमेशा कर्तव्य परायण तथा विश्वसनीय रहेंगे। अतः उनकी गलतियों को आप समय समय पर क्षमा करते रहेंगे। साथ ही भूमि एवं जायदाद आदि से युक्त रहेंगे तथा इससे आपको प्रचुर लाभ तथा सुख प्राप्त होगा। आप एक साहसी तथा पराकमी व्यक्ति होंगे अतः परेशानियों, कोधावस्था तथा अनावश्यक वाद विवाद आदि के समय स्वयं को नियंत्रित करने में समर्थ रहेंगे। आपकी नेतृत्व प्रतिभा तथा अन्य सामाजिक गुणों से लोगों के मध्य अपना वर्चस्व बनाएं रखने में सफल रहेंगे। साथ ही संचार संबंधी उपकरणों की भी आपको प्राप्ति होगी एवं सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संगीत के प्रति भी समय समय पर आप अपनी रुचि का प्रदर्शन करेंगे। दूर समीप की यात्राओं से भी आप लाभ तथा मित्रों को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। परन्तु मित्रों से आपको सतर्क भी रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप पराकमी कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा अन्य जनों से भी यदाकदा विवाद भी हो सकता है अतः सतर्क रहें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप समस्त संसारिक एवं भौतिक सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से भी युक्त होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपको यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको काफी चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। मामा के प्रभाव या सहयोग से भी आपको काफी धन सम्पत्ति मिल सकती है। आप स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धिमता से चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ होगा अतः इसके लिए आप समयानुसार पूंजी निवेश कर सकते हैं।

आपका आवास उत्तम होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त रहेगा। समस्त भौतिक उपकरणों की इसमें प्रबलता रहेगी। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा युवावस्था के बाद अपने वाहन का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी माता जी शिक्षित, बुद्धिमान एवं हास्य प्रिय महिला होंगी तथा अपने हास्यप्रिय स्वभाव से सभी को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगी। परिवार का वह पूर्ण लालन-पालन करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी सदस्य को कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तथा मान-सम्मान भी प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशिष्ट स्नेह भाव होगा एवं आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आपको समय समय पर उनसे वांछित आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके आपसी संबंधों में मधुरता का भाव विद्यमान होगा।

लग्नेश बुध की स्थिति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे तथा अपनी प्रारंभिक कक्षाओं से ही परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंकों से ससम्मान उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनेगा। स्वजनों एवं मित्रवर्ग से आपको पूर्ण प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलेगा। इससे अतिरिक्त आप न्याय संबंधित शिक्षा में इच्छित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आप शीघ्रनिर्णय लेने तथा कठिन से कठिन समस्या को आसानी से सुलझाने में भी आप समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र आदि में आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। ही विज्ञान, गणित या ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रुचि होगी एवं इनके ज्ञानार्जन में आप पूर्ण परिश्रम करेंगे। इससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

पंचमभाव में मकर राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी। आप मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में मर्यादा तथा नैतिकता का भाव बना रहेगा तथा एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः ऐसे सम्बन्धों की परिणति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्या सन्तति की अधिकता होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं चतुर होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनके आज्ञापालन में सदैव तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करना पसन्द करेंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा आपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली माने जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां अर्जित करेंगे। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उन्हें आधुनिक संस्थाओं में पढ़ाएंगे। अतः आपके परिश्रम एवं बच्चों की लगन से वे अपनी आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे अपने उत्तम कार्य-कलापों तथा व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सम्मान अर्जित करेंगे। अतः बच्चों की ओर से आप सुखी रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु तथा सद्प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे परन्तु कभी कभी अपने वार्तालाप में कठोर शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं। इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपकी खुशहाली तथा वैभव से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप उच्च मान सम्मान प्राप्त करेंगे परन्तु आपका विरोध भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इससे यदा कदा ऋण मुक्ति में विलम्ब के कारण सम्बन्धित व्यक्ति से आपकी शत्रुता होने की संभावना रहेगी लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपके नौकर आज्ञाकारी होंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा करते रहेंगे तथा अपने कार्य से आपको वे सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे सामान्य हानि की संभावना रहेगी अतः सतर्क रहना चाहिए। मुकद्दमे आदि के कार्यों में आप लापरवाह रहेंगे। अतः आपको ऐसे मामलों का सावधानी पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने हिसाब को सही रखना चाहिए। इस प्रकार यदि आप सावधानी पूर्वक अपने इन कार्यों को सम्पन्न करेंगे तो आपको किंचित इसमें विजय प्राप्त होगी। साथ ही फौजदारी मामलों में आप सफलता अर्जित करेंगे।

आपके मामा मामियों से संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे प्रत्यक्ष रूप से वे आपके प्रति अपनत्व की भावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके लाभ या सहयोग में कोई रुचि नहीं रहेगी अतः संबंधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करें इसके अतिरिक्त आप वृद्धावस्था में उदर या गुर्दे संबन्धी परेशानी से भी पीड़ित हो सकते हैं। अतः खान पान संबंधी परहेज भी रखना चाहिये।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति वाला आस्तिक एवं धनवान होता है। वह स्वभाव से सौम्य , कर्तव्य परायण एवं सांसारिक कार्यों में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील होंगी तथा स्वभाव से सौम्य रहेगी। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में वह बुद्धिमता का प्रदर्शन करेंगी जिससे यथा समय कार्य पूर्ण होंगे। साथ ही कर्तव्य परायणता के भाव से भी युक्त होंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा साथ ही शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक होगी तथा अंग प्रत्यंग भी सुडौल एवं पुष्ट होंगे जिससे उनके व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य के आकर्षण में वृद्धि होगी। सौन्दर्य की वृद्धि के लिए समयानुसार आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करेंगी। कला एवं संगीत में उनकी रुचि होगी तथा इस पर अपना समय भी व्यतीत करेंगी इसके अतिरिक्त भौतिक एवं संदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकते हैं विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सम्मान की भावना रहेगी साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में सम्पन्न होगा तथा विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी बहुमूल्य उपकरण तथा वस्तुएं उपहार में मिलेंगी। सास ससुर के साथ में आपके औपचारिक संबंध बने रहेंगे तथा विवाह के बाद भी उनसे नैतिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव अनुकूल रहेगा तथा वह सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को प्रभावित तथा सन्तुष्ट रखने में समर्थ रहेंगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपका ज्यौतिष या तंत्र मंत्र अथवा आध्यात्मिकता के प्रति विशेष रुचि या श्रद्धा नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में व्यस्त रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही अन्यत्र भी अपने कार्य कलापों में संलग्न रहेंगे जिससे आपके पास समयाभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचा तो आप इसको खेल आदि में व्यतीत करना अधिक उचित समझेंगे। लेकिन यदा कदा आध्यत्म संबन्धी प्रवचनों का श्रवण कर सकते हैं। आप पैतृक सम्पत्ति से जीवन में लाभ अवश्य अर्जित करेंगे। आप एक भाग्यवान पुरुष होंगे तथा विस्तृत जमीन जायदाद के स्वामी बनेंगे। यदि आप इसे बेचना भी चाहेंगे तो इसमें आपको मनोवांछित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही दिन पर दिन इसकी कीमत में वृद्धि होगी। अतः आप इच्छित कीमत पर इसे बेचकर प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आप शादी के समय दहेज या अन्य प्रकार के उपहारों को इच्छित मात्रा में प्राप्त करेंगे। यद्यपि आपके स्तर के अनुसार इसमें प्रचुरता नहीं होगी फिर भी इसके द्वारा आप अपने रहन सहन आदि के स्तर में वृद्धि करने में समर्थ सिद्ध होंगे। बीमा आदि से भी आपको लाभ होगा तथा समय समय पर स्वयं का तथा अन्य वस्तुओं यथा वाहन मकान आदि का भी बीमा करवाएंगे। आपकी कुंडली में घर में चोरी या डकैती के कोई योग नहीं बनते हैं। यदि ऐसी घटनाएं हो जाएं तो वह सामान्य होगी तथा तथा इसमें चिन्ता करने की कोई बात नहीं होगी क्योंकि आप बहुमूल्य वस्तुओं को पहले ही सुरक्षित स्थान पर रख देंगे। आपकी आयु लम्बी रहेगी तथा सामान्यतया आनन्द पूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा यह धार्मिकता आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों के रूप में प्राप्त होगी। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा के प्रति भी रुचिशील रहेंगे। यद्यपि युवावस्था में आप दैनिक पूजा अल्प मात्रा में ही सम्पन्न कर पाएंगे। लेकिन ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। आप आध्यात्म तथा ध्यान योग के प्रति पूर्ण इच्छुक रहेंगे तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रुचिपूर्वक अध्ययन करके ज्ञानार्जित करेंगे। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी उत्तम रहेगी तथा ज्यौतिष तंत्र मंत्र या हस्तविज्ञान का आपको उत्तम ज्ञान रहेगा या इनके प्रति श्रद्धा रहेगी तथा आपकी अधिकांश भविष्यवाणियां सही होंगी। अन्तर्प्रज्ञा की वृद्धि के लिए आप समय समय पर ध्यान या पूजा का विशिष्ट आयोजन करेंगे।

आप उच्च शिक्षा अर्जित करेंगे तथा इसके द्वारा आपको समाज में मान सम्मान तथा कीर्ति प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की शुभ यात्राएं करने में भी इच्छुक रहेंगे तथा इन यात्राओं से लाभ ज्ञान तथा सम्मान अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रुचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भजन कीर्तन में व्यतीत करेंगे। आपको वैभव शाली तथा विश्राम पूर्ण जीवन व्यतीत करना अच्छा लगेगा। साथ ही अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। आपको अपने पौत्रों के द्वारा सुख सहयोग एवं आनंद की प्राप्ति होगी। वास्तव में आप ने पूर्व जन्म में कई पुण्य के कार्य किए जिससे आपका यह जीवन सर्व सम्पत्ति से युक्त होकर व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाले दानी, सर्व अलंकारों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगे जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्यख्याता, अनुष्ठान कार्य, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासनिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा, ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी जिससे आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा उचित मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आर्थिक क्षेत्र में भी सौभाग्यशाली रहेंगे। माता के द्वारा या सहयोग से आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही समुद्र से उत्पन्न पदार्थों या रत्न आदि के अतिरिक्त कार्य से भी आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी जिसको जीवन में पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। माता की ओर से भी आपको उचित स्नेह मिलेगा तथा उनकी कृपा दृष्टि हमेशा आपके ऊपर बनी रहेगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी अच्छा रहेगा तथा मित्रों के मध्य आप सम्माननीय प्रतिष्ठित तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। साथ ही आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे अवस्था के साथ साथ समाज, मित्र मंडल एवं अन्य जनों के लिए आपके मन में अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा अपनी ओर से उन्हें आप पूर्ण स्नेह देंगे। साथ ही अवसरानुकूल उनकी सहायता के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप पारिवारिक व्यक्ति होंगे तथा घर में परिवार के साथ अतिरिक्त समय व्यतीत करना आपको अच्छा लगेगा। साथ ही सामाजिक सम्मान एवं ख्याति के भी योग बनते हैं जीवन में यदा कदा कार्य क्षेत्र में आपको परेशानी हो सकती है परन्तु सामान्य जीवन सुख एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपका व्यापार सुदृढ़ रहेगा तथा भूमि से संबंधित उत्पादों से आपको आर्थिक लाभ होता रहेगा। आप शीघ्रतिशीघ्र धनवान होने की मन में इच्छा करेंगे अतः उद्देश्य की पूर्ति के लिए अत्यंत ही परिश्रम करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यधिक सतर्क रहेंगे तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका पूर्ण ध्यान रखेंगे। अतः प्रायः शुभ व्यय ही करेंगे एवं वह भी अत्यधिक सोच विचार के बाद। इस प्रवृत्ति से आप पूंजीनिवेश में अधिक धन लगाएंगे तथा बचत भी बनी रहेगी। इस प्रकार आप मध्यमवस्था तक एक धनवान पुरुष के रूप में समाज के मध्य अपने आपको स्थापित करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपके पास धन हमेशा रहेगा तथा बैंक में आपकी स्थिति सम्माननीय रहेगी। आपके पास व्यसन अल्प मात्रा में ही होंगे जिससे अनावश्यक व्यय से हमेशा सुरक्षित रहेंगे परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेदारी समझेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करेंगे। साथ ही बच्चों का रहन सहन, खान पान एवं पठन पाठन पर भी विशेष व्यय करेंगे।

आपको यात्रा करना रुचिकर लगेगा वैसे भी आपकी भ्रमण प्रिय प्रवृत्ति रहेगी। आपकी यात्राएं व्यवसाय से ही सम्बन्धित होंगी। साथ ही यदाकदा धूमने के लिए या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी आप सपरिवार यात्राएं सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आप विदेश भ्रमण पर जाएंगे यात्राओं से आपको लाभ एवं सफलता प्राप्त होगी। इस प्रकार प्रसन्नता पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

नक्षत्रफल

आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, नाड़ी आद्य, योनि अश्व तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "सि" या "सी" अक्षर से होगा।

आपको ठंड से व्याकुलता की अनुभूति होगी तथा इसे सहन करने में आप असमर्थ रहेंगे। आप प्रारम्भ से ही अत्यधिक साहस से युक्त रहेंगे एवं अपने सांसारिक कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगे। आपके साहस को देखकर अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक दक्ष पुरुष होंगे तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अति चतुराई से सम्पन्न करेंगे। समाज में आप का यथोचित आदर एवं सम्मान रहेगा। इसके अतिरिक्त शत्रुओं का नाश करने में आप सफल रहेंगे तथा उनके ऊपर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

**शीतभीरुरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत् ।
वैरिणामतिशयेन दारुणो वारुणोऽनि यस्य स सम्भवं ।।
जातकाभरणम्**

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

ज्योतिष शास्त्र के प्रति आप की रुचि एवं श्रद्धा रहेगी। साथ ही इस विषय का आपको अच्छा ज्ञान भी रहेगा। आप स्वभाव से ही शान्त होंगे एवं उग्र तथा हिंसक प्रवृत्तियों का आप में अभाव रहेगा। आप थोड़ी मात्रा में भोजन करना पसन्द करेंगे तथा इससे आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

**कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ऋत्पभुक् साहसी ।।
जातक परिजातः**

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आप विपुल धन से सर्वथा युक्त रहेंगे तथा समाज में एक धनाढ्य पुरुष के रूप में आपकी ख्याति रहेगी लेकिन आप की प्रवृत्ति कंजूसी से युक्त होगी। अतः आप खुलकर व्यय करने में असमर्थ रहेंगे एवं धन संचय के प्रति ही आप अधिक प्रयत्नशील रहेंगे। महिलावर्ग से भी आपके मित्रता पूर्ण संबंध होंगे तथा अवसरानुकूल उनकी सेवा तथा सहयोग के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप घर से दूर परदेश या विदेशों में प्रायः भ्रमण करेंगे एवं अपना अधिकांश समय घर से बाहर ही व्यतीत करेंगे। इसके साथ ही कामचष्टा की प्रवृत्ति भी आप में रहेगी।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः ।

जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत् ।।

मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप स्पष्टवादी होंगे तथा जो कुछ भी आप कहना चाहेंगे स्पष्ट रूप से अन्य लोगों के समक्ष कहेंगे। इससे समाज में कुछ लोग आपसे प्रसन्न तथा कुछ लोग रुष्ट रहेंगे। साथ ही विविध प्रकार के व्यसनों के प्रति भी आपकी आसक्ति रहेगी अतः जीवन में इनका उपभोग भी आप करते रहेंगे। आप एक दुराग्रही व्यक्ति भी होंगे तथा अपनी ही बात को हमेशा मनवाने का प्रयत्न करेंगे।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्गाह्यः ।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत्त तथा स्वतंत्र होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका उन्नत रहेगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत रहेगे। साथ ही हाथ, पैर एवं कटिभाग भी स्थूलता से युक्त रहेगे। आपके शरीर में रुक्षता भी रहेगी परन्तु इससे आपके सौन्दर्य एवं आकर्षण में कोई कमी नहीं आएगी। आप में विद्रोह की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर इस भावना का आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप स्वभाव से ही उग्र भी रहेंगे तथा कभी कभी अकारण ही उत्तेजित भी हो जाया करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा का भाव विद्यमान रहेगा। आप एक आलसी पुरुष भी होंगे तथा यदा कदा स्वभाविक दुष्टता का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। शिल्प विद्या एवं चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विशेष योग्यता एवं ख्याति अर्जित करने में सफल हो सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप समय पर मानसिक कष्टानुभूति से व्याकुलता का अहसास भी करेंगे।

**उद्धोणो रुक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः ।
सद्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः ।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते ।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः ।।**
सारावली

विविध प्रकार के शास्त्रों का आप परिश्रम पूर्वक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में भी आप रुचिशील तथा निपुण रहेंगे। आप शान्तिप्रिय व्यक्ति होंगे लेकिन शत्रुओं को पराजित करने में सर्वथा सफल रहेंगे।

**अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः ।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरुरिपुव्रजः ।।**
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से कनरकर्मों को सम्पन्न करेंगे या अप्रत्यक्ष रूप से इनमें अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी रुचि भ्रमण एवं यात्रा के प्रति प्रारम्भ से ही रहेगी तथा आपका अधिकांश समय घूमने फिरने तथा यात्रादि करने में ही व्यतीत होगा। धन के प्रति आपमें लालच का भाव रहेगा एवं दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा आपके मन में व्याप्त रहेगी एवं इसके लिए यत्नशील भी रहेंगे। आप की आर्थिक स्थिति सदैव विषमता से युक्त रहेगी। इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्यों के अनुलेपन करने तथा सुगन्धित पुष्पों के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं इनका आप प्रायः उपयोग करते रहेंगे।

**प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः ।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः ।।**
फलदीपिका

आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे तथा समाज में आपकी पूर्ण ख्याति रहेगी लेकिन अन्य विद्वानों को आप पूर्ण सम्मान प्रदान नहीं करेंगे जिसे लोग अच्छा नहीं समझेंगे अतः इससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी। साथ ही कभी अन्य लोगों से आपका व्यवहार भी अच्छा ही रहेगा।

**कुम्भस्थे गतशीलवान् बुधजनद्वेषी च विद्याधिको ।
जातक परिजातः**

आप जीवन में सामान्यतया सफलता तथा विजय प्राप्त करते रहेंगे एवं आचरण से हमेशा श्रेष्ठ रहने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। धनैश्वर्य से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। गुरुजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समय समय पर आप

इनकी सेवा करने तथा सहयोग प्रदान करने के लिए आप सदैव तत्पर तथा प्रयत्नशील रहेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार के सद्गुणों से आप युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

**भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सचरित्रः ।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः ।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेषु कर्ता ।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि मनुष्यः ।।
जातक दीपिका**

आपकी गर्दन की लम्बाई अधिक होगी एवं नसे भी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होती रहेगी। वातजन्य रोगों से विशेषतः आपको सुरक्षा रखनी चाहिए। महिला वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे। साथ ही मित्रों के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह एवं प्रेम का भाव रहेगा तथा उनके सहायता तथा सहयोग के लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे।

**करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः ।
पृथुचरणोरुपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः ।।
परवनिताथ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः ।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः ।।
वृहज्जातकम्**

दानशीलता की प्रवृत्ति से आप प्रारम्भ से ही युक्त रहेंगे तथा यत्नपूर्वक जीवन में अपनी इस प्रवृत्ति का अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप में कृतज्ञता का भाव भी रहेगा एवं अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनका हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से भी युक्त रहेंगे तथा जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर रहेंगी एवं बुद्धि भी सरलता के गुण से सुशोभित रहेगी अतः आप किसी भी व्यक्ति के प्रति धोखा या प्रपंचादि की प्रवृत्ति अपने मन में नहीं रखेंगे। इस प्रकार अपने प्रेमी स्वभाव तथा सत्कार्यों के द्वारा आप समाज के सभी वर्गों में लोकप्रियता अर्जित करेंगे एवं स्वभुजबल से धनार्जन करके सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

**दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः ।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः ।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः ।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः ।।
मानसागरी**

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृत्ति कभी कभी अधिक बोलने की होगी साथ ही आप में दया तथा करुणा के भाव की भी अल्पता विद्यमान रहेगी परन्तु आप एक साहसी पुरुष होंगे अतः अपने अधिकांश कार्यों को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपकी प्रवृत्ति में

क्रोध की भी प्रवृत्ति रहेगी एवं समय समय पर कभी अकारण ही इस प्रवृत्ति का अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप विवाद आदि करने में भी तत्पर होंगे एवं समाज में किसी न किसी से आपका विवाद चलता रहेगा। साथ ही शारीरिक बल की आप में पूर्णता रहेगी।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपका स्वरूप भी आकर्षक रहेगा। परन्तु आप अपने सम्भाषण में कभी कभी कठोर शब्दों का उपयोग करेंगे जिससे अन्य लोग तथा श्रोता आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।

दुःशीलवृत्तः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।

जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्रप्रिय व्यक्ति होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वच्छन्दता पूर्वक करना पसन्द करेंगे। इनमें बाह्य हस्तक्षेप या दबाव आपको रुचिकर नहीं लगेगा। आप सद्गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे अतः आपके अधिकांश सांसारिक कार्यकलाप साहस पूर्वक ही सम्पन्न होंगे। आप में तेजस्विता का भाव भी रहेगा जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। वीणा या ऐसे ही वाद्य मंत्रों के प्रति आपकी रुचि रहेगी एवं इनके वादन में आप दक्ष रहेंगे। इसके साथ ही आप एक विश्वासी व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों का आपके ऊपर पूर्ण विश्वास रहेगा।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।

स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।

मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृत्ति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए चैत्रमास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरुवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, गण्डयोग, आर्द्रा नक्षत्र तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरुवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रिक मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे

आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं अनिष्ट प्रभाव समाप्त होंगे तथा सर्वत्र शुभ एवं लाभमार्ग प्रशस्त होंगे ।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।

मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उद्धृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक



FUTUREPOINT
Astro Solutions



के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्यमय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौड़ियां लेकर उसी दिन एक जगह इकट्ठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात् दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिद्धियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बीमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध



FUTUREPOINT
Astro Solutions



(जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य, बेटी-बुआ आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप दानी, भरोसे से काम करने वाले। आप अपने पराक्रम से प्रगति करेंगे। स्वयं उन्नति कर दूसरों के लिए उन्नतिकारक होंगे। स्वयं पराक्रम से धन कमाने वाले, हुनर की कमाई से बरकत पाने वाले। आपको उत्तम सवारी का सुख मिलेगा। आपको तीनों लोकों का सुख प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में मुखिया बनेंगे। धर्म मंदिर-धर्मशाला का निर्माण करवाएंगे। ससुराल एवं पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। माता-पिता/सास-ससुर सगे संबंधियों के लिए अनुकूल तथा परिवार में स्त्रियों के लिए भारी होंगे। आपको सरकार से लाभ मिलेगा और सरकारी अधिकारियों से मान-सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारोबार के मालिक भी बन सकते हैं। कर्ण की तरह दानवीर भी बनेंगे।

यदि आपने अपने रिश्तेदारों से जायदाद-धन आदि के लिये मुकद्दमें आदि किये, किसी दूसरे व्यक्ति का माल हड़प किया, सफेद वस्तुएं (चावल-चांदी दूध आदि) मुफ्त ली तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आपकी पत्नी, प्रेमिका तथा धन पर बुरा असर पड़ेगा। माता या मौसी पर भी अशुभ प्रभाव होगा। परिवार में स्त्रियों की संख्या कम होगी। इस हालात में बहन, माता/सास, भाभी पर अशुभ असर पड़ सकता है। माता, बुआ या मौसी विधवा हो सकती है। धन, स्त्री, जमीन के लिये मुकद्दमें झगड़े अगर आप करेंगे तो आपका कुल तक नष्ट हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त के माल पर नजर न रखें।
2. गिफ्ट या दान न लेवें।

उपाय :

1. नारियल या सरसों का तेल या बादाम धर्म स्थान में दें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से कन्या संतान अधिक होंगी। आप योजना बनाने में कुशल और बुद्धिमान होंगे। मुकद्दमे में आपको सफलता मिलेगी। मामा पक्ष के लोगों से सहयोग और लाभ की संभावना है। जैसी करनी वैसी भरनी की नसीहत को आप हर दम याद रखेंगे। आपकी बुआ-बहन-लड़की सुखी रहेगी। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है, आप तड़पते हुए व्यक्ति के मुंह में पानी डालने वाले सबके हमदर्द होंगे। आपको गरीबी का मुंह नहीं देखना पड़ेगा। आप किसी गंभीर रोग के रोगी नहीं होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यदि आपने बहन-बेटी का धन प्रयोग किया, अपना भेद किसी को बताया, सूर्यास्त के बाद दूध पिया, छबील या प्याऊ लगाया या आम लोगों के लिए धर्मार्थ कुआं, हैंड पंप लगाया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपको माता के सुख में कमी आ सकती है या सौतेली मां के साथ बचपन बिताना पड़ सकता है। 24 वर्ष की आयु में यदि आम जनता के लिए कुआं या पानी का साधन लगवायेंगे तो उसका बुरा असर माता और संतान पर पड़ेगा। आपकी स्त्री की आंख में कुछ खराबी होने की संभावना है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों का नुकसान होने की उम्मीद है। शत्रु आप से भय खाएंगे। कोर्ट-कचहरी का झमेला आपको झेलना पड़ सकता है। आपको कभी-कभी गंभीर चिंता करनी पड़ सकती है। आप जब कभी बिना सोचे-समझे काम करेंगे तो सामने परेशानी आ सकती है। माता को कष्ट रहेगा, मौत तक भारी समय आयेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. 24 वर्ष की आयु में मुफ्त पानी दान का साधन कायम न करें।
2. किसी को अपना भेद न बताएं।
3. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

उपाय :

1. शमशान-अस्पताल में पानी का साधन कायम करना शुभ है।
2. माता को कष्ट के समय खरगोश पालें।
3. चन्द्र ग्रहण में 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप न्यायप्रिय, साहसी, पशुपालक, व्यापारी होंगे। आपका स्वास्थ्य उम्दा रहेगा। अपनी किस्मत स्वयं बनाने वाले होंगे। आप अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। आपके जीवन में आपकी 28वें वर्ष से लगातार 42वें वर्ष तक की आयु तक खूब धनागम होगा। आर्थिक दशा में राजा के समान होंगे। आपके भाग्य के कारण छोटी उम्र में ही पिता के घर धन का भंडार लग जायेगा। आपका व्यवसाय या नौकरी ऊंचे दर्जे की होगी। आपको पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा। आपके जीवन में बुरा असर कम पड़ेगा। कई प्रकार से आमदनी का स्रोत होगा। अपनी कमाई से भूमि-भवन प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं को दबा कर रखना पड़ेगा। आपको सुख-सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी। फकीरी वेश-भूषा में रह कर भी आपकी आध्यात्मिक शक्ति अच्छी होगी।

यदि आपने माता-पिता, संबंधियों से झगड़ा किया, भाई-बन्धुओं से जमीन जायदाद के लिये मुकद्दमा किया, किसी से काम करवा कर उसका मेहनताना नहीं दिया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से भाई-बन्धुओं से जमीन-जायदाद, धन संबंधी झगड़े का भय रहेगा। अगर आपका चाल-चलन

ठीक न रहे तो आमदनी होते हुये भी कर्जदार होंगे, संपत्ति बर्बाद होगी। आपके बच्चे झगड़ालू होंगे या परिवार में बच्चा गोद भी लेना पड़ सकता है। उसके आगे के जीवन में कुछ भी बुराइयां नहीं रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई-बंधुओं पर भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. जीजे-साले-भांजे या दोहते की सेवा करें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर भर कर घर में रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध तीसरे खाने में है। इसकी वजह से सदैव यात्रा करेंगे। चिकित्साकार्य में यश के भागी बनेंगे। मित्र एवं संबंधियों का सहयोग प्राप्त होगा। मिश्रित रूप से उत्तम फल प्राप्ति के योग हैं। आप सगे संबंधियों के अतिरिक्त अन्य लोगों के लिए शुभ हैं। आपके संपर्क के लोगों को लाभ प्राप्त होगा। आपको धन के लिए उत्तम फल प्राप्त होते हैं। आप फलों के काम, कृषि कार्य, कांसे के बर्तनों का काम तथा पशु पालन कार्य से लाभ प्राप्त करेंगे। संतान एवं मातृपक्ष के परिवारों के लिए आप लाभदायक हैं। आप में दमा के रोगी को ठीक करने की कला है। आप व्यापार में प्रगति करेंगे। आप लड़ाई-झगड़े से परहेज करेंगे तथा आप लड़ाई-झगड़े का दुःसाहस भी नहीं करेंगे। यद्यपि आप भयातुर नहीं रहेंगे। बुरे कार्यों से तटस्थ रहने का प्रयास करेंगे। किसी कार्य को प्रारंभ करने में अनेक विचार उत्पन्न होंगे तथा निर्णय लेने में सहायता की अपेक्षा करेंगे। आप अपनी बुद्धि का प्रयोग करने में भी संकोच नहीं करेंगे।

यदि आपको मूंग खाने का शौक हुआ, बुआ-बहन-लड़की का धन उपयोग किया, चौड़े पत्तों का वृक्ष आपके घर में हुआ, घर का दरवाजा दक्षिण दिशा में हो तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपका जीवन धूमिल है। आपको भाई-बहन का सुख कम प्राप्त होगा। भाई-बहन से झगड़ा हो सकता है। आपकी भाग्योन्नति में अवरोध उत्पन्न होते रहेंगे। संतान-सुख विलंब से मिलेगा। जुबान में तोतलापन आ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बुआ-मामा से झगड़ा न करें।

2. चौड़े पत्तों का वृक्ष घर में न लगावें।

उपाय :

1. दुर्गा पूजन या कन्याओं की सेवा करें।
2. तोता पालें या तोते को चूरी खिलायें।

गुरु

आपकी कुंडली के बारहवें खाने में वृहस्पति पड़ा है। जिसकी वजह से आप उत्तम ज्ञानी होंगे। आप दूसरों का भला करेंगे इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपका अधिक समय पूजा-पाठ में व्यतीत होगा और पूजा-पाठ से भी आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपको धन से बहुत लगाव नहीं रहेगा आप त्यागी पुरुष होंगे। अपार धन आपके पास रहेगा मगर आप धन के पीछे नहीं भागेंगे। आपमें सेवा भावना रहेगी। आप ध्यान-समाधि की आदत डालें तो आपके घर सोने की वर्षा होगी। आप हृदय से वैरागी और ज्ञानी होंगे। आपका साधू जैसा स्वभाव होगा। आपका धन शुभ कर्म में खर्च होगा। आप खर्च के बोझ से दुःखी नहीं रहेंगे। बुरा कर्म आप नहीं करेंगे, यदि बुरे काम करने की प्रवृत्ति हुई तो बहुत नुकसान होगा। यदा-कदा औलाद के विषय में चिंता होगी। आप धन-दौलत के संबंध में राजा जनक की तरह त्यागी होंगे। गृहस्थ में हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। आपका परिवार बढ़ेगा, खुशहाल रहेगा। खुद भी निश्चिंत रहेंगे। आप किसी को आर्शीवाद दें तो उसको आपका आर्शीवाद फलेगा। आपका किसी को दुर्वचन नहीं लगेगा। दलाली का काम लाभकारी होगा।

यदि आपने जनता विरोधी कार्य किये, झूठी गवाही दी या किसी से धोखा फरेब किया, धन के लिये किसी के आगे हाथ फैलाने की आदत रखी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप दूसरों को सता कर स्वयं कष्ट और मुसीबत में पड़ जाएंगे। आप अधिक न बोला करें यह आपके लिए अच्छा नहीं है। आध्यात्म का मार्ग नुकसानदेह रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. ऐसे काम न करें जिससे आपका विरोध हो।
2. किसी के साथ धोखा-फरेब न करें।

उपाय :

1. गुरु-पिता, साधू की सेवा करें।
2. पीपल को जल से सींचें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपके घर में कभी चोरी नहीं होगी। आपकी पत्नी सच्चरित्र होंगी और आप स्वयं भाग्यवान रहेंगे। पत्नी

जीवन भर आपका साथ निभाएगी। आप अपनी पत्नी से दब कर रहेंगे। आपकी संतान अधिक होंगी। आपको तीर्थ यात्राएं बहुत करनी पड़ेंगी। आप सभी के प्यारे होंगे। धन का व्यय अधिक करेंगे। कभी-कभी अधिक लाभ भी होगा। आपकी पत्नी आपके सभी कार्यों में हाथ बटाएंगी या पत्नी के नाम से किये कार्यों से लाभ प्राप्त होगा। स्त्री, लक्ष्मी, गाय की सेवा से अच्छा फल प्राप्त होगा। आप दूसरी औरत पर आशिक होंगे। शत्रु आपका नुकसान नहीं कर सकेगा। कोई भी औरत आप पर मोहित हो सकती है। आपको कम परिश्रम करके ही रोटी नसीब हो जाएगी। आपकी आमदनी अच्छी होगी। आप सभी सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे, परंतु सुख की नींद नहीं सो सकेंगे। माता-पिता का सुख लंबे समय तक मिलेगा। आपकी पत्नी कमाऊ होंगी जो आपके कंधे से कंधा लगाकर मुसीबत में साथ देगी।

यदि आपने एक से अधिक स्त्रियों से संबंध रखे, बुजुर्गी घर के मुख्य दरवाजे की दहलीज को नष्ट किया, राग-रंग में रुचि रखी तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपका कई स्त्रियों से संपर्क रहेगा। आप अपनी पत्नी का क्रोध एवं साहस देख कर हैरान होते होंगे। आपके जीवन में भवन सुख दूषित है। यदि मकान बनाएं भी तो वह घर उजड़ सकता है। माता के सुख में बाधा है यदि आपकी आयु के 34वें वर्ष तक मां जीवित रहेंगी तो उनकी दीर्घायु होगी। आप दुःखी लोगों और मुसीबतों से घिरे रहेंगे। धन-दौलत, उम्र बढ़ने के साथ-साथ घटती जाएगी। यदि सौतेली माता हुई तो उससे कोई लाभ नहीं होगा। ससुराल पक्ष से यदि कोई साझेदारी करें या वे लोग आपके काम में सहयोग करें तो हानि होगी। आपके भाई-बंधुओं के हाथों धन की हानि होगी। पैतृक संपत्ति आपके काम नहीं आएगी। आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बुजुर्गी घर की दहलीज को खराब न होने दें।
2. राग-रंग में रुचि न रखें।

उपाय :

1. स्त्री की सेवा करें।
2. मंगल की चीजों का प्रयोग करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप पैसे की परवाह नहीं करेंगे और बेबाक खर्च करेंगे। पैतृक संपत्ति प्राप्त होगी। आप असहायों को सहारा देंगे और उजड़ों को बसाएंगे। आपका कोई शत्रु नहीं होगा। आप धनवान और सुखी होंगे। आपकी जो भी इच्छा होगी देर-सबेर पूरी होगी। आपके पास विभिन्न प्रकार की जायदाद होगी। आपका जीवन आराम से बीतेगा। आपका परिवार खानदानी होगा। आपकी कमाई में बरकत होगी। आप अपने पिछले जन्म की इच्छाओं के अनुरूप कोई बड़ा कार्य संपन्न करेंगे। आप में



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साधना करने की कला विद्यमान हैं। आप मुखिया या नेता हों या ऐसा सम्मान प्राप्त हो यह संभावना है। आपकी आमदनी और सुख के लिए शुभकारक है। आपमें जरूरत से ज्यादा होशियारी रहेगी। आपको रात्रि में पूरा आराम और सुख प्राप्त होगा।

यदि आपने प्लॉट खरीद कर मकान बनाया, मकान के अंत में अंधेरा कमरा हो उसको रोशनी में बदला, झूठ को धर्म बनाया, दूसरे के माल पर नजर रखी तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से झूठ बोलना या शराब आदि का चस्का लग जाना बहुत हानिकारक हो सकता है। आप गुप्त रूप से कुछ धोखा-फरेब करने के आदी हो जाएंगे। आप झूठ बोलने वाले, चरित्रहीन स्त्रियों से संबंध रखने वाले या शराब आदि का सेवन कर, अशुभ फल के भागी बनेंगे। जुबान का चस्का भी आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आंखों की नजर संबंधी दोष हो सकता है। एक से अधिक विवाह की आशंका है। आप कभी-कभी बहुत ज्यादा गुस्सा कर बैठते हैं जो बड़ा नुकसानदेह है। आप अपनी पत्नी के गुलाम होंगे। हर वक्त आप चालाकी करते रहेंगे। संतान सुख में विघ्न या संतान देरी से होगी। आप पर कत्ल या दीवानी का मुकद्दमा चल सकता है। पुलिस/कोर्ट में जुर्माना या दण्ड का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. दूसरों के माल पर नजर न रखें।

उपाय :

1. तांबे के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. तख्त पोश पर शयन करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में राहु पड़ा है। जिसकी वजह से आपके लिए तमाम सुख-सुविधाओं का योग रहेगा। आप योगी की तरह आचरण करेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने बलबूते पर खड़े होंगे। व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त रहेंगे। आप धनवान अपने भाई-बहन से स्नेह रखने वाले, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले और सुख के साथ जीवन को गुजारेंगे। आप कभी भी अर्थिक रूप से परेशान नहीं होंगे। आपकी कन्या जन्म के बाद लक्ष्मी की बड़ी कृपा होगी और आपको सभी सुख प्राप्त होंगे। विवाह-उत्सव आदि कामों में खूब खर्च करेंगे। अथाह धन की प्राप्ति होगी। आप अपनी पुत्री व बहन पर अधिक खर्च करेंगे। आप पर ऋण का बोझ पड़ जाये तो वह शीघ्र उतर जाएगा। शुभ समय पर कोई काम करके कामयाबी हासिल करेंगे। ससुराल पक्ष धनवान होगा, शत्रुओं से बचाव होगा।

यदि आपके लड़कियां अधिक हुई, मकान रोशनी वाला हुआ, बिना सोचे समझे काम किया, शेख चिल्ली की तरह बातें ही बातें बनाने की आदत हुई तो आपका राहु मंदा हो

सकता है या किसी कारणवश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बुरे व्यसनों की आदतों के कारण या समाज में बदनाम लोगों से दोस्ती के कारण दुःखी होंगे। आपको पसलियों या आंतों के रोग की आशंका बनती है। बवासीर रोग की आशंका है। दिमागी परेशानी के कारण रात्रि शयन में बाधा की आशंका है। आप शेख चिल्ली की तरह सपने देखेंगे और अपना समय बर्बाद करेंगे। मानसिक पीड़ा से दुःखी रहेंगे। फौजदारी-दीवानी मुकद्दमों में उलझ सकते हैं। गबन करने पर इल्जाम लगेगा। बिना सोच-समझे किये कामों में हानि हो ऐसी शंका है। आपके परिवार का बोझ आप पर होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. रसोई से बाहर खाना न खावें।
2. घर के आंगन में धुआं न करें।

उपाय :

1. घर के आखिर में अंधेरी कोठरी बनावें।
2. चांदी का ठोस हाथी घर में रखें या चांदी का चौरस टुकड़ा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप अभिमान रहित होंगे। आप एक अच्छे सलाहकार होंगे। आपकी संतान आपके कामों में हाथ बंटायेंगी। आप धनवान, शत्रुओं को परास्त करने वाले ननिहाल के लिए शुभ रहेंगे। आपकी संतान आपकी सहयोगी होगी। आपका पुत्र आपकी मुसीबतों का जाल कटेगा और आपकी सहायता करेगा। आपको अपने जीवन में आराम मिलेगा। आप देश या परदेश में कहीं भी रह कर सुखमय जीवन बिताएंगे।

यदि आपने ससुराल से सोने की अंगूठी या 2 चारपाई या पलंग विवाह समय न लिये, ससुराल से मिली अंगूठी गुम हो जाये या बिक जाये तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से माता और ननिहाल में बुरा असर पड़ेगा। आपको कुत्ते से डर लगेगा। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। आपका फिजूल खर्च भी हो, ऐसी संभावना है। आपका बुढ़ापा कष्टमय रहेगा। कभी-कभी आपको बेकार की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। बिना किसी कारण के शत्रु पैदा हो सकते हैं। आपकी वृद्धावस्था सुखी नहीं रहेगी। आपका पुत्र दूसरों के लिए बदनसीब होता है। लड़कियां अधिक हो सकती हैं। पेट-चमड़ी-पांव में रोग होगा। आवारा घूमना या धन का अपव्यय अधिक होगा, बिना कारण शत्रु पैदा होते रहेंगे। मामा और माता को कष्ट की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. ससुराल से मिली सोने की अंगूठी गुम न होने दें और न बेचें।
2. परिवार की लड़कियों से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. शुद्ध सोने की अंगूठी बायें हाथ में पहनें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।
2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।
3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।
4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।
5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।
6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर दें।
7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।
8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।
9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें।
10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये।
11. बुजुर्गों के रीति-रिवाजों को न तोड़ें और संस्कार पूरे करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2023

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरु मेष राशि में अष्टम भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में षष्ठ भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको व्यवसाय में अच्छा लाभ होगा। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। साझेदारी में लाभ होगा। नौकरी में मान सम्मान बढ़ेगा।

22 अप्रैल के बाद स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताओं से समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उस समय गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है परन्तु षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उसका नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान का गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे, और अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

22 अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। आपके परिवार में हुए मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल है। अष्टमस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि के कारण पैतृक संपत्ति व अचानक धन लाभ के साथ-साथ ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह संस्कार हो सकता है। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण समाजिक प्रतिष्ठा व पराक्रम में बढोतरी होगी। सामाजिक गति बिधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे।

22 अप्रैल के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बन रहा है। आपके ससुराल पक्ष के लोग आप से प्रसन्न रहेंगे और उनके साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम स्थान का गुरु आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि उत्पन्न करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। 22 अप्रैल के बाद आपके बच्चों के लिए समय सामान्य रहेगा।

आपकी सन्तान भूमि, भवन व वाहन इत्यादि के क्रय-विक्रय सम्बन्धी सकारात्मक योजना बनाएगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। जिससे प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो सावधानी बरतें, क्योंकि 22 अप्रैल के बाद समय और प्रभावित हो सकता है। उस समय आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। षष्ठ स्थान में शनि के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो उनको करियर में लाभ की सम्भावना है। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को छोड़ कर आगे निकलेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों का अपना ब्राण्ड नेम भी स्थापित हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से छोटी यात्रा होती रहेगी। व्यापारिक व्यक्तियों को व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं करनी पड़ सकती हैं।

22 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करने में सफल होंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 22 नवम्बर के बाद द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा का अच्छा योग बना रही है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्य भी करेंगे। 22 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर धन का व्यय करेंगे। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी धन खर्च करेंगे।

- सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें औरघी का दीपक जलाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे, और वीरवार का व्रत रखें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मासिक फलादेश

जनवरी 2023 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी आपके परस्पर संबंध मधुर नहीं रहेंगे अतः तनाव का वातावरण रहेगा। आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में इस मास मन्दी आ सकती है तथा स्थान परिवर्तन का योग भी बनता है। साथ ही अस्थायी कार्य यदि कोई हो तो वह छूट सकता है। समाज में लोगों से इस मास आपके तनाव पूर्ण संबंध रहेंगे फलतः सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग उत्पन्न हो सकते हैं तथा अनावश्यक रूप से भी धन व्यय होगा फलतः आप यदाकदा दुःखी रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप वात या ठण्ड से उत्पन्न होने वाले रोगों से भी पीड़ित हो सकते हैं। इस समय आप किसी ऐसे कार्य करने के लिए प्रवृत्त होंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। साथ ही समाज में भी आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी धन हानि का योग बनता है अतः सम्पूर्ण मास सावधानी पूर्वक अपने किया कलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रदाता रहेगा तथा अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी लाभ अर्जित करेंगे। आपके सामाजिक प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। इस मास में आपके महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे तथा कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना भी उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित सहयोग तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी आप मुक्त होंगे।

परन्तु शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी एवं आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आप अग्नि द्वारा भी किसी प्रकार की धन हानि को प्राप्त करेंगे। अतः सोच समझकर अपने सभी कार्यों को सम्पन्न करें।

मार्च 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ की अपेक्षा अशुभ ही अधिक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा साथ ही शत्रु पक्ष के बलवान होने से आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति रहेगी। इस मास में आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। साथ ही ऐसे समय में उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें एवं उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करें अन्यथा आपको दण्डित भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा असफलता अधिक मिलेगी। साथ ही इस समय धन का व्यय भी अधिक मात्रा में करेंगे अतः न्यूनाधिक आर्थिक संकट भी बना रहेगा। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आपके मित्र तथा संबंधियों से मधुर संबंध अल्प रहेंगे तथा तनाव अधिक रहेगा तथा आप सामाजिक उपेक्षा भी प्राप्त करेंगे एवं आपकी आशाएं भी अपूर्ण ही रहेंगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही इस मास में नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित करने में सफल हो सकते हैं। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक सन्तुष्टि तथा शान्ति प्राप्त कर सकेंगे।

अप्रैल 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही आपके शत्रु भी बलवान होंगे जिससे आप उनसे भी भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे एवं मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। मित्रों एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा जिसके कारण आपके मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। फलतः मानसिक रूप से आप अत्यंत ही अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से भी समय समय पर वाद विवाद तथा संघर्ष होते रहेंगे जिससे समाज में भी सम्मान में अल्पता आएगी। अतः सोच समझकर अपना समय व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोषों से अस्वस्थ होंगे फलतः शरीर में निर्बलता रहेगी। इस समय रुधिर विकार भी हो सकता है अतः सावधानी पूर्वक रहें एवं दुर्घटनाओं की उपेक्षा करें। इसके अतिरिक्त इस समय आग के द्वारा भी आपकी क्षति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा।

मई 2023 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे इस समय आप

शत्रुओं से अनावश्यक रूप से चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक रूप से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे इससे आप में दुर्बलता भी आएगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्राएं भी करेंगे। साथ ही अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में आपको कठिनाई का सामना करना पड़ेगा इस समय मुकद्दमे आदि में भी धन का व्यय हो सकता है। अतः संयमपूर्वक इस समय को व्यतीत करें अन्यथा कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो सकती है।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा उससे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता की वृद्धि होगी तथा धन लाभ एवं सुखार्जन करने में भी आप न्यूनाधिक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही समाज में आप यश भी प्राप्त करेंगे।

जून 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण रूप से शुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आप किसी सम्माननीय पद को प्राप्त करने में भी सफल होंगे। इस मास में आपका धनार्जन प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होने की संभावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा यथाशक्ति आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। समाज में इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश भाग्योदय संबंधी कार्य भी इसी समय सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। इस प्रकार इस समय सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से मनोवांछित सहयोग तथा सुख की प्राप्ति करेंगे तथा बुद्धिमत्ता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करके अन्य स्त्रियों से भी धनार्जन तथा सुख संसाधन अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

जुलाई 2023 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्यक्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में

पूर्ण सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपकी पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे। जिससे मानसिक रूप से प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक आप इनकी पूजा एवं सेवा करते रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश फैलेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभयोग बनते रहेंगे। इस मास में आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त विगत असफल अशाओं को पूर्ण करने में भी इस समय आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण लाभार्जन तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ तथा सुखार्जन में भी सफलता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा भाग्यशाली सिद्ध होगा।

अगस्त 2023 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय स्त्रीवर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही सौभाग्य से भी युक्त रहेंगे। अतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। इस समय अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रुचि उत्पन्न होगी तथा इस में आप सफल भी होंगे। मित्रों तथा संबंधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे भी यथोचित सुख सम्मान एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही मनोच्छिन्न द्रव्य पदार्थों की भी आपको इस मास में लाभ होने की सम्भावना रहेगी। संततिपक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। फलतः आप मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आपको इस समय उपलब्धि हो सकती है। अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला रहेगा।

सितम्बर 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुर्जनों की संगति में सम्मिलित होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा। साथ ही

अत्यन्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अल्प मात्रा में सिद्ध करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का ही भाव अधिक रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी धन हानि या व्यय के योग बनेंगे। इस मास में मित्रों तथा संबंधियों से आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव तथा तनाव का वातावरण विद्यमान रहेगा। नौकरी या व्यापार आदि में भी इस समय अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी एवं शत्रुपक्ष से भी भय एवं चिन्ता का भाव रहेगा। जिस कार्य को भी आप इस मास में सम्पन्न सम्पन्न करना चाहेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा अप्रसन्न रहेंगे।

परंतु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा बुद्धिमता से आपके कार्य सम्पन्न होंगे तथा अन्य प्रकार से भी सुखी रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक कार्य को भी आप सम्पन्न कर सकते हैं।

अक्तूबर 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष निर्बल रहेगा साथ ही लाभ मार्ग भी उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। सामाजिक जनों तथा मित्रवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा इनके मध्य आपकी प्रतिष्ठा में आशातीत वृद्धि होगी। उच्च उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा लाभ भी अर्जित करेंगे। इस मास में आपका भाग्य प्रबल रहेगा तथा शुभ कार्य यथासमय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त समस्त सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा स्त्री वर्ग से भी सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके आप सुख एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आप रुचि रखेंगे तथा समाज एवं बन्धुवर्ग से यथोचित सम्मान भी प्राप्त करेंगे।

नवम्बर 2023 के लिए फलादेश

यह मास आप सुख तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थ भी रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी पूर्ण वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा इनसे यथोचित मान सम्मान भी अर्जित करेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से भी आपको अनुकूल सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा। इस

मास में आप मिष्ठान का उपयोग अधिक मात्रा में करेंगे। साथ ही आपका शत्रु वर्ग आपसे पूर्ण रूप से प्रभावित तथा भयभीत रहेगा एवं आपका सामना करने में वे असफल रहेंगे। इस समय स्त्री से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा सम्पूर्ण मास सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। अतः आप गर्मियाँ पित्त द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रक्त विकार का योग भी बन सकता है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान दें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2023 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम फल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी विविध सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको उचित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन तथा सत्कार भी आप करते रहेंगे तथा समाज में दूसरे लोगों के परोपकार के लिए भी आप कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे फलतः आपके यश में वृद्धि होगी तथा पदोन्नति की संभावना बनेगी। साथ ही भाई बहिनों से आप इस समय वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प तथा मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी जिससे आप हृदय से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए पूर्णतया सुख शान्ति एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में षष्ठ भाव में और राहु मीन राशि में सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में अष्टम भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में नवम भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। सप्तम स्थान का राहु आपके व्यवसाय में उतार चढ़ाव का योग बना रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपकी भाग्योन्नति होगी। व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह वर्ष साझेदारी व्यवसाय के लिए अनुकूल नहीं है।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ धन-सम्पत्ति के लिए सामान्य रूप से अनुकूल रहेगा। अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। अप्रैल के बाद नवम स्थान का गुरु आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। सन्तान के भाग्य से धनागमन बढ़ेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का सहयोग प्राप्त होगा। सप्तम स्थान का राहु आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य तथा उसके साथ सम्बन्धों में समस्याएं उत्पन्न करेगा या किसी कार्यवश आप अपने घर से दूर रह सकते हैं।

अप्रैल के बाद सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे पराक्रम व प्रभाव में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। सन्तान की शिक्षा व स्वास्थ्य के मामले में सतर्क रहें।

अप्रैल के बाद समय विशेष शुभ है। आपके बच्चों का भाग्योदय होगा तथा शिक्षा में बेहतर करेंगे। अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु और लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो सावधानी की अधिक आवश्यकता है। अपने खान-पान के साथ-साथ दिनचर्या पर भी ध्यान दें।

अप्रैल के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके विचार परिपक्व होंगे। धार्मिक कृत्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष शुभ रहेगा। छठे स्थान में शनि के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो समय उत्तम है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से सम्बन्धित कार्य कर रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष श्रेष्ठ है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी तथा रोजगार की प्राप्ति होगी। अप्रैल के बाद उच्च शिक्षा प्राप्ति का योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

अप्रैल के बाद नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएँ भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु अप्रैल के बाद आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप लक्ष्य प्राप्ति के लिए ईश्वर की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रुषा करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



- केले या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

मासिक फलादेश

जनवरी 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके शत्रु प्रबल रहेंगे तथा उनसे आप भयभीत तथा चिंतित रहेंगे। जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्नता तथा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबंधी कार्य में मन्दी आएगी तथा कई अनावश्यक विघ्नबाधाएं भी उत्पन्न होंगी। साथ ही आपका कोई कार्य बंद हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन होने की संभावना बनेगी। समाज में अन्य लोगों से इस मास में आपका अनावश्यक विवाद या संघर्ष होगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शारीरिक कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार की क्षति या हानि हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2024 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको द्रव्य लाभ का योग बनेगा। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों को भी आप सुनेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से आप लाभार्जन करने में भी सफल हो सकते हैं। इस समय आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि होगी तथा समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होगी। अतः मन से आप पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

मार्च 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया अशुभ रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य

अच्छ नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस समय आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति तथा उद्विग्नता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय आपको पूर्ण सहयोग रखना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा आप दण्डित भी किए जा सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे एवं धन का व्यय भी अनावश्यक रूप में होता रहेगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप शिथिल हो सकते हैं। साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आप को बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबंधियों से आपके संबंधों में भी इस समय तनाव का वातावरण रहेगा तथा समाज से भी आप उपेक्षा प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्तजनित रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा दुर्घटना आदि से भी शरीर में रक्त विकार की संभावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस समय अग्नि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

अप्रैल 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रुओं की ओर से भी चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। इस मास में आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के बाद भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होंगे। शारीरिक अस्वस्थता भी इस समय बनी रहेगी तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव में वृद्धि होगी। अपने बंधु एवं मित्र वर्ग से आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव चलता रहेगा मित्र वर्ग भी इस समय शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिसके कारण मन अशान्त तथा असंतुष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके सामाजिक जनों से भी वादविवाद या संघर्ष होने की संभावना बनी रहेगी जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः स्त्री से सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा बुद्धिबल से आपके कार्य सफल भी हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी। इस प्रकार आपका यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा।

मई 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगे। इस समय शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे एवं घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेगी। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट

प्राप्त कर सकते हैं। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप शारीरिक तथा मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। इस समय आप दूर या समीप की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं। आपके सांसारिक कार्य इस मास में अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्यय अधिक होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आपको समय समय पर शुभफल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं महिला सहयोगियों से भी लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। इस मास में धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे तथा समाज में आपको पूर्ण यश प्राप्त होगा।

जून 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ तथा भाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा। सन्तति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं श्रद्धा पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा। इस मास में आपकी लाभ दायक यात्रा का योग भी बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सम्मान तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा समाज में आप एक सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा तथा सुख साधनों को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आपकी रुचि रहेगी तथा समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा व्याप्त रहेगी।

जुलाई 2024 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्ता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज में आपको उचित सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग अर्जित होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में

वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे मानसिक रूप से शान्ति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप सरकार या अधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों आदि की भी आपको इस समय प्राप्ति हो सकती है। अतः यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

अगस्त 2024 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस मास में आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन भी पूर्ण प्रसन्न रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रुचिशील रहेंगे। मित्रों एवं संबंधियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में आपको मनोच्छिन्न द्रव्य पदार्थों की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में यश तथा सम्मान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अतः इस मास को आप सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

सितम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रूप से व्यतीत होगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुष्ट मनुष्यों की संगति से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय आप आर्थिक संकट से भी उलझे रहेंगे। अतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अत्यन्त परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भी आप यथोचित पूजन तथा सत्कार नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप हानि प्राप्त करेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से मधुर संबंध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से लाभ अर्जित करेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। जिसके फलस्वरूप कोई धार्मिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा।

अक्टूबर 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी अतः इस समय आपके शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं आप से प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय सम्मान एवं सहयोग अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करेंगे। अतः आपकी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी इससे समाज तथा मित्रवर्ग में प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी तथा पूर्व विलंबित हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफल रहेंगे एवं सर्वत्र आनन्द एवं प्रसन्नता का वातावरण विद्यमान रहेगा।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है। अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी क्षति हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

नवम्बर 2024 के लिए फलादेश

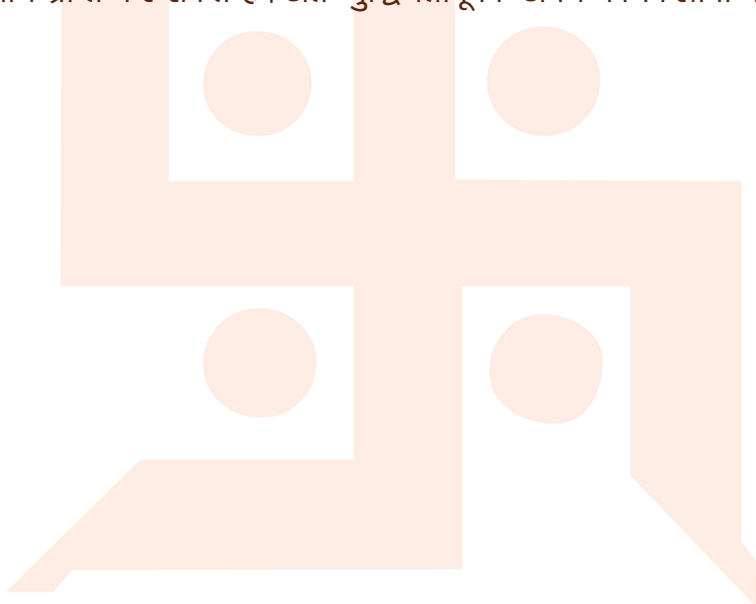
इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपको अपने पारिवारिक जनों तथा बन्धु वर्ग के मध्य यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित होगी तथा परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। फलतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाएंगे। आपकी मिष्टान्न भक्षण में भी इस मास पूर्ण रुचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा उसमें बल की वृद्धि होती रहेगी। शत्रुपक्ष को पराजित तथा भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे तथा सभी जनों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। फलतः आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार अदि कार्यों में भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिये अत्यंत ही शुभफलदायक रहेगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुखी रहेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या वस्तुओं की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करने में आप सफल रहेंगे।

दिसम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया शुभ रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही समाज में अन्य लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।



वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि सप्तम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुनवम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि दशम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि एकादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि दशम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी। अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरुएवं शनि ग्रह अनुकूल स्थान में होना चौमुखी विकास के संकेत हैं। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्षारम्भ में आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर भी खर्च करेंगे।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों एवं रिश्तेदारों के यहां मांगलिक कार्यों में आपके धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मई के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संतान

पंचम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य व परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा। अप्रैल के बाद आपके बच्चे उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरुकी पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद सप्तम स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उस समय स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। स्वस्थ शरीर के लिए अनुशासित दिनचर्या व उचित खान-पान ग्रहण करें साथ ही व्यायाम करना भी लाभदायक होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी मनोनुकूल उपलब्धि प्राप्त करेंगे।

मई के बाद राहु ग्रह का गोचर छठे स्थान में होगा उस समय प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी एवं नौकरी भी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में गुरुग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए उन्नतिकारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

14 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है या पूरे परिवार साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द उठाएं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरुके कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरुके द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



- नित्य स्नानादि के निवृत्त होकर सूर्य को अर्घ्य दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ का करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगी परन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

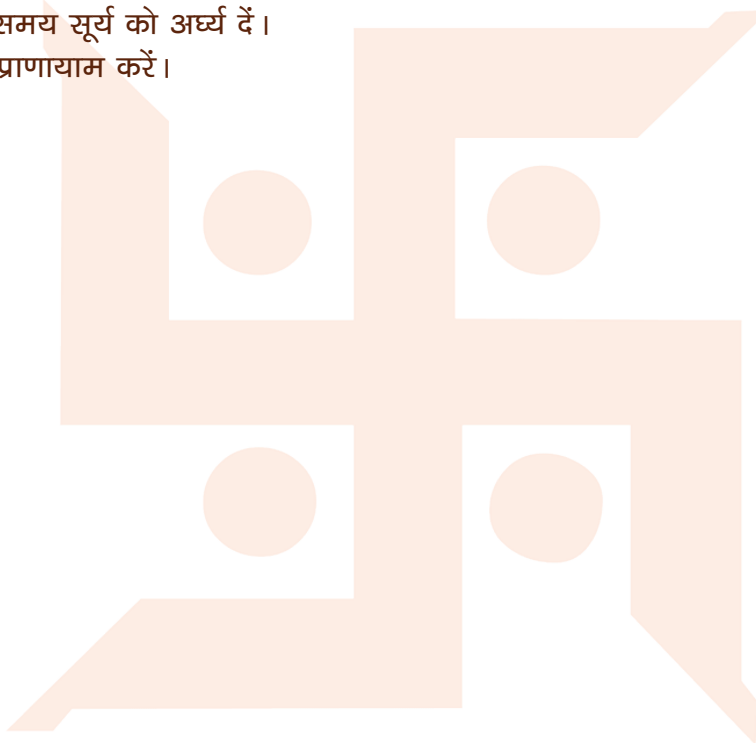


मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्न करेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वैदिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रुकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते हैं।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

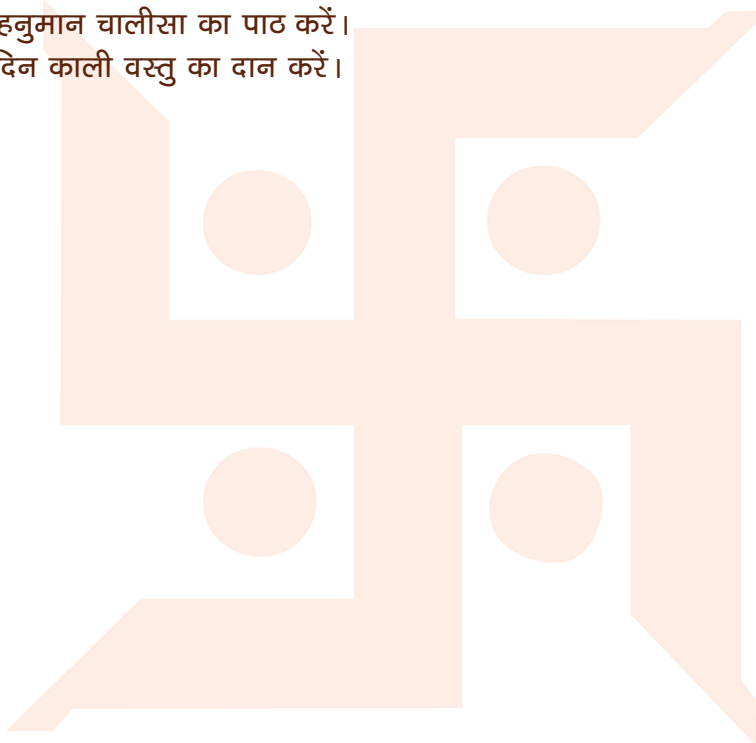


24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पत्ति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

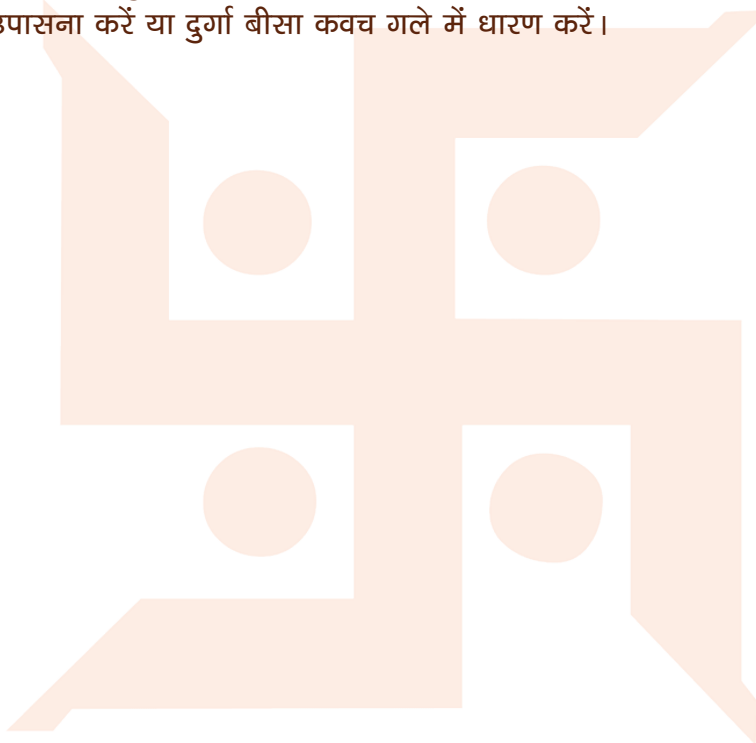
द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दूर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान हैं उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं



FUTUREPOINT
Astro Solutions



के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी।

बेरोजगार युवकों को अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपको रोजगार सम्बंधित सुखद समाचार मिलने शुरू हो जाएंगे और आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्य की तरफ पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। हालाँकि जिस तरह के चपल और बुद्धिजीवी व्यक्ति आप है, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। 18 फरवरी के बाद आप भूमि, भवन एवं वाहनादि पर भी अच्छा निवेश करेंगे। इस समय के अंतराल में आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए। एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से परिजनों के स्वास्थ्य के ऊपर भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष कम अनुकूल है। द्वितीय स्थान के मंगल पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य

बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके पिता के लिए समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपकी माता के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपका सामाजिक स्तर बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के शुरु में संतान के लिए समय अच्छा है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

9 अगस्त के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं। तो यह समय श्रेष्ठ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदुरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे। क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना एवं व्यायाम आदि।

यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है। इसलिए आपके लिए खास सलाह है कि आप एकाग्रता से अपने भीतर एक सशक्त भाव उत्पन्न करें और अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 18 फरवरी के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थार पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को भी चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं नवम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गशीर्ष होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 5 मार्च से कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

12 अगस्त से व्यावसायिक स्तर आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक उन्नति में रुकावटें डाल सकते हैं। आय की राह में रोड़ा खड़ा कर सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं। 5 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

12 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप के सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान

होगा क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

द्वितीयस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किंचित परेशानी आ सकती है परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 23 अक्टूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। 5 मार्च के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे परन्तु 5 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फूर्तिवान बने रहेंगे।

12 अगस्त से आप प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। 23 अक्टूबर से आप अपनी दिनचर्या बहुत सशक्त रखेंगे और व्यायाम भी करेंगे जिससे अपने आपको आरोग्य व तंदरुस्त महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

शनि के गोचर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 5 मार्च के

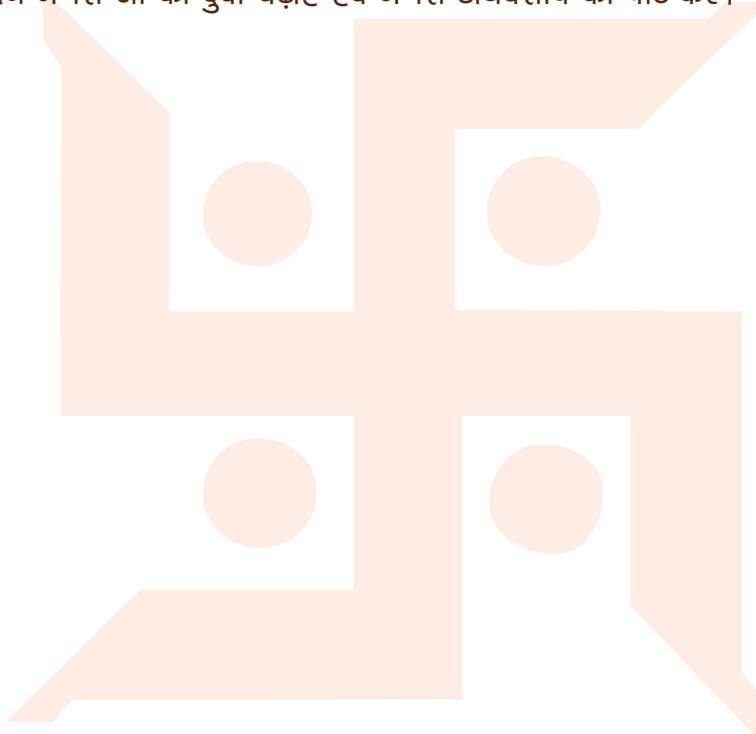
बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

23 अक्टूबर के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- तांबे के लोटे से प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष के प्रारम्भ के तीन माह श्रेष्ठ रहेंगे। आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। 18 मार्च के बाद दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। परन्तु व्यापारिक व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो आपका साझेदार धोखा दे सकता है। उसके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। आप अपने अनुभवों से खुद का विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इसमें आपको सफलता भी मिलेगी। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकती है।

8 अक्टूबर से मंगल ग्रह का गोचर आपके आय के स्रोत में बढोत्तरी करेगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। जिससे पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। 18 मार्च के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

8 अक्टूबर के बाद आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यह समय काफी शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। लोग आपका सम्मान करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है। जिससे कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप उनका तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न होती रहेगी। अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुदृढ़ रखें।

सारे ग्रह प्रतिकूल होने से आप अत्यधिक उद्वेग व मानसिक चिंता से ग्रस्त रहेंगे। शत्रुओं से सावधानी भी हितकारी रहेगी। मुख रोग, नेत्र विकार आपका शारीरिक कष्ट बढ़ा सकते हैं। अपने क्रोध, हठ, जिद व अहं भाव का त्याग करें। कार्य को स्वास्थ्य से अधिक अहमियत न दें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को और उत्तम बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 18 मार्च से समय आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं एकादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय बहुत उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

जुलाई के बाद समय और भी ज्यादा अनुकूल हो रहा है। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छा लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें और अपने कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित रहें।

जुलाई के बाद एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे एवं तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख-सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। मार्च के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई-बहनों के लिए बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। फिर भी अपने बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिसके फलस्वरूप आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चाहिए। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। मार्च के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको जुलाई के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

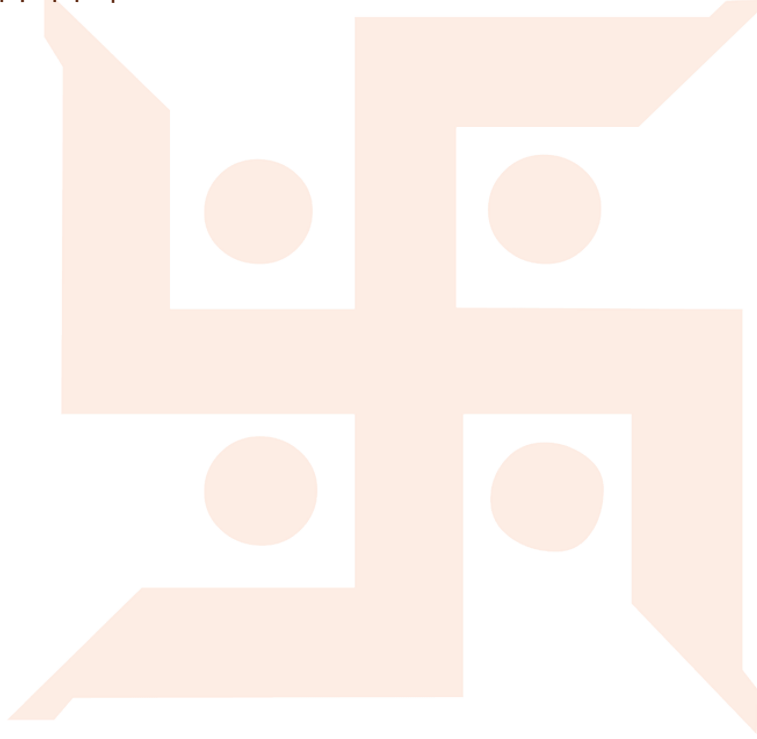
यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 28 मार्च से आप अपने जीवनसाथी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्रा भी आपको लाभ देकर जाएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 28 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, ध्यान करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका लगाव और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-
ॐ गं गणपतये नमः ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि एकादश भाव में और सिंह राशि का राहु द्वादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए श्रेष्ठ है। कानून से जुड़े लोगों अच्छा लाभ मिलेगा। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

अप्रैल के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में किसी से मतभेद हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको घबराना नहीं चाहिए और बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए, क्योंकि अन्त में सफलता आपको ही मिलने वाली है। अतः आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति को देखें तो वर्ष के प्रारम्भ में ही आय के स्रोत सृजित होंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। ऐसे में आपको अनावश्यक खर्च रोकना चाहिए। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्थिति में कुछ उतार-चढ़ाव होंगे। जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेंगे। भाईयों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे, लेकिन माता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। चिंता न करें इससे आपकी माता की भावनाएं आहत नहीं होंगी। रिश्तेदारों और चाहने वालों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य के प्रति आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा। आप रोग मुक्त रहने वाले हैं। खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से परेशान हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

द्वादशस्थ राहु के कारण आपके अंदर रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। आप अपने आप को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में ही प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा। आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

6 अप्रैल के बाद समय कुछ ख़ास अच्छा नहीं रहेगा। कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाया जा सकता है, जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। द्वादश स्थान के राहु अचानक आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होती



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रहेंगी। 6 अप्रैल के बाद जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तसे दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि अष्टम स्थान का गुरु एवं द्वादश स्थान का राहु चोट चपेट का प्रबल योग बना रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास रहेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी मनाएंगे। 6 अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ॐ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें और सूर्य नमस्कार करें आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में एकादशस्थ शनि के प्रभाव से व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी, परन्तु गुरु एवं राहु ग्रह का गोचन प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं। जो कि आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें।

गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें, वरना सकारात्मक परिणामों की जगह आपको नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं और आप कानून की जद में आ सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएँ। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अगस्त के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी। कार्यस्थल पर मान-संमान व अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करे नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। अप्रैल के बाद आपके बंद आय के मार्ग खुलेंगे। बहुत दिनों से फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 9 सितम्बर के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आपका धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

15 अप्रैल के बाद तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई-बहनो का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आप बहुत ज्यादा बीमार हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में खान-पान के साथ दिनचर्या को भी अनुशासित बनाएं और समय समय पर डॉक्टर की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

15 अप्रैल के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 15 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो

सकती हैं।

इन यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं होता। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपकी रुचि नहीं रहेगी। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्द्वता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में आपका मन एकाग्र नहीं हो पाएगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन की लड्डू दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का नित्य पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सफलता मिलेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। एकादश स्थान का राहु अचानक सफलता का मार्ग खोल सकता है, जिससे व्यापार में उन्नति मिल सकती है। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा, जो आपके लिए अनुकूल रहेगा।

सितम्बर के बाद आपका समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है और कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह साल सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। 26 अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं होने के कारण बीमारी इत्यादि में भी धन व्यय हो सकता है। सितम्बर के बाद अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः उस समय लेन देन के मामले में सावधान रहें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यावसायिक व्यस्तताओं के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि घर में कुछ विषम स्थितियां भी उत्पन्न कर सकती है। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। परन्तु 26

अप्रैल के बाद से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही बढ़िया है।

आपको परिवार में बुजुर्ग सदस्यों का सहयोग मिलेगा। परिवार के प्रति आपका भी आकर्षण बढ़ेगा। माता-पिता जी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सितम्बर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यह सब आपके अच्छे व्यक्तित्व के कारण होगा।

संतान

संतान के दृष्टि कोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

अप्रैल के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। परन्तु 16 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय गर्भाधान व संतानोत्पत्ति के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसे स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है।

अप्रैल के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्यता से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 19 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। छोटी-मोटी यात्राओं के

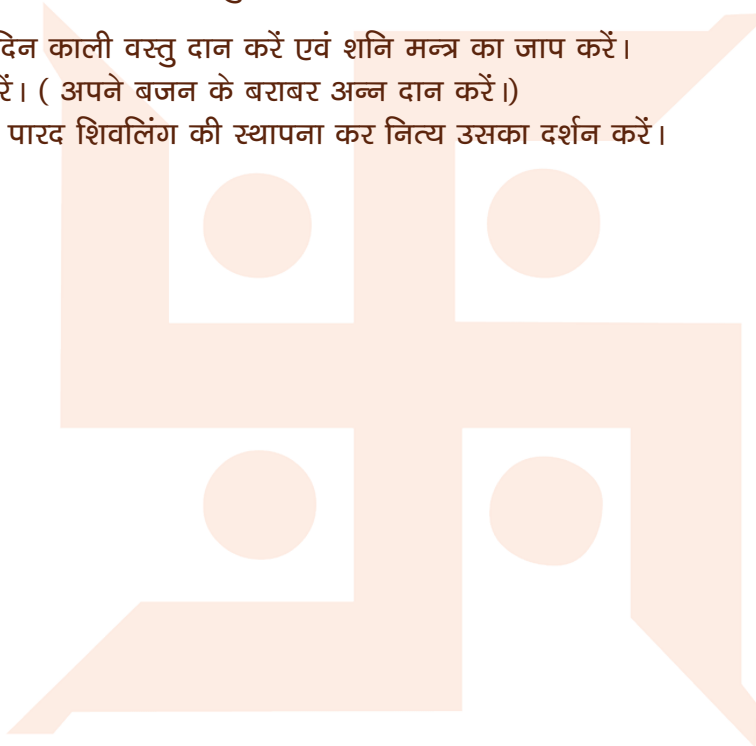
साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुर्घटना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगा। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे। सितम्बर के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- तुला दान करें। (अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।)
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर नित्य उसका दर्शन करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं एकादश में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से साल का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईंधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। 11 मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। यदि उस समय किसी के साथ मिलकर व्यापार करें तो कुछ सफलता मिल सकती है। फिर भी व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अक्टूबर के बाद क्रय-विक्रय व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। 11 मई के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे।

अक्टूबर के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए आप छोटी छोटी बातों पर ध्यान दें। दशम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपके माता-पिता जी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। परन्तु 11 मई से

समय शुभ हो रहा है। उस समय आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी।

एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से मान संमान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। साथ ही किसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था से भी जुड़ेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे। अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

संतान

राहु एवं गुरु का चण्डाल योग संतान के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेंगे। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। 11 मई के बाद यह योग समाप्त हो रहा है। गुरु ग्रह के शुभ होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति होगी।

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं।

11 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ समझेंगे। खान पान पर ज्यादा ध्यान दें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

11 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल कॉलेज में दाखिला मिल

जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। अक्टूबर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय संबंधित यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। मई के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यावसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी बढ़ेंगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में भी फंसा सकते हैं। परन्तु 2 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप सभी शत्रुओं को पीछे छोड़ कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 13 जुलाई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण उन्नति रुक सकती है अथवा प्रतिकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। ऐसे प्रतिकूल समय में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा। व्यापार में उन्नति व आशा से अधिक लाभ की संभावना बढ़ेगी। आर्थिक लाभ होगा एवं कार्यों में वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदार व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं। नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें। नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। 4 नवम्बर से समय आपके पक्ष में आ रहा है। उस समय आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे और शेयर बाजार लॉटरी इत्यादि क्षेत्रों से धन लाभ हो

सकता है।

घर-परिवार, समाज

दाम्पत्य जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं है। जीवनसाथी के रखे व्यवहार का सामना करना पड़ सकता है। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। 5 अप्रैल के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। द्वितीय स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं होता। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं।

सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। 13 जुलाई के बाद भाईयों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु आपके मातुल पक्ष के लोगों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपकी धर्म पत्नी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। 4 नवम्बर से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा पारिवारिक अनुकूलता प्राप्त होगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी खराब हो सकती है, जिससे उन्नति में व्यवधान आ सकती है। 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा योग बना रहा है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपने योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 2 जून से समय प्रभावित हो रहा है। परन्तु चिंता न करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा। उसके बाद आपके बच्चे निर्विघ्नता पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। 3 मार्च से 2 जून तक का समय अच्छा रहेगा। आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु उसके बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 4 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा हो जाएगा तथा आप निरोगी काया के स्वामी होंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 3 मार्च से पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 3 मार्च से 2 जून तक का समय बहुत ही शुभ है क्योंकि सफलता के सारे मार्ग आपके पक्ष में हैं। उसके बाद समय प्रभावित हो रहा है।

साल के उत्तरार्द्ध में उन्नति के मार्ग प्रभावित हो रहे हैं। आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के गुरु वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 3 मार्च के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा।

5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जिससे आप मानसिक अशान्त रहेंगे। नवमस्थ राहु के कारण ज्यादातर यात्राएं आपकी अचानक ही होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना इत्यादि कर्मों को ही आप अपना धर्म समझेंगे। 4 नवम्बर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु, केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं प्रथम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके प्रतिद्वंदी व्यवसाय में बाधा डालने की काशिश करेंगे, जिससे आपको मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। 6 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपको दूसरों के लिये भी काम करना पड़ सकता है। किसी भी व्यासायिक यात्रा को करने से पहले भली भांति जांच लें कि वह यात्रा आपके लिए लाभकारी है या नहीं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध खनिज, खाद्य विभाग व रासायनिक विभागों में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए शुभ है। नौकरी या व्यवसाय में अच्छा सुधार होगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढ़ेंगे। लेकिन कुछ कामों में आप अनुभवी लोगों की सलाह को भी नजरअंदाज कर सकते हैं और गलत निर्णय लेकर चिंताग्रस्त हो सकते हैं। सरकारी व्यक्ति की सहायता से भी आपके काम बनेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं है। आपके अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। 6 अप्रैल के बाद घर परिवार में रोग व्याधियों की अधिकता होने से धन का अपव्यय अधिक होगा। पैसे का लेन देन करते समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। इस समय के अंतराल में अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें।

किसी नए काम को शुरू करने के लिए बड़ा निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। लेकिन उत्तरार्द्ध में अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की सम्भावना बन रही है। यदि आप जुआ, लॉटरी आदि के माध्यम से कमाई करते हैं तो इनमें बड़ा निवेश करने से बचें। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे। वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों में यह वर्ष मिले जुले परिणाम देने वाला रहेगा। वर्ष के प्रथम पक्ष में परिवार का वातावरण भी उत्तम व मेल-जोल वाला रहेगा। परिवार के लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। परिवार के सभी लोग आपका सम्मान और आदर करेंगे। 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित होगा। नवम स्थान का राहु अचानक आपके पिताजी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिसकी वजह से आप चिंतित रह सकते हैं। परिवार के कुछ सदस्यों का वर्तव आपके प्रति रूखा या असहयोगात्मक रह सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल रहेगा। परिवार में सुख और शान्ति का माहौल बनेगा। आप पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। आपके अन्दर अहंकार युक्त भावनाएं पनप सकती हैं जिससे घर-परिवार में आपकी जनप्रियता घट सकती है। बेहतर होगा आप अपनी अन्तर्दृष्टि से स्वयं को परखें। जरूरत से ज्यादा तर्क-वितर्क करने से बचें अन्यथा परिवारीजनों को आपकी निष्ठा और आपके पारिवारिक स्नेह पर संदेह होने लगेगा।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। संतान की उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

6 अप्रैल से 28 जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा, परन्तु उसके बाद समय फिर से उत्तम हो जाएगा तथा पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षान्त में आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे, जिससे आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से गुजर रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हांलाकि 28 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना शुरू हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध साकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय शुभ है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं है। जून के बाद आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। इंजीनियरिंग व हार्डवेयर की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को अधिक सफलता नहीं मिलेगी।

यात्रा-तबादला

6 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

28 जून के बाद आपकी लम्बी यात्रा होगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आप का अटुट विश्वास होगा। 6 अप्रैल के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निर्माण, गोशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान देंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार की सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व धार्मिक यात्रा भी अधिक होंगी।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं नित्य उसका दर्शन करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके लगेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे तथा चाह कर भी अपने शत्रुओं का मुकाबला नहीं कर पाएंगे। व्यापार में कोई बड़ा निर्णय लेने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही ऐसा करें, क्योंकि यह साल आपके के लिए अच्छा नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें अधिक आत्मविश्वास आपको आपदग्रस्त कर सकता है।

6 मई से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपकी मान-मर्यादा में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों को इच्छित लाभ होगा। नौकरी करने वालों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। वर्षान्त अधिक प्रतिकूल रहने वाला है, अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

धन संपत्ति

द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम के स्रोत बढ़ेंगे, परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु एवं लग्नस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि के योग बन रहे हैं। आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वसीयत प्राप्ति से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप किसी धार्मिक कार्य में धन खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे। 26 सितम्बर के बाद किसी प्रकार का निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके छोटे भाई

बहनों के लिए अच्छी नहीं है। 6 मई के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपसी मतभेद व तनाव हो सकता है।

26 सितम्बर के बाद पारिवारिक क्लेश होने की संभावना बन रही है। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में वैचारिक मतभेद उत्पन्न कर सकती है। इस समय के अंतराल में आपको बड़े विवेक से काम लेना होगा तथा अपनी धैर्यशक्ति बनाए रखनी होगी। समाजिक स्तर में कुछ कमी आ सकती है। अतः सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। संतान आज्ञापालक भी होगी।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति हेतु यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें एवं अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

6 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है। जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से खराब सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। द्रुतियों में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनीयर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष में छोटी-मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 6 मई के बाद आप बड़ी यात्राओं का आनन्द



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लेंगे, जिसमें व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पायेंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 6 मई के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक व पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। विरोधी तथा शत्रुओं द्वारा आपको कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना होगा। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। फिर भी व्यावसायिक मामलों में आपको बहुत सावधान रहना होगा।

यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो वर्ष का उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है। वर्षान्त में कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें।

धन संपत्ति

शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक मामलों में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए विज्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को वांछित लाभ मिल सकता है। अकस्मात् व गुप्त धन मिलने की संभावना बन रही है। बैंकिंग संस्थानों से कर्ज लेना चाहते हैं तो शीघ्र ही आपको लोन मिल जाएगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के स्वास्थ्य पर आपका अधिक व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक मामलों के लिए अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालांकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से

आपके छोटे भाई-बहनो के साथ संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। फिर आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि आपके बच्चे को आलसी व बीमार बना सकती है, जिसके चलते उनको वांछित सफलता नहीं मिलेगी। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग बने हुए हैं। उनका भाग्योदय होगा तथा व्यावसायिक उन्नति भी होगी तथा वे अपने प्रतिद्वंद्वियों से बेहतर कर सकने में सफल होंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकती है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए और तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु ग्रह के गोचर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अतः स्वयं को संतुलित एवं नियमित रखें। तुला दान व महामृत्यंजय जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले जातकों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। मैनेजमेंट, प्रशासनिक शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। धार्मिक यात्रा का सुन्दर योग बन रहा है।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि राहु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल है। चोरी व दुर्घटना का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित रहेगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होंगे। किसी तीर्थस्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

शिवजी की उपासना करें एवं मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें। मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं। आपके लिए अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता-पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।

- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध
(08/05/2021 - 08/05/2038)**

बुध की महादशा 08/05/2021 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 08/05/2038 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध तृतीय भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान कुछ मामूली वाधाओं को छोड़ जीविका में प्रगति तथा धन की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा के दौरान आपकी छोटी यात्राएं होंगी तथा पराक्रम और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें शक्ति तथा स्फूर्ति प्रचुर मात्रा में होगी। फिर भी आप सतर्क होंगे और जरूरत से अधिक परिश्रम नहीं करेंगे। गले की समस्या, ब्रोंकाइटिस, स्नायविक समस्या तथा गठिया आदि बीमारियों को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु, आवश्यक उपाय कर इन व्याधियों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपको आर्थिक सफलता मिलेगी और आपको किसी लाभदायक सरकारी पद की प्राप्ति हो सकती है। आपको अपने शत्रुओं तथा विरोधियों से लाभ मिलेगा और मुकदमों में विजय मिलेगी। आपको संचार-माध्यमों के क्षेत्र में लाभ मिलेगा। जीविका-व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, सेल्समैन, शिक्षण, ट्रेवल एजेंट, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैमानिकी, चिकित्सक तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर, इस्तनिर्भित आदि वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा आप अपनी बौद्धिक उपलब्धि, समस्या-समाधान की क्षमता तथा कठिन परिश्रम के कारण पुरस्कृत किए जाएंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, आय और लाभ में वृद्धि होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। कार्यों में सफलता और विरोधियों पर विजय के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति भी हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आप अपना पुराना वाहन बेच सकते हैं। बुध की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद के मामले लाभदायक होंगे जबकि बुध की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली नुकसान हो सकता है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उस दशा में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा के माध्यम से आपको कुछ आर्थिक लाभ होगा। गणित, विज्ञान, विधि, ललितकला, संचार-माध्यम, पत्रकारिता, लेखन तथा साहित्य में आपकी रुचि हो सकती है। आप हस्तकला तथा वाकपटुता में कुशल होंगे। आप तेज, कूटनीतिक, बहुमुखी एवं विज्ञान में रुचि रखने वाले हैं।

परिवार :

आपके बच्चों के लिये समय समृद्धि-दायक रहेगा और उनके लाभ तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी। आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की यात्रा होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा तथा उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपकी माता की कुछ यात्रा, व्यय तथा स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या होगी जबकि आपके पिता को व्यापार में तथा साझेदार से लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को यश और ख्याति मिलेगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि बड़ों को सट्टे में सफलता तथा लाभ मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। आप सामाजिक व लोकप्रिय होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आपको संचार-माध्यम से लाभ और भाइयों से सुख मिलेगा जबकि केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यापार में लाभ और विवाद होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण सट्टे से लाभ तथा बच्चों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आराम मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप यात्रा होगी और समृद्धि की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी तथा लाभ मिलेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- बुध - बुध
(08/05/2021 - 04/10/2023)**

आपके लिए बुध की महादशा 08/05/2021 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 08/05/2021 को प्रारंभ होकर 04/10/2023 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपकी लघुयात्राएं हो सकती हैं। अध्ययन, अध्यापन और लेखन आदि से लाभ हो सकता है। व्यापार में दक्ष रहेंगे। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण फैसले कर सकते हैं। मानसिक शक्ति उत्तम होगी। धन प्राप्त करेंगे। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। साहित्यिक कार्य के लिए उत्तम समय है।

आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे, कला में रुचि होगी। आपके पिता को व्यापार और सट्टेबाजी में लाभ होगा। माता की ध्यान और साधना में रुचि होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम स्वास्थ्य, धन, विवाह, यात्रा, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान के बहुत से मित्र होंगे, सम्मान मिलेगा और शिक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धनार्जन करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं को धनलाभ होगा। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गले की मामूली बीमारी हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः

**अंतर्दशा :- बुध - केतु
(04/10/2023 - 01/10/2024)**

आपके लिए बुध की महादशा 08/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/10/2023 को प्रारंभ होकर 01/10/2024 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप कृतसंकल्प रहेंगे। विरोधियों पर विजय होगी। स्पर्धी परास्त होंगे। कार्यालय इच्छानुकूल होगा। अदालत में विजय होगी। प्रतियोगिता परीक्षा में सफल होंगे। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। यात्राएं होंगी; शुभ कार्यों पर खर्च बढ़ सकते हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं; कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। माता के धन में वृद्धि होगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, अप्रत्याशित लाभ, अध्यात्म में रुचि और साझेदार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल होगी, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो जीवन सुख-सुविधाओं से पूर्ण रहेगा, हर प्रकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल होगी, सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो जीवन सुख-सुविधाओं से पूर्ण रहेगा, हर प्रकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में वातावरण हर्षमय रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम उत्तम होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उदर रोग और संक्रमण से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए तेल, उड़द की दाल और सतनजा दान में दें।

**अंतर्दशा :- बुध - शुक्र
(01/10/2024 - 01/08/2027)**

आपके लिए बुध की महादशा 08/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 01/10/2024 को प्रारंभ होकर 01/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप स्वयं के प्रयास से सफल होंगे। छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी। बहुत से मित्र होंगे। उत्साह और ऊर्जा से युक्त रहेंगे। लघु, सुखद यात्राएं हो सकती हैं। कला, वाक्शक्ति, और सामान बेचने में दक्ष होंगे। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। धन, संपदा से युक्त होंगे। परिवार से सुख मिलेगा। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। दान-धर्म में भाग ले सकते हैं। अध्ययन में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में धनार्जन अच्छा होगा। माता धन की बचत करेंगी; शत्रुओं पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए मनोरंजन, सुख, उच्चपद, धन, संतान से खुशी, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, अच्छे मित्र होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे, उच्चाधिकारियों से लाभ होगा, प्रसिद्धि मिलेगी। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्र और कान की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

अंतर्दशा :- बुध - सूर्य
(01/08/2027 - 07/06/2028)

आपके लिए बुध की महादशा 08/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 01/08/2027 को प्रारंभ होकर 07/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। रुके काम पूर्ण होंगे। पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप पैसा सोच विचारकर खर्च करेंगे। मित्रों और संबंधियों से संबंध उत्तम रहेंगे। विरासत में धन मिल सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से धन आ सकता है। अध्यात्म और पराविद्या में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, कुछ उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। आपके पिता को शत्रुओं और विरोधियों पर विजय मिलेगी। माता को आसानी से सफलता मिल जाएगी, उच्च पद प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा और धनार्जन उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों को घरेलू सुख रहेगा। अचल संपत्ति क्रय करेंगे, कार्यों में सफलता मिलेगी।

आपकी संतान की प्रोन्नति होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे, यात्रा होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता धन और उच्चपद प्राप्त करेंगे। व्यापारियों के काम में परिवर्तन होंगे, अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं, अचानक धन आ सकता है। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गेहूं का दान करें।

अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र
(07/06/2028 - 06/11/2029)

आपकी बुध की महादशा 08/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 07/06/2028 को प्रारंभ होकर 06/11/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। कुछ शत्रु हो सकते हैं, मगर वे निर्बल रहेंगे। मातहतों और कर्मचारियों से अच्छे संबंध रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। वांछित वस्तुएं प्राप्त होंगी। पराविद्या और धर्म में रुचि हो सकती है। यात्राओं से खुशी मिलेगी। शुभकार्यों पर धन खर्च होगा। विदेश यात्रा हो सकती है।

आपके जीवनसाथी के जीवन में परिवर्तन हो सकता है, यात्रा और खर्च बढ़ सकते हैं। आपके पिता सफल होंगे, प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। माता को कला और सहित्य में रुचि होगी।

आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन, अचानक लाभ, अध्यात्म में रुचि, जायदाद से लाभ, जायदाद की खरीद, उत्तम शिक्षा और धन का संकेत है। आपकी संतान को लाभ होगा, शिक्षा उत्तम होगी और कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और सुखी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सुखद वातावरण होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्च बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र और नेत्रों में मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- बुध - मंगल
(06/11/2029 - 04/11/2030)

आपके लिए बुध की महादशा 08/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 06/11/2029 को प्रारंभ होकर 04/11/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको हर प्रकार से लाभ होगा। धनागम होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विभिन्न वस्तुएं क्रय करेंगे। आप धनी, सफल और प्रभावशाली बनेंगे। बहुत से मित्र होंगे जिनसे सहायता मिलेगी। संतान सुखकारी रहेगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। तकनीकी शिक्षा में सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। किराये से अच्छी आय होगी। मुकदमे में जीत होगी। कटु वचनों के प्रयोग से बचें।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली होंगे; आय अच्छी होगी। आपके पिता धनी बनेंगे, सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

माता को अचानक धनलाभ हो सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, आकांक्षाओं की पूर्ति, ज्ञान-विज्ञान से संबंधित कार्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व, उत्तम स्वास्थ्य, शिक्षा, धन और आत्म-विश्वास का संकेत है।

अपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे सेवारत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में खुशी का वातावरण रहेगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में

वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंतर्दशा :- बुध - राहु
(04/11/2030 - 23/05/2033)

आपके लिए बुध की महादशा 08/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/11/2030 को प्रारंभ होकर 23/05/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपके अप्रत्याशित खर्चे हो सकते हैं। धन की बचत में मुश्किलें आएंगी। कार्यों में निराशा हाथ लग सकती है। नये लोगों से जान-पहचान बढ़ेगी; उनसे फायदा हो सकता है। विदेश में निवास हो सकता है। व्यापार में संतोषजनक प्रगति होगी। शत्रुओं और विरोधियों पर विजय होगी। मुकदमे में जीत होगी। नौकरी में वातावरण अच्छा रहेगा। मामा पक्ष के लोगों से जान-पहचान बढ़ेगी; उनसे फायदा हो सकता है। किराये से अच्छी आमदनी होगी।

आपके जीवनसाथी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, उस से आय अच्छी होगी। माता के पास सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, समाज की भलाई के कार्य, धन का संचय, सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान के वातावरण या शिक्षा में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें अचानक लाभ या पदोन्नति संभव है। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो संयुक्त उपक्रम से लाभ हो सकता है; आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, आय बढ़ेगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। खास तौर पर नेत्रों के रोग, गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए रात्रि में दूध से हवन करें।

अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(23/05/2033 - 29/08/2035)

आपके लिए बुध की महादशा 08/05/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 23/05/2033 को प्रारंभ होकर 29/08/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपकी यात्राएं हो सकती हैं। खर्चे बढ़ सकते हैं। अध्ययन और आध्यात्मिक प्रगति के लिए समय अनुकूल रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। सहकर्मी और मातहत सहयोग करेंगे। साझेदार से लाभ होगा। अचानक धनलाभ हो



महादशा :- केतु
(08/05/2038 - 08/05/2045)

केतु की महादशा को 08/05/2038 आरम्भ और 08/05/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको यश और ख्याति की प्राप्ति और प्रगति हुई होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहा होगा। केतु की वर्तमान दशा में शत्रुओं पर विजय, सौभाग्य, यश तथा अधिकार मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में किसी बीमारी से लड़ने की क्षमता होगी। आपको छूत की बीमारी, बुखार, अल्सर, चर्मरोग, घाव और मूत्राशय में पीड़ा हो सकती है। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। आपको अपने विरोधियों से लाभ मिलेगा। ननिहाल पक्ष से लाभ मिल सकता है। सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। केस-मुकदमे में निर्णय आपके पक्ष में होंगे। जीविका-व्यवसाय के लिए भाषा, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक, शरीर-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष, परा-चिकित्सा सेवा अथवा समाज सेवा के क्षेत्र का अध्ययन कर सकते हैं। चिकित्सा उपकरण, द्रव इंजीनियरी, लोहा-इस्पात, दवा, रेडियो के पुर्जे, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक के पुर्जे, रत्न, खनिज आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में माहौल अनुकूल रहेगा। आपको सहयोगियों-सहकर्मियों से सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों से सदभाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को कार्य में सफलता, अच्छी आय और लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपकी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। आप गाड़ी बदल सकते हैं या नयी गाड़ी ले सकते हैं। आप जमीन-जायदाद की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। आवास में परिवर्तन हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, भाषा, भौतिक शास्त्र, वायु-सैनिक के कार्य, दवा, विज्ञान, तत्त्वमीमांसा, प्रसारण, गुप्त विद्या तथा अन्य विषय आदि में भी आपकी रुचि हो सकती है। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे और सभी परीक्षाओं प्रतियोगिताओं में सफल होंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा समृद्धि

मिलेगी। आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, अनावश्यक खर्च होगा तथा व्यर्थ की यात्रा होगी। आपकी माता के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा, छोटी यात्रा होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि पिता को यश, ख्याति और अधिकार प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी जबकि बड़ों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ तथा हानि होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मंगल की अन्तर्दशा में सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लोकप्रियता मिलेगी और विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा तथा स्वास्थ्य-समस्या होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा तथा विवाह होगा। शनि के कारण बच्चों से सुख और विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि बुध की अन्तर्दशा में यश और ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- केतु - केतु
(08/05/2038 - 04/10/2038)

आपके लिए केतु महादशा 08/05/2038 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/05/2038 को प्रारंभ होकर 04/10/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्यप्राप्ति के लिए दृढ़प्रतिज्ञा होंगे। स्पर्धियों से कष्ट हो सकता है। रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी, कर्ज से मुक्ति मिलेगी, नौकरी में मालिकों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं, खर्च बढ़ेंगे। आपके पिता सफलता प्राप्त करेंगे। माता में स्पर्धियों पर विजय पाने की संकल्पशक्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा और माता से मधुर संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, उन्हें सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, मित्रों और भाइयों से मधुर संबंध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित होगा, प्रसन्न रहेंगे, सहकर्मियों से उत्तम संबंध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पर्याप्त आत्मविश्वास होगा, आय बढ़ेगी, सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के काम में कुछ परिवर्तन हो सकता है, यात्राएं होंगी, खर्च बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, कंबल और तेल दान में दें।

अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(04/10/2038 - 04/12/2039)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपके उत्साह और लोकप्रियता में वृद्धि होगी। मार्केटिंग गतिविधियों में सफल होंगे, धनार्जन उत्तम होगा। यात्राओं का आनंद ले सकते हैं। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विलास के साधन क्रय कर सकते हैं। आपके मित्र मददगार साबित होंगे। वरिष्ठजन आप से प्रसन्न रहेंगे। विज्ञापन क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। लोकप्रिय और प्रसिद्ध होंगे। धर्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध होंगे, धनी बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ, विवाह, सुख और मित्रों से लाभ का संकेत है। आपकी संतान को स्पर्धा में सफलता मिलेगी, सुख के साधन उपलब्ध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गरीबों और महिलाओं की सेवा में सक्रिय संस्था में दान दें।

**अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(04/12/2039 - 10/04/2040)**

आपके लिए केतु महादशा 08/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 04/12/2039 को प्रारंभ होकर 10/04/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। शिक्षा में सफल होंगे। रुके काम पूरे होंगे। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। प्रसन्नचित्त रहेंगे। विरासत या बीमे द्वारा धन आ सकता है। कार्यक्षेत्र में उतार-चढ़ाव आएंगे; फिर भी आप सफल रहेंगे। धर्म और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। कुछ समय के लिए स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को अचानक धनलाभ हो सकता है, वे कार्यक्षेत्र में उतार-चढ़ाव के बावजूद सफल रहेंगे। आपके पिता धनी बनेंगे, उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं, स्पर्धा में विजयी रहेंगे। माता सफल रहेंगी।

आपके भाई-बहनों के खर्चे बढ़ सकते हैं, शिक्षा उत्तम होगी, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल रहेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों के कार्य में अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है।

स्वास्थ्य पर, विशेषकर नेत्रों पर ध्यान देना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए गेहूं, गुड़ और तांबे का दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(10/04/2040 - 09/11/2040)**

आपके लिए केतु महादशा 08/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 10/04/2040 से प्रारंभ होकर 09/11/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आपके अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से उत्तम संबंध रहेंगे। स्पर्धा में कमी आएगी। आप नेकी के बहुत से कार्य करेंगे। खर्च बढ़ सकते हैं। यात्राएं हो सकती हैं, वातावरण में कुछ परिवर्तन हो सकता है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। सफलता में बाधा आ सकती है।

आपके जीवनसाथी के कार्यक्षेत्र में रुकावटें आ सकती हैं। आपके पिता सफल और लोकप्रिय होंगे; उनके खर्च बढ़ सकते हैं। माता की लघु यात्राएं होंगी, वे सफल होंगी, उनकी कला में रुचि हो सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए सुखी जीवन, माता से उत्तम संबंध, परिवर्तन, अप्रत्याशित लाभ और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, वे परीक्षा में सफल रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; पारिवारिक जीवन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों की यात्राएं हो सकती हैं, खर्च बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। अरिष्ट से बचाव के लिए दूध और चावल का दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(09/11/2040 - 07/04/2041)

आपके लिए केतु की महादशा 08/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 09/11/2040 को प्रारंभ होकर 07/04/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका धनागम उत्तम होगा; कार्यों में सफलता मिलेगी। साहस और मनोबल उत्तम होंगे। आपका प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। बहुत से हितकारी मित्र होंगे। भाई-बहनों और चाचा से उत्तम संबंध होंगे। निवेश से लाभ होगा। संतान से सुख मिलेगा या संतान का जन्म हो सकता है। रोग निरोधक क्षमता उत्तम होगी; शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता साहसी और उत्साही होंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है।

आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, धन, सक्रिय जीवन और प्रसिद्धि का संकेत है। आपकी संतान को साझेदारी से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, व्यापार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मसूर की दाल, चंदन और लाल वस्त्र दान में दें।

अंतर्दशा :- केतु - राहु
(07/04/2041 - 26/04/2042)

आपके लिए केतु महादशा 08/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 07/04/2041 को प्रारंभ होकर 26/04/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। नयी मित्रता लाभकारी हो सकती है। व्यापार में उन्नति होगी। कार्यों में प्रारंभ में बाधाएं आ सकती हैं। शत्रुओं पर विजय होगी, चिंताएं खत्म होंगी, कर्ज से मुक्ति मिलेगी। नौकरी में या मातहतों के माध्यम से लाभ होगा। खेलकूद आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा; सब का सहयोग प्राप्त होगा। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं; घरेलू सुख रहेगा। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, धनलाभ, धनसंचय, सुखी पारिवारिक जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को अचानक लाभ हो सकता है या परिवर्तन आ सकता है। उन्हें सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला या अन्य परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे, उत्साह उत्तम रहेगा। व्यापारी स्पर्धियों पर सफलता प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - गुरु
(26/04/2042 - 02/04/2043)

आपके लिए केतु महादशा 08/05/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 26/04/2042 को प्रारंभ होकर 02/04/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म में रुचि होगी। ज्ञानार्जन के लिए उत्तम समय है। वसीयत, उपहार, विरासत आदि से अचानक धनागम हो सकता है। घरेलू सुख उत्तम रहेगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं या उससे लाभ होगा। माता से उत्तम संबंध रहेंगे। मित्रों से

आनंद मिलेगा।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, संबंधियों से लाभ होगा, कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं या उससे लाभ होगा, उनके अच्छे मित्र होंगे, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। माता भाग्यशाली रहेंगी, धनी बनेंगी, तीर्थयात्राएं होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, कार्यों में सफलता का संकेत है। बड़े भाई-बहन धनी बनेंगे, सुख-साधन संपन्न होंगे, शिक्षा में सफल होंगे।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी, अचानक लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को संचार माध्यम से लाभ होगा। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

नेत्र और कानों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं वृहस्पतये नमः



FUTUREPOINT
Astro Solutions



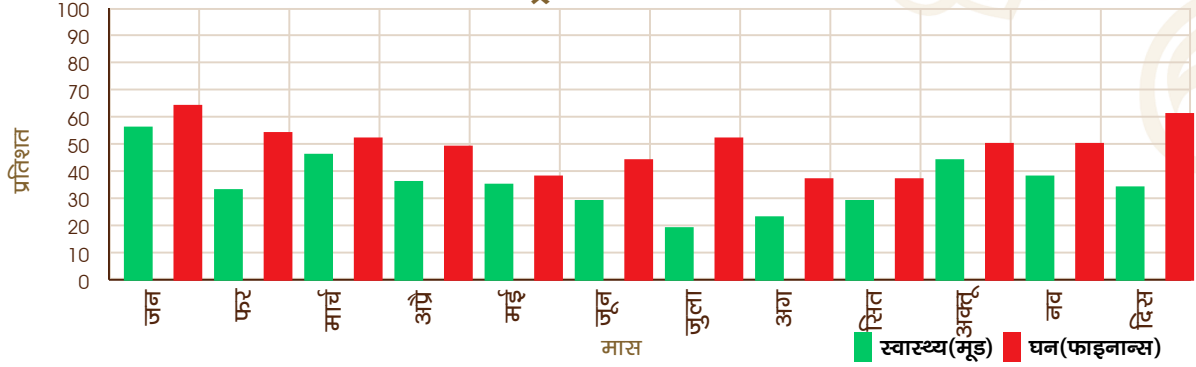
एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रुचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते हैं।

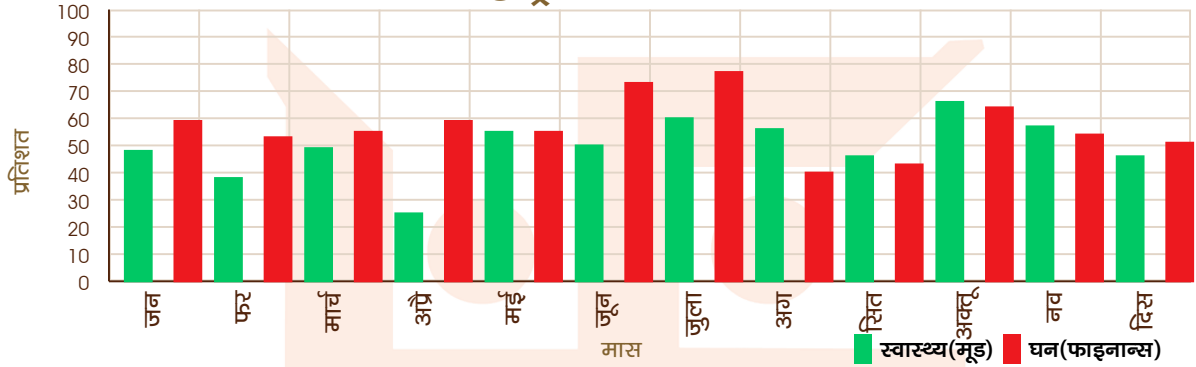
अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापकम के अनुसार हैं। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

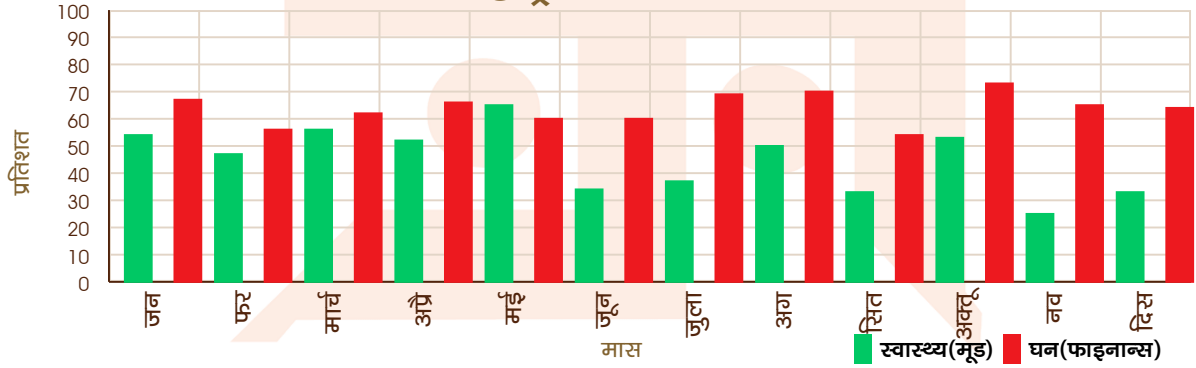
एस्ट्रोग्राफ - 2023



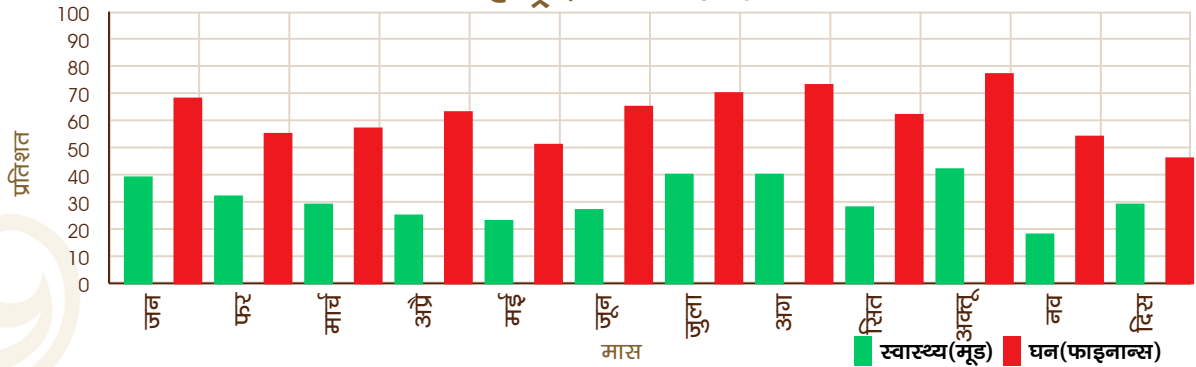
एस्ट्रोग्राफ - 2024



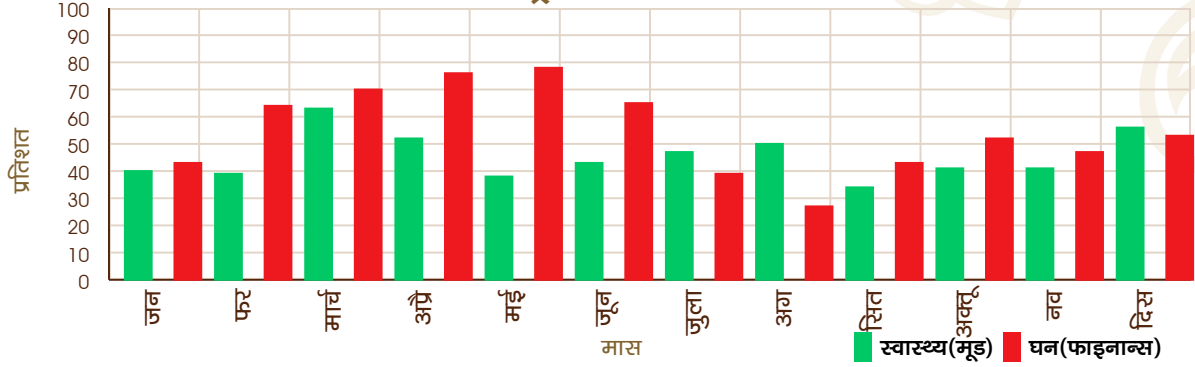
एस्ट्रोग्राफ - 2025



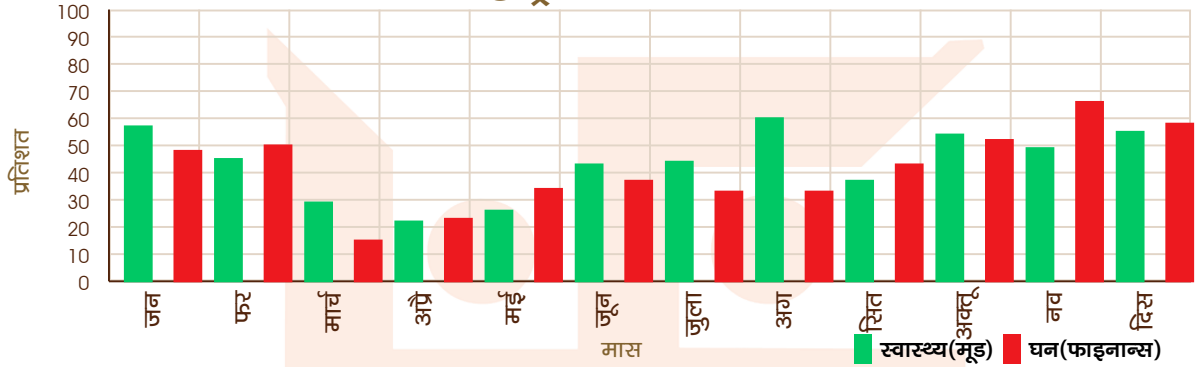
एस्ट्रोग्राफ - 2026



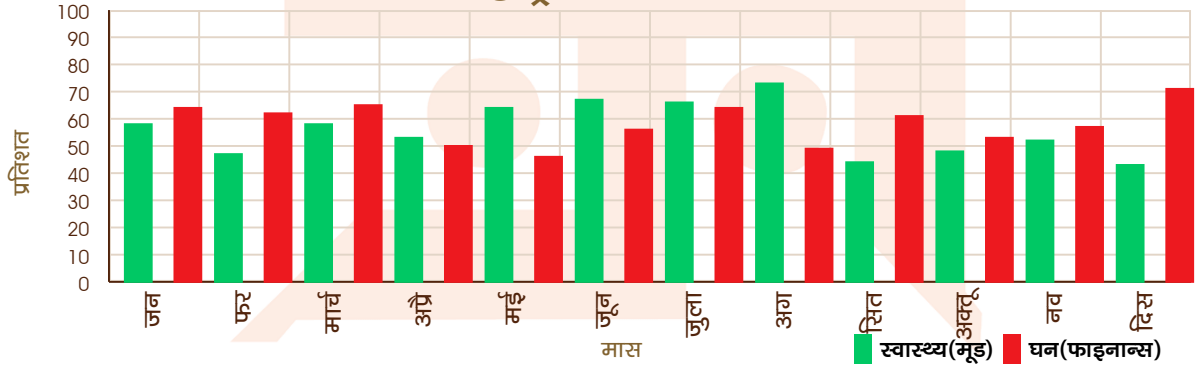
एस्ट्रोग्राफ - 2027



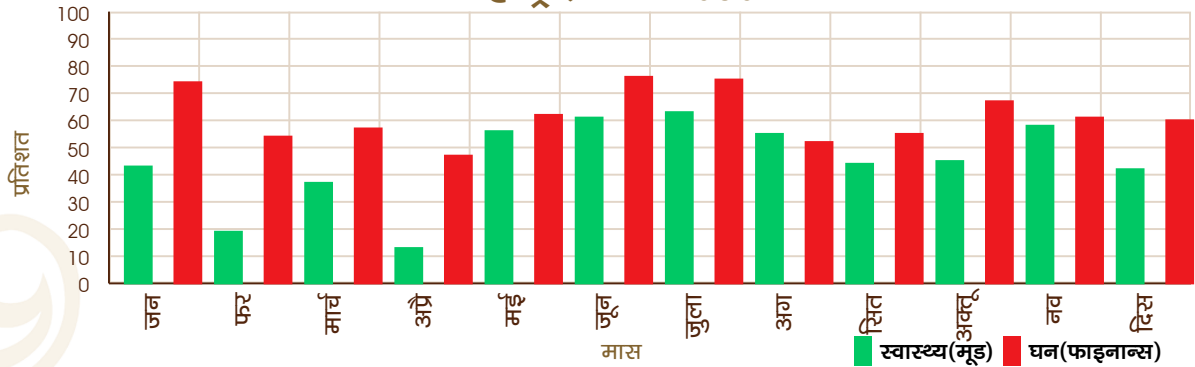
एस्ट्रोग्राफ - 2028



एस्ट्रोग्राफ - 2029



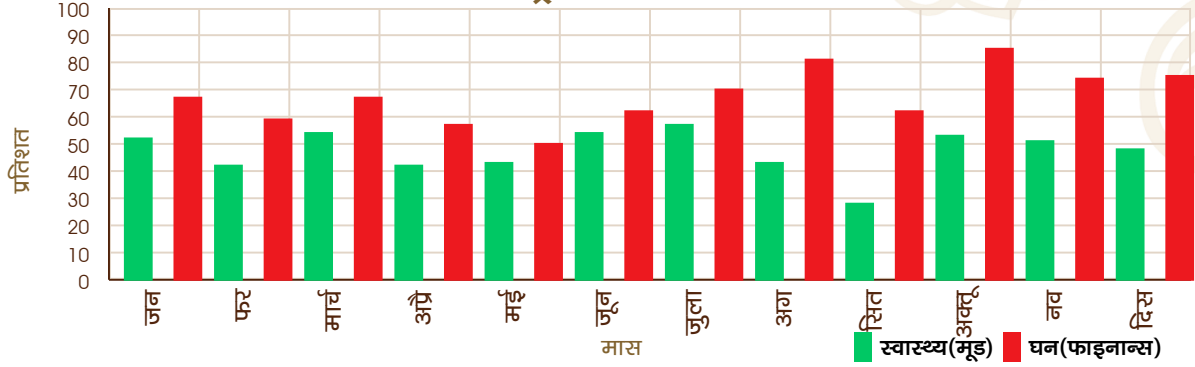
एस्ट्रोग्राफ - 2030



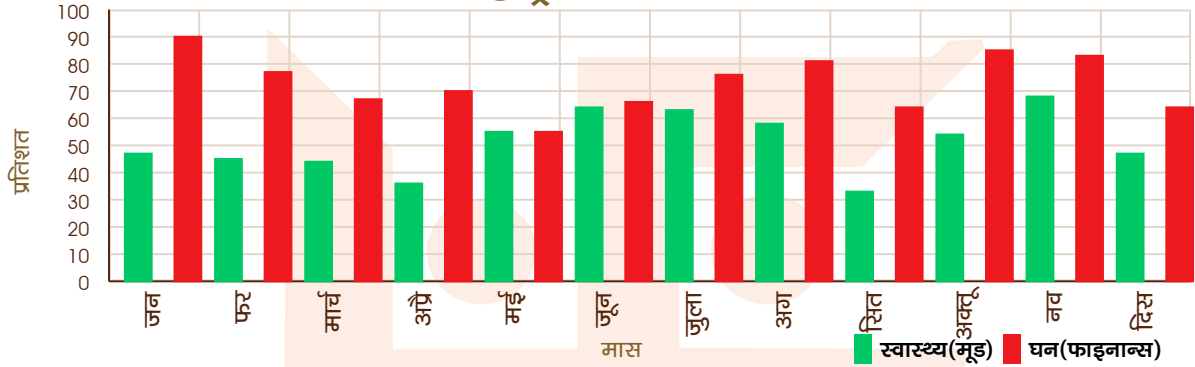
FUTUREPOINT
Astro Solutions



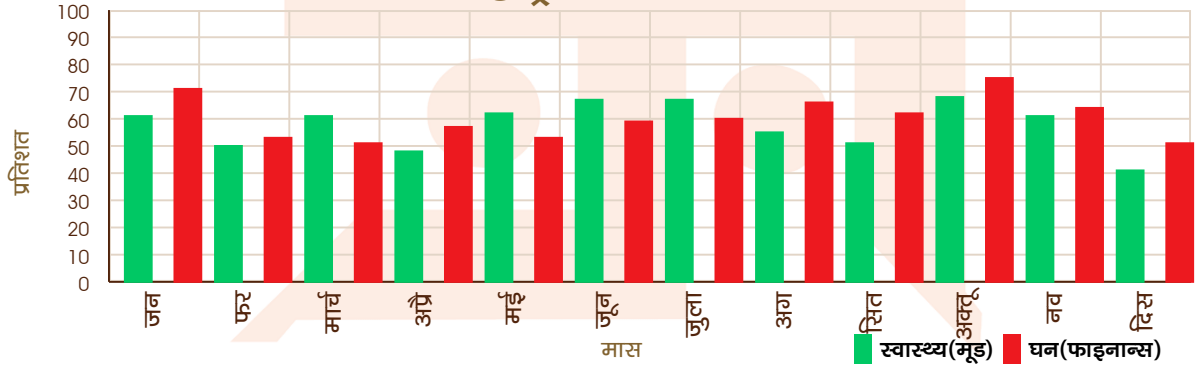
एस्ट्रोग्राफ - 2031



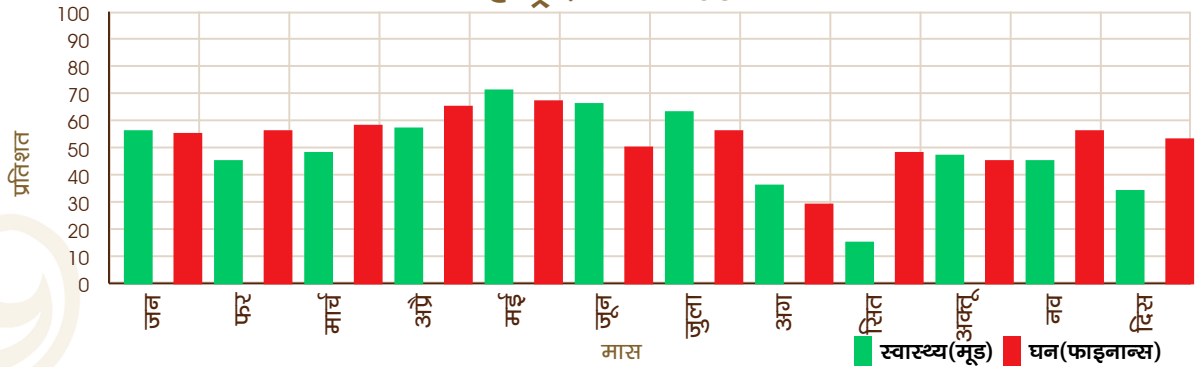
एस्ट्रोग्राफ - 2032



एस्ट्रोग्राफ - 2033



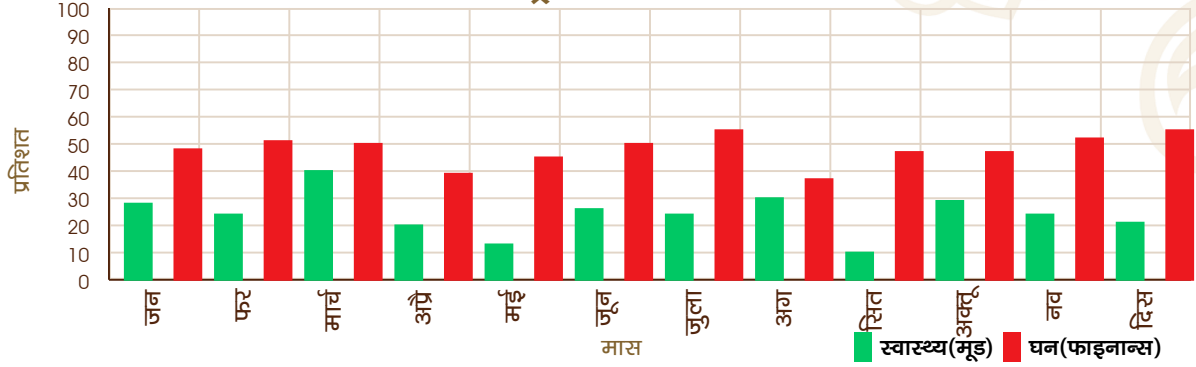
एस्ट्रोग्राफ - 2034



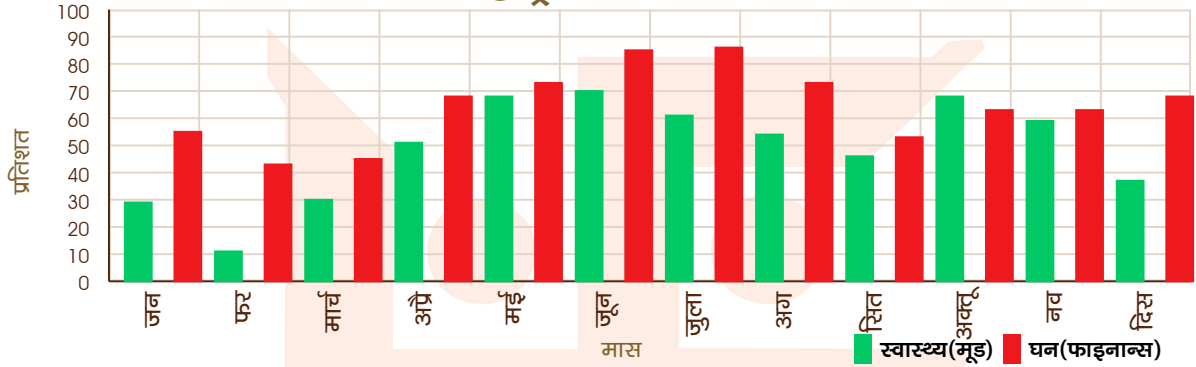
FUTUREPOINT
Astro Solutions



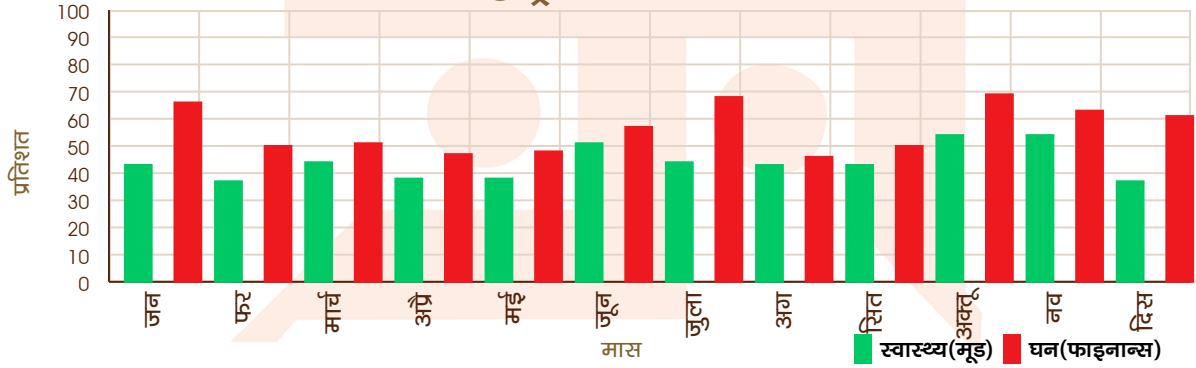
एस्ट्रोग्राफ - 2035



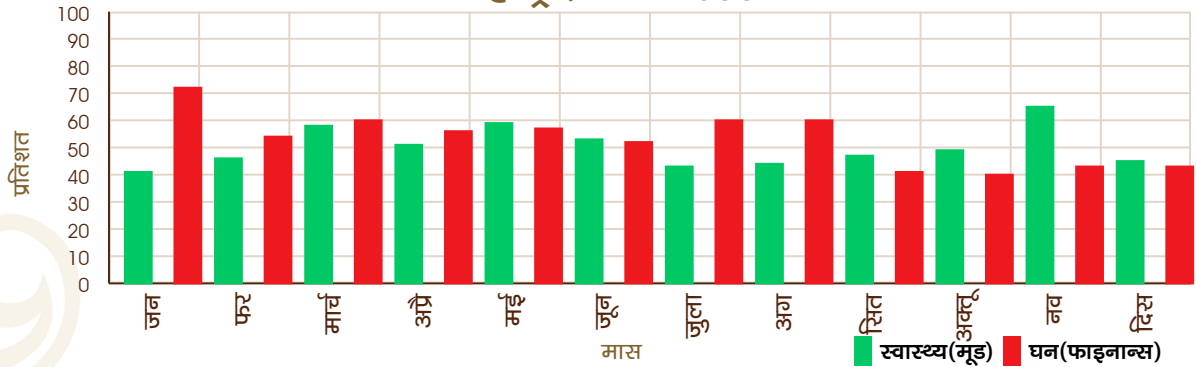
एस्ट्रोग्राफ - 2036



एस्ट्रोग्राफ - 2037



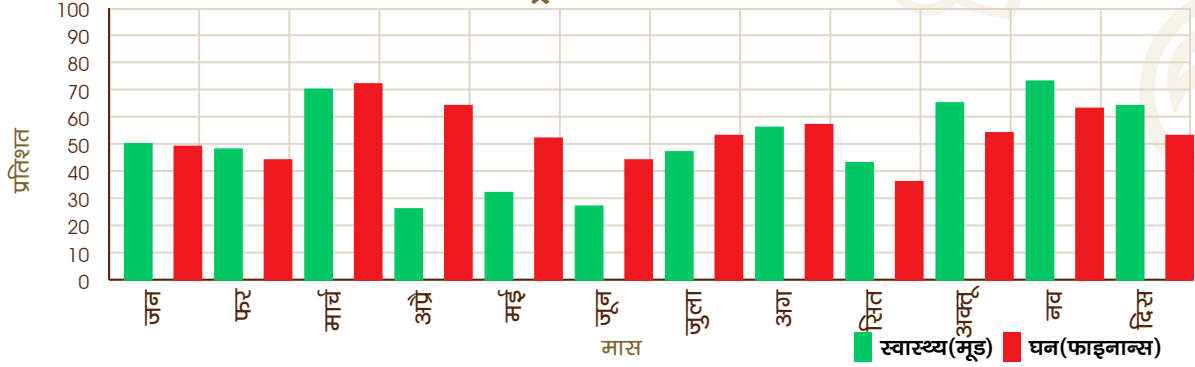
एस्ट्रोग्राफ - 2038



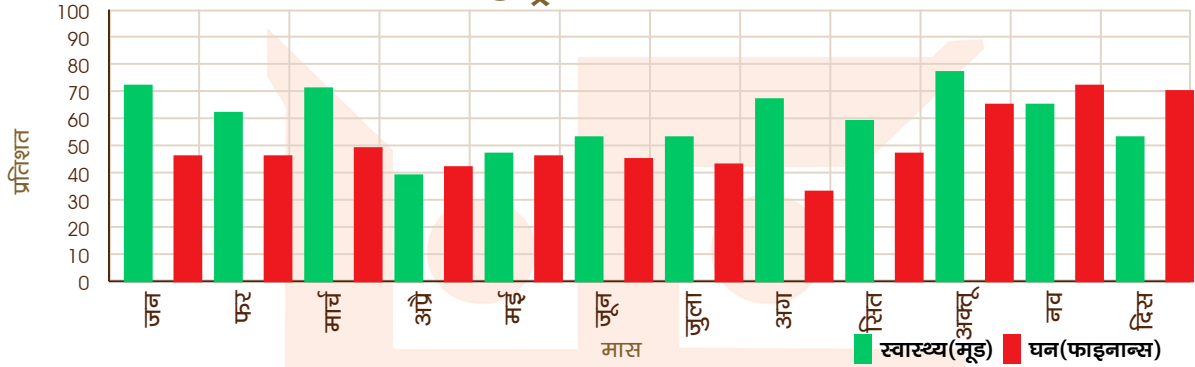
FUTUREPOINT
Astro Solutions



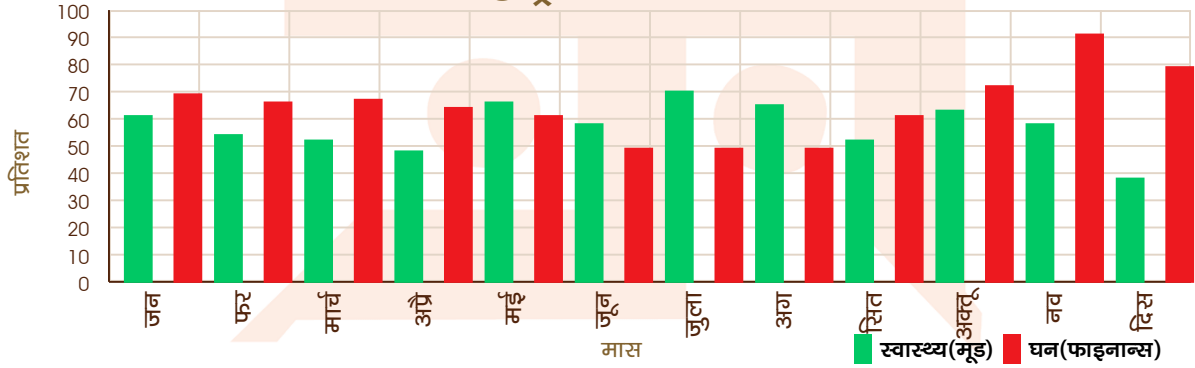
एस्ट्रोग्राफ - 2039



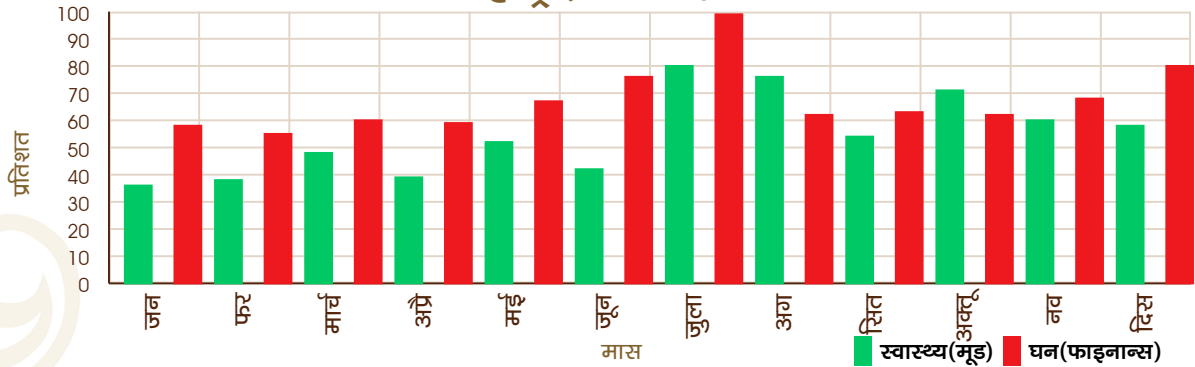
एस्ट्रोग्राफ - 2040



एस्ट्रोग्राफ - 2041



एस्ट्रोग्राफ - 2042



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योग

अमलयोग

चन्द्राव्योमन्यमलाहवयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि ।

क्षमेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान् ।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 19-20 ॥

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध, शुक्र, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है । फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे ।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः ।

सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो

निहताहितो भवति पापभीरुकः ।

प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-

द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/ श्लोक 57, 63 ॥

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है ।

योग कारक ग्रह : सूर्य, मंगल, राहु, केतु, शनि

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है । फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे ।

नीचभंग राजयोग

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः ।

स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 7/श्लोक 26 ॥

यदि जन्मकाल के समय कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो तथा इस नीच राशि का



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वामी चंद्रमा से केंद्र में हो और जो ग्रह नीच है और उसका उच्चनाथ भी चंद्रमा से केंद्र में हो तो नीचता भंग हो जाती है। अर्थात् उत्तम राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि

योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही राजसुख का भोग करेंगे। सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होकर राजा के समान प्रतिष्ठित होंगे।

दीर्घायु भ्रातृ योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.-285 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।

तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-59 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीये बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहाधिपे नाशगते यदि स्यात्पापेक्षिते तद्गृहनाशमत्र ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-63 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सुखभाव का स्वामी द्वादश भाव में पाप ग्रह से युत हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु,गुरु

योग की संभावना : 48 में 1



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको भवन सुख से वंचित होना पड़े ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।

लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्ये प्राकारसंयुतम् ॥

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 12/श्लो.-148 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध, शुक्र, गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।

कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि, राहु, गुरु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।

वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र



FUTUREPOINT
Astro Solutions



बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 13/श्लो.-9 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु, शनि

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरायुते।

मूर्धार्तिमुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ॥

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यग्रहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।

अक्लेशजातं मरणं नराणाम्॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पुनर्जन्म योग

महीजोमही सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है ।

योग कारक ग्रह : मंगल, सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-31 ॥

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभागभवेत् ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-40 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

न च केन्द्रगताः पापा न त्रिकोणे न नैधने ।
तस्यायुरमरप्रख्यं निश्चयेन च कीर्त्यते ॥

॥ सारावली ॥ अ.10/श्लो.-97 ॥

यदि जन्मपत्रिका में केन्द्र त्रिकोण या अष्टम भाव में पाप ग्रह न हों तो जातक की देवतुल्य आयु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा ।
रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः ॥

॥ मानसागरी ॥ अ.4/अरि.-57 ॥

यदि जन्मकुंडली में चन्द्र के क्षेत्र में मंगल स्थित हो तो जातक रक्त-पित्त के विकार से हीन अङ्ग और नाना प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप रक्त-पित्त दोष से दुखी तथा विकलांग होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

”केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ॥”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ॥

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

”सपारिजातद्युचरः सुखानि ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

”नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

”सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

सिंहासनांश योग

”सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥



FUTUREPOINT
Astro Solutions



जिस जातक की पत्रिका में “सिंहासनांश” भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “सिंहासनांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

केमद्रुम योग

”चेत्त्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।

प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः॥”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो “केमद्रुम” योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “केमद्रुम” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वेशि योग

”धनखेटैर्वेशी दिनेशात्”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध, शुक्र, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वेशि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

